सर्वेक्षण परिवार

अंक : सप्तम्
वर्ष : २०२३

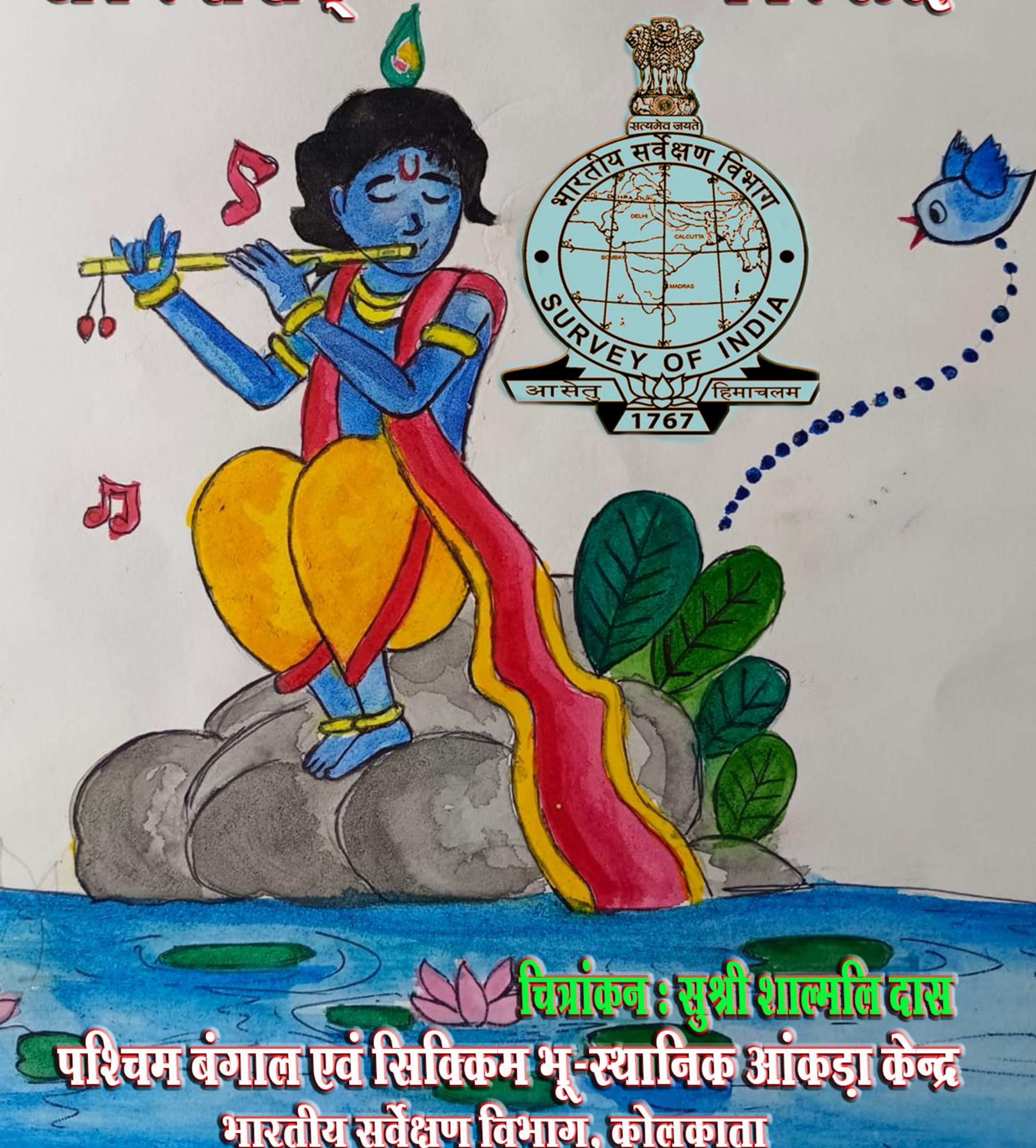

चित्रांकन : सुश्री शाल्मलि दास

पश्चिम बंगाल एवं सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

अंक - सप्तम

वर्ष - 2023

बंगभूमि से प्रारम्भ हुआ
256 बसंत के पार हुआ
भारत का पठारी प्रदेश या फिर हो हिमालय पहाड़
गंगा का मैदान या फिर विशाल मरूभूमि थार
तटीय प्रदेश हो, या तंग दर्रे
हमारे सर्वेक्षकों ने किया सबका सर्वे
विविधताओं से भरा हमारा देश
सर्वेक्षण कार्य आसां नहीं 'शुभेश'
फिर भी पग-पग का किया सर्वेक्षण
भारत भूमि का सुन्दर, सटीक मानचित्रण
राष्ट्र की सेवा में सतत् समर्पित हमारा 'सर्वेक्षण परिवार'
पत्रिका का सप्तम् अंक प्रस्तुत है आपको साभार।

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू - स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, कोलकाता

सर्वेक्षण परिवार

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बंधित लेखकों के स्वयं के हैं। भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

यह पत्रिका विभागीय वेबसाईट www.surveyofindia.gov.in पर उपलब्ध है ।

संरक्षक

श्री उदय शंकर प्रसाद

निदेशक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

प्रधान सम्पादक

श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी

अधीक्षण सर्वेक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

रूपरेखा व साज-सज्जा

श्री शुभेश कुमार

कार्यालय अधीक्षक, पश्चिम बंगाल व सिक्किम
भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता

सम्पादन सहयोग

श्री संतोष प्रसाद

अधिकारी सर्वेक्षक

सुश्री ज्योति कुमारी

प्रवर श्रेणी लिपिक

आवरण-पृष्ठ चित्रांकन

सुश्री शाल्मलि दास

सुपुत्री : श्री शांति दास, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

❖ संदेश

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार(श्री/श्रीमती)	पृष्ठ
1.	अपरंपार दयालु भगवन	शुभेश कुमार	8
2.	मोबाइल फोन	उदय शंकर प्रसाद	9
3.	भाषाएँ	अंश प्रसाद	10
4.	मेरे दादा-दादी और नाना-नानी	शुचि दास	11
5.	रे पथिक	स्मृति त्रिपाठी	12
6.	श्री अमरनाथ दर्शन	नारायण चन्द्र बर्मन	13
7.	सॉवरेन गोल्ड बॉण्ड	उदय शंकर प्रसाद	15
8.	मेरी आवाज	शुचि दास	16
9.	बेटे की चाह	स्वर्णिमा बाजपेयी	17
10.	यात्रा वृतांत	शुभेश कुमार	20
11.	पर तुम नहीं आए	स्मृति त्रिपाठी	22
12.	स्थानान्तरण की कहानी	जशधीर पॉल	23
13.	भारत के वीरों	सुरभि बिश्वास	24
14.	मन	स्मृति त्रिपाठी	25
15.	मेरे पापा	शुचि दास	26
16.	लिडार	सुभाष चन्द्र संतरा	27
17.	पता ही नहीं चला	शम्पा मुखर्जी	30
18.	जीवन में बहाव कितना आवश्यक है	स्मृति त्रिपाठी	31
19.	मेरा मणिपुर का पहला फील्ड	संतोष प्रसाद	32
20.	तनाव से घिरा महानगर का जीवन	गौतम आनन्द	34
21.	शिक्षक	अभय कुमार मिश्रा	34

सर्वेक्षण * परिवार

क्रम सं.	शीर्षक	रचनाकार(श्री/श्रीमती)	पृष्ठ
22.	इंसान की कीमत	बिश्वनाथ नाग	35
23.	श्री बदरी विशाल के सान्निध्य में कार्य	मेजर अनुराग द्विवेदी	36
24.	आयाम	स्मृति त्रिपाठी	38
25.	लिप्यंतरण और भारत की अखण्डता	किंशुक बरन राउत	39
26.	अद्भुत न्याय	काली प्रसाद मिश्रा	40
27.	कृत्रिम बुद्धिमता व्यवहार में सतर्कता	किंशुक बरन राउत	41
28.	आंखें	अभय कुमार मिश्रा	43
29.	पगला साधु का पाग्लामी	स्वपन कुमार सरकार	44
30.	भविष्य के बारे में सोच	काली प्रसाद मिश्रा	45
31.	लौट आओ	स्मृति त्रिपाठी	46
32.	घमण्डी का सर नीचा	नम्रता मिश्रा	47
33.	पहेलियां	बंकिम चन्द्र मिश्रा	48
34.	पुरी	अंकिता सामन्त	49
35.	चन्द्रयान 3	प्रलय कुमार दास	50
36.	अद्भुत चमत्कार	अरविन्द कुमार मिश्रा	56

चित्रांकन :

1.	सुश्री देबलीना ढाली	-	सुपुत्री	-	श्री सुधांशु कुमार ढाली
2.	सुश्री संजुती दास	-	सुपुत्री	-	श्री प्रलय कुमार दास
3.	सुश्री शुचि दास	-	सुपुत्री	-	श्री शुभेश कुमार
4.	सुश्री प्रीती सरकार	-	सुपुत्री	-	श्री स्वपन कुमार सरकार
5.	सुश्री अन्विता प्रसाद	-	सुपुत्री	-	श्री संतोष प्रसाद
6.	श्री रेबान्ता मुखर्जी	-	सुपुत्र	-	श्रीमती शम्पा मुखर्जी
7.	सुश्री श्यामली दास	-	सुपुत्री	-	श्री शांति दास
8.	सुश्री अस्मिता प्रसाद	-	सुपुत्री	-	श्री तापस मित्रा

****

'ग' क्षेत्र अर्थात अहिन्दी भाषी क्षेत्र में कार्यालय की अवस्थिति के कारण व्याकरण की अथवा भाषायी अशुद्धता हो सकती है। अतएव, आदरणीय पाठकवृंद से अनुरोध है कि इस त्रुटि की ओर ध्यान नहीं देंगे।

श्री सुनील कुमार, भा.व.से.
Shri Sunil Kumar, I.F.S.

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं. 37
देहरादून-248001(उत्तराखण्ड), भारत
Survey of India
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No.-37
Dehradun-248001(Uttarakhand)

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता द्वारा हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के सप्तम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिन्दी की विशेषता यह है कि यह पूरे भारतवर्ष को जोड़े रखने का विशेष कार्य करती है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के प्रत्येक कार्यालय में भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों के अधिकारी एवं कर्मचारी अपना योगदान देते हैं और उनके मध्य संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम राजभाषा हिन्दी है। मैं आशा करता हूं कि इसी प्रकार पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता के सभी अधिकारी व कर्मचारी हिन्दी भाषा के प्रति अपनी रूचि बनाए रखेंगे।

पत्रिका के प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों / कर्मचारियों व सम्पादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

26/11/23

(सुनील कुमार)
संयुक्त सचिव एवं
भारत के महासर्वेक्षक

Tel : 00-91-135-2744268/2747051-58 Extn. 5001 **E-mail: sgi.soi@gov.in**

श्री पी. वी. राजशेखर
अपर महासर्वेक्षक
Shri P. V. Rajasekhar
Addl. Surveyor General

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
पूर्वी क्षेत्र कार्यालय
15, वुड स्ट्रीट, कोलकाता-16 (प. बं.)

Office of the Addl. Surveyor General
Eastern Zone Office
15, Wood Street, Kolkata-16(WB)
ई-मेल/E-mail: zone.east.soi@gov.in

संदेश

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, कोलकाता द्वारा विभागीय हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के सप्तम् अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है इसलिए हिन्दी भाषा के प्रयोग में कठिनाईयां आना स्वाभाविक है। परंतु हिन्दी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन अवश्य ही हिन्दी को कार्यालय में लोकप्रिय बनाने का कार्य करेगी।
हम आशा करते हैं कि कोलकाता स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिन्दी भाषा के प्रति अपने समर्पण को बनाए रखेंगे।

मैं हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' के सप्तम् अंक के प्रकाशन के लिए इस कार्य से जुड़े हुए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को ढेरों बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

(पी. वी. राजशेखर)
अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र

श्री उदय शंकर प्रसाद
निदेशक
Shri Uday Shanker Prasad
Director

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
निदेशक का कार्यालय
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र
13, वुड स्ट्रीट, कोलकाता-16 (प. बं.)

Office of the Director
WB & Sikkim Geo-spatial Data Centre
13, Wood Street, Kolkata-16 (WB)
ई-मेल/E-mail: wbs.gdc.soi@gov.in

संदेश

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र की हिन्दी पत्रिका 'सर्वेक्षण परिवार' इस बार अपने सप्तम् अंक का प्रकाशन कर रहा है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष की बात है। यह मातृभाषा एवं राजभाषा के मध्य आपसी समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करता है। भारत का सर्वांगीण विकास विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं राजभाषा हिन्दी के मध्य आपसी समन्वय से ही सम्भव है। भारत में कुछ किलोमीटर की दूरी तय करने पर खान-पान और रीति-रिवाज के साथ भाषा में भी भिन्नता देखने को मिलती है। हमारा भारतवर्ष विविधताओं का देश है। इस विविध संस्कृति की अनेकता में एकता के भाव को राजभाषा हिन्दी, समृद्ध करती है।

हमें प्रयास करना चाहिए कि अपना प्रत्येक कार्य राजभाषा हिन्दी में ही करें। सरकार इसके लिए विभिन्न माध्यमों से प्रोत्साहित भी करती है। साथ ही हिन्दी में कार्य करने के लिए **हिन्दी शब्द सिन्धु** एवं **कंठस्थ-2** जैसे टूल भी उपलब्ध हैं जो हिन्दी में कार्य को अत्यंत सरल बना देते हैं। हमारी हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन एवं इसकी लोकप्रियता, कार्यालय में लोगों में रचनात्मकता बढ़ाने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति लगाव भी बढाती है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु इससे जुड़े सभी लेखकों/रचनाकारों और सभी सम्बंधित अधिकारियों / कर्मचारियों को मेरी हार्दिक बधाई एवम् शुभकामनाएं।

उ शं प्रसाद

(उदय शंकर प्रसाद)
निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

अपरंपार दयालु भगवन

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

हे अपरंपार दयालु भगवन, कर धय थाम लियो ।
भटक रहा था भव कूपों में, तूने खींच लियो ।।
हे अपरंपार ....

मैं तो जड़मति, अति अज्ञानी,
क्रोधी, लोभी, महा अभिमानी।
तूने ज्ञान की गंगा बहाई,
गुरू मूरत में छवि दिखलाई।
गुरू पद पंकज, अंतरतम की सारी विघ्न हरौ।।
हे अपरंपार ....

हे प्रभु कैसे होऊं उऋण मैं,
कोटि जन्म बस करहुं भजन मैं।
तव प्रताप की बात निराली,
सारी दुनिया हुई मतवाली।
जेहि रंगेहु प्रभु तेरे रंग में, नहिं दूजा रंग चढ़ौ।।
हे अपरंपार ....

निर्मल तन—मन कीजिए स्वामी
तव चरणों का बनूं अनुगामी।
कीजै नाथ हृदय मंह डेरा,
आवागमन का छुटि जाए फेरा।
मुझ पर कृपा करहुं प्रभु इतनी, नाम कबहुं नहिं मैं बिसरौं।।
हे अपरंपार ....

~~~~~शुभेश
~~~~~

मोबाइल फोन

श्री उदय शंकर प्रसाद,निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

आधुनिक युग में, मोबाइल फोन अति आवश्यक हो गया है जो हमारे दैनिक जीवन को आकार देता है। हालांकि, किसी भी तकनीकी प्रगति की तरह, मोबाइल फोन के अधिक उपयोग से जुड़े कई नुकसान हैं। ये उपकरण बहुत अधिक सुविधा और कनेक्टिविटी प्रदान करते हैं, लेकिन ये कई नकारात्मक परिणाम भी सामने लाते हैं जो हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित कर रहे हैं ।

मोबाइल फोन से नींद के पैटर्न में व्यवधान आना और यहाँ तक कि बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याएँ भी शामिल हैं। मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग के कारण से आँखों में तनाव, सिरदर्द और गर्दन में दर्द जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

मोबाइल फोन संचार क्षमता को बढ़ाते हैं, साथ ही मोबाइल फोन सामाजिक अलगाव में भी उतना ही योगदान करते हैं। लोग वास्तविक जीवन के रिश्तों की अनदेखी करते हुए, अपने उपकरणों में खो जा रहे हैं।

मोबाइल फोन में ढेर सारी व्यक्तिगत जानकारी संग्रहित होती है, जो उन्हें साइबर हमलों और गोपनीयता उल्लंघनों का शिकार बनाती है। फिशिंग हमले और डेटा उल्लंघन संवेदनशील जानकारी को ख़तरे में डाल सकते हैं, जिससे पहचान चोरी, वित्तीय हानि और व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग हो सकता है।

मोबाइल फोन से आने वाली निरंतर सूचनाएं और अलर्ट एकाग्रता में काफी बाधा डालती हैं। संदेशों, सोशल मीडिया और ऐप्स की लत से ध्यान भटकता है और महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में बाधा आती है।

गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन के उपयोग से दुर्घटनाओं और मौतों में वृद्धि हुई है। गाड़ी चलाते समय टेक्स्ट करने, कॉल करने या ऐप्स का उपयोग करने से ड्राइवर का ध्यान सड़क से हट जाता है, जिससे उनकी और दूसरों की जान खतरे में पड़ सकती है।

पुराने उपकरणों का अनुचित निपटान इलेक्ट्रॉनिक कचरे में योगदान देता है। इस कचरे में खतरनाक सामग्रियाँ होती हैं जो पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं और मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती हैं।

हालांकि मोबाइल फोन के निस्संदेह बहुत सारे लाभ हैं, लेकिन इनसे होने वाले नुकसानों को पहचानकर उनका समाधान करना आवश्यक है। स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं से लेकर सामाजिक अलगाव और गोपनीयता के जोखिम तक, ये कमियां मोबाइल फोन के जिम्मेदार और सचेत उपयोग को आवश्यक बनाती हैं। इन नुकसानों को समझकर, हम उचित विकल्प चुन सकते हैं जो हमें मोबाइल फोन को अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करने में मदद कर सकते हैं।

भाषाएँ

श्री अंश प्रसाद
सुपुत्र: श्री उदय शंकर प्रसाद,निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

जैसे संगीत अपने धुन, अपने मृदंग के बिना अधूरा है, वैसे ही हम मानव अपने ज़बान के बिना अधूरे हैं। और जैसे अलग अलग संगीत अलग अलग धुन का उपयोग करते हैं, वैसे ही हम मनुष्य अलग अलग भाषाओं तथा बोलियों का। विश्व में जहाँ भी जाएँ, वहां मनुष्य मिलेंगे और साथ ही साथ एक अनोखी भाषा!

कुछ भाषाएं प्राचीन काल से बोली जा रहीं हैं जैसे तमिल, संस्कृत, हिब्रू और फ़ारसी, तो कुछ का जन्म हाल ही में हुआ है।

कुछ वैसे के वैसे ही बोले जाते हैं, तो कुछ अन्य भाषाओं एवं बोलियों में विकसित हो गए हैं, जैसे: मगधी से बंगाली, ओडिया और असमिया (आसामी) या हिन्दुस्तानी से हिंदी और उर्दू।

भाषाएँ हर जगह काफी विविधता से मौजूद हैं। पश्चिम जाएँ तो यूरोप के फ्रेंच, डच, अंग्रेजी, स्पेनिश, स्वीडिश, आदि मिलेंगे। अफ्रीका जाए तो स्वहिली, ज़ुलू, होउसा। पूर्व की ओर बढे तो जापानी, चीनी, कोरियाई, लाओ। और भी ज़्यादा पूर्व जाए तो पोलीनीशिया के द्वीपों के अलग- अलग भाषाएँ और हमारे भारत में आये तो भाषाओं का मानो भण्डार हो!

हिमालय की शान गढ़वाली, कुमाओनी या नेपाली हो या कश्मीर-सी सुन्दर कश्मीरी। पंजाब-सी मस्त पंजाबी हो या बंगाल के मिठास से भरी बंगाली। हिन्द महासागर-सी महान तमिल, मलयालम या तेलुगु हो या महाराष्ट्र के वीरता से भरी मराठी। और इस देश के दिल में जाए तब हमें सुनाई पड़ती है हिंदी!

भाषाएँ मानवता की एक परछाई, एक साया हैं। ये हमारे साथ विकसित होती हैं, हमें हमारा इतिहास बताती है, हमारे समाज को एक सुन्हेरे धागे से जोड़ती है, हमें हमारा अस्तित्व देती है और घर से कोसो दूर-देश में अपने घर की याद दिलाती है।

तो अपने भाषा को सदैव दिल में रखें क्योंकि भाषा एक आज़ादी का ऐसा
प्रतीक है जो कोई किसी से छीन नहीं सकता।

मेरे दादा-दादी और नाना-नानी

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

मेरे लिए तो सबसे प्यारे, मेरे दादा-दादी
उनके प्यार के आगे मैंने, सारे कष्ट भुला दी

नाना जी की मीठी बोली, मन में मिश्री घोले
खिल जाए मम्मी का चेहरा, मुस्काए हौले-हौले
दादाजी की ज्ञान भरी वो, लम्बी-लम्बी बातें
तन्मय होकर हम सब सुनते, छोटी पड़ती रातें

दादी-नानी की परियों वाली, ढेरों सुनी कहानी
शेर-बकरी, गुड्डा-गुडिया, किसी में राजा-रानी
हर किस्से के अंत में होती, सीख भरी कोई बातें
इसी तरह वो सिखला देतीं, जानें कितनी ही बातें

'शुचि' प्रभु से करे प्रार्थना
उनको सदा ही स्वस्थ रखना
सदा संग में रहे हमारे
दादा-दादी, प्यारे-प्यारे

मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है.

-----राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

रे पथिक

श्रीमती स्मृति त्रिपाठी, पत्नी : मेजर अनुराग द्विवेदी
उप-अधीक्षण सर्वेक्षक (पूर्ववर्ती)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

रे पथिक!
है तू कितना पागल
ढूंढ़ रहा बेगानी मंजिल
तलाशता परछाइयाँ,

मत निराश हो ठोकर खाकर
नहीं है तू सिर्फ हाड़-मांस का पुतला !
जो टूट जाएं निराशा से
और बिखर जाए तू ठोकर खाकर !

नहीं है व इतना निर्बल
जो सबसे सहारे की उम्मीद करे !
औरों का सानिध्य न पाकर
भविष्य के अंधेरों से डरे !!

खुद को इतना तपा दे तू,
कि सूरज खुद शरमा जाये !
अपना कद इतना बढ़ा ले तूं
कि खुद पर्वत भी घबरा जाये ! !

टकरा जा तू हर उस मुश्किल से"
जो काटे तेरे रास्तों को !
और रुख मोड़ दे धारा का
जो तुझको दिग्भ्रमित करें !!

बढ़कर आगे तू तोड़ ले
'उस आसमान के तारों को!
जो बरसो से है झुके हुए
तेरे हाथों में आने को ! !

तू अपनी इतनी चाल बढ़ा
'कि वक्त की चाल लगे मद्धिम !
हो जा समान-अग्नि प्रचंड
"कि देख के ही कटे हर विघ्न !

गर कोशिश करे सच्चे मन से
अपनी शक्ति पे तू खुद-चकित रह जायेगा,
ले ईश्वर का नाम और बढ़ आगे
तू हर मंजिल पा जायेगा ! !

श्री अमरनाथ दर्शन

श्री नारायण चन्द्र वर्मन, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

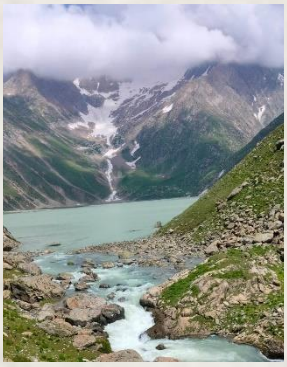

कश्मीर को तीर्थों का स्थल बताया जाता है। श्री अमरनाथ दर्शन करने के लिए , मैं मेरी पत्नी और दोस्तो के साथ जुलाई, 2023 में हावड़ा स्टेशन से नई दिल्ली तक सफर राजधानी एक्सप्रेस में किया। अगले दिन हवाई जहाज से श्रीनगर एयरपोर्ट होकर पहलगाम पहुँच गया। श्री अमरनाथ यात्रा के लिए अंतिम रलवेस्टेशन जम्मू है। यहाँ से बसें , कारें और सूमों - सभी प्रकार की सवारी मिलती है। श्री अमरनाथ यात्रा के लिए दो रास्ते हैं - पहलगाम और बलताल। जिसके पास समय कम है , वह बलताल से 16 किमी की चड़ाई चढकर बाबा को दर्शन कर सकता है। और पहलगाम होकर चंदंनवाडी, शेषनाग, पंचतरणी पारकर भी सरी अमरनाथ की प्रबित्र गुफा पर पौच सकता है।

यात्रा की पहले Shri Amarnath Shrine Board से यात्रा की परमिट के लिए रजिस्ट्रेशन करना पड़ता है। अपना इलाकाधीन हॉस्पिटल से compulsory Medical certificate लेना जरूरी है। यात्रा के पहले अपना आधारकार्ड , कौन-सा रूट और यात्रा का दिन की ऑफलाइन / ऑनलाइन में रजिस्ट्रेशन करना पड़ता है। यह यात्रा जुलाई महीना से शुरू होकर अगस्त महिना की राखी पूर्णिमा तक चलता है।

हमलोग पहलगाम के रास्ते से बाबा अमरनाथ की दर्शन के लिए यात्रा शुरू किया था। कोई उचित एवं निर्जन स्थान पर बाबा ने पत्नी माता पार्वती को अमर कथा सुनाने के लिए , बाबा श्री शंकरजी ने प्रथम “पहलगाम” पहुँचे, जहां उन्होने अपने नंदी (बैल) का परित्याग किया। वास्तब में इस स्थान का प्राचीन नाम था बैलगाँव। जो स्थानीय भाषा में बाद में पहलगाम बन गया। यहां से चंदनबाड़ी 16 किमी है। जानेवाला मार्ग सुंदर मनोरम प्रकृति की अद्भुत दृश्यों से भरा पड़ा है। चंदनबाड़ी सुमद्रतट से 9500 फीट उचाई पर स्थित है। यह पहाड़ी नदियों के संगम पर छोटी सी घाटी है। इसी स्थान से श्री अमरनाथ दर्शन के लिए पैदल / घोड़े पर यात्रा शुरू किया जाता है। प्रवेश द्वार पर अपना यात्रा परमिट के साथ ID Card दिखाना पड़ता है। कथा कहती है कि यहाँ बाबा श्री शंकरजी ने अपना जटा से चंद्रमा को मुक्त किया था। इसलिए इस जगह का नाम चंदनबाड़ी है। चंदनबाड़ी से चलते ही कुछ कदमो के दूरी पर प्रकृति द्वारा निर्मित वरफपुल है, जो लिडर नदी के उपर वना हुआ है। आगे बढते हुए हजारो पर्वतमालाओं को देखते है और हर पर्वत की अलग अलग पहचान है। कुछ दूरी तक जाने के बाद पिस्सुटॉप की कठिन चढ़ाई शुरू हो जाती है। मौसम सदैव खराब रहता है, इसलिए गरम कपड़े, रेनकोट, छाता और चलने की लाठ्ठी साथ में रखने चाहिए। कथित है कि देवता और राक्षस के साथ बहुत युद्ध हुआ था और उस युद्ध में राक्षस के मृतदेह पर पिस्सुटॉप बन गया था। इसका समुद्र तल से उँचाई 11,500 फुट। चंदनबाड़ी, पिस्सुटॉप पर लंगर खाना है जिसमें मुफ्त भोजन,

जलपान और विश्राम कर सकते है। हमलोग 19 किमी पैदल चलने के बाद, शेषनाग में पहुँच गया था। काश्मीर सरकार द्वारा रात में विश्राम करने के लिए टेन्ट का बन्दोवस्त है, जिसका किराया प्रति रात, प्रति आदमी 500 रुपये है।

वायो टॉयलेट की भी बन्दोवस्त है और गरम पानी के लिए 100 रुपये चुकाना पड़ता है। शेषनाग (11730 फुट) का प्राकृतिक दृश्य बहुत सुन्दर है। ऊँचे पहाड़ से पानी आकर एक सुन्दर झील को तैयार किया है, कथित है कि इस झील में भगवान शिव ने उनका नाग को छोड़ा था, जो शेषनाग नाम से परिचित है। इस झील का पानी बहुत शान्त है और यही झेलम नदी का उद्गम स्थल है।

SHREE SHIV SEWAK DELHI
SHREE SHIV SEWAK DELHI

अगला दिन में शेषनाग से पन्चतरणी पाड़ी दिया। बहुत चड़ाई उतराई अतिक्रम करके गनेश टॉप(14500 फुट) में पहुंच गया। कथित है कि भगवान श्री शंकर ने प्रिय पुत्र श्री गनेश जी को भी इसी टॉप में छोड़ दिया था, जो धीरे धीरे काश्मीरी भाषा के प्रभाव से महागुनस टॉप नाम पर परिचित है। गगनचुम्बी पर्वत माला, उबड़-खाबड़ रास्ता, आस-पास पाताल जैसे खाई तथा बीच से बहती दूधिया जलधारा एवं ठंढी-ठंढी हवा को छूके कठिन यात्रा में अत्यंत श्रद्धा एवं भक्ति भाव से चलते हैं। पंचतरणी (12729 फिट) के साथ हेलिकप्टार के योगायोग पहेलगाव और वानताल से युक्त है।टेन्ट में विश्राम लेने के बाद, अगला दिन 6 किमि दुर में वावा अमरनाथ की मन्दिर तक चलने शुरु किया। पहले संगम टॉप मिलता है उसके बाद बाबा अमरनाथ की गुफा दिख जाती है। जिसके दर्शन करने के लिए हमलोग इतनी कठिन यात्रा पुरी की -प्रकृति ने स्वय अपने हातो से निर्मान किया है एक पवित्र-पावन हिमलिंग, जो एक पक्के वरफ का हो। इस मुख्य हिमलिंग के पास गनेश, कार्तिकेय और माता पार्वती का हिम स्वरुप लिंग विराजमान है। "जय बाबा महादेव", "वर्फानी वावा की जय" के आवाज में सारा देवस्थल गुंज रहा था।विश्व उष्णायन ने वावा अमरनाथ की हिमलिंग थोड़ा सा छोटा हो गया है। गुफा लगभाग 19 मिटर चौड़ी और 10 मिटर लम्वी और 5 मिटर उँचाई लगता है। 466 सिड़िया पारकर 12757 फिट चड़ाई में वावा का स्थान है। वावा का दर्शन करने के बाद मेरा मन शान्त और प्रसन्न हुआ था। उहा से 16 किमि दूर बहुत चढ़ाई -उतराई पार करके हमलोग पैदल में बालटाल पहुंचा था और रात में विश्राम लिया था। यह रास्ता बहुत खतरनाक था। सारे मार्ग में भारतीय सेना और बी.एस.एफ., सी.आर.पी.एफ. द्वारा यात्रियों को सुरक्षा और स्वागत करते है। भगवान श्री शंकर राष्ट्र की एकता के प्रतीक है - भारतीय संस्कृति में चेतना का भी प्रतीक कहा जाता है। लोक मंगल के लिए विषपान करना, दुष्टों को दण्ड देने के लिए ताण्डव करना, देवतायो को मृत्यु के भय से मुक्त करने के लिए द्रवीभुत होकर पुन हिमलिंग के रुप में अमरनाथ गुफा में स्थित हौना यही विषेषता के कारन भगवान श्री शंकर भारत वर्ष को महान देवता वने है। भगवान श्री शंकर ने समस्त यात्रियों को रक्षा करते है - सारी यात्रा हमारे शान्ति पुर्वक, आनन्द से भरपुर हो गयी थे - "जय जय शिव शंकर"- "नम शिवाय" - "हर हर महादेव"।

"जय गिरजा पति दीन दयाला
सदा करता सन्तन प्रतिपाला।"

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (SGB)

श्री उदय शंकर प्रसाद,निदेशक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (SGB) भारत सरकार द्वारा भौतिक सोने की मांग को कम करने के लिए 2015 में शुरू की गई एक योजना है। निवेशक बॉन्ड के रूप में सोना खरीद सकते हैं और उस पर 2.5 % अतिरिक्त ब्याज भी कमा सकते हैं। बॉन्ड सरकार की ओर से भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा जारी किए जाते हैं, जो सोने की कीमत से जुड़े होते हैं। परिपक्वता पर 999 शुध्दता वाले सोने का बाजार मूल्य प्राप्त किया जा सकता है। यदि सोने की बाजार मूल्य में गिरावट आती है तो पूंजी हानि का जोखिम हो सकता है।

एसजीबी योजना 2023-24 की पहली श्रृंखला (श्रृंखला I) 19 जून से 23 जून, 2023 तक सदस्यता के लिए खुली थी, जिसका निर्गम मूल्य रुपये 5,926 प्रति ग्राम सोना था। अगली श्रृंखला (श्रृंखला II) 11 सितंबर से 15 सितंबर, 2023 तक खुली रहेगी। भविष्य में आने वाली एसजीबी श्रृंखलाओं की विस्तार में जानकारी, आरबीआई (RBI) / सबीआई (SBI) / बैंक ऑफ बड़ौदा आदी के वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (SGB) में निवेश के कुछ लाभ इस प्रकार हैं:-

1. चोरी या शुद्धता के नुकसान का कोई खतरा नहीं।
2. कोई भंडारण शुल्क नहीं।
3. कोई निर्माण शुल्क नहीं।
4. कोई GST नहीं।
5. 2.5% प्रति वर्ष की अतिरिक्त ब्याज दर, अर्धवार्षिक देय।
6. 999 शुध्दता वाले सोने की कीमत से जुड़े होने का लाभ।
7. स्टॉक एक्सचेंजों पर खरीदने और बेचने के योग्य।
8. एसजीबी पर ऋण सुविधा।
9. 3 साल के बाद निर्गम पर, दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ कर, के लिए इंडेक्सेशन लाभ (Indexation benefit for long-term capital gains tax, on exit after 3 years).
10. 5 साल के बाद मोचन / रिडेम्प्शन पर पूंजीगत लाभ कर छूट (Capital gains tax exemption on redemption after 5 years).

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (SGB) में निवेश की कुछ कमियाँ इस प्रकार हैं:-

1. सदस्यता के लिए केवाईसी (KYC) और पैन (PAN) आवश्यकताएँ।
2. आठ साल की लॉक-इन अवधि, किन्तु पांचवें साल के बाद बाहर निकलने का विकल्प।
3. भौतिक सोने या गोल्ड ईटीएफ (ETF) की तुलना में कम तरलता (Low liquidity)।
4. बाजार की स्थितियों के कारण सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड के कीमतों में उतार-चढ़ाव।

अस्वीकरण: यदि सोने की बाजार मूल्य में गिरावट आती है तो पूजी हानि का जोखिम हो सकता है। अतः यह निवेश हेतु सलाह नहीं है। आवश्यक हो तो विस्तार में जानकारी / FAQ आदि आरबीआई (RBI) / सबीआई (SBI) / बैंक ऑफ बड़ौदा आदी के वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

मेरी आवाज

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

'ओह !' बस इतनी सी आवाज
मेरे मुख से निकली थी।
जब एक चींटी,
मेरे पैरों तले कुचली थी।

फिर उस दिन तो,
मैं जोर से चिल्लाई,
जब एक कुत्ते की,
किसी ने की थी पिटाई

मेरी आवाज बढ़ रही थी
किसी के दुःख को देख
किसी के दर्द को देख
उसे दूर करने की बेचैनी
मुझमें भर रही थी

हां, मेरी आवाज अब बढ़ रही है
वो उनकी आवाज बन रही है,
जो बेबस हैं, लाचार हैं और
जिनके कष्ट से नहीं किसी को सरोकार है

मेरी आवाज ने यह ठाना है
जन-जन का कष्ट मिटाना है
मेरी आवाज ....।
हां, मेरी आवाज..................।।

बेटे की चाह

श्रीमती स्वर्णिमा बाजपेयी, अधीक्षण सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

एक छोटे शहर में कमला अपने पति एवं चार बेटियों के साथ किराये के घर में रहती थी। उसका पति, गोपाल, दूध बेचने का काम करता था। वो सुबह-सुबह साइकिल से आस-पास के गाँव से दूध इकठ्ठा करता और अपने शहर में घर-घर जा कर दूध देता और बाकि समय में अपनी पान की छोटी सी दुकान चलाता था । गाँव में लगभग दो बीघा खेती थी , जिससे अनाज वगैरह आ जाता था। पर परिवार बड़ा होने के कारण कभी-कभी आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ जाता था। इसलिए कमला भी रु 2500/- प्रति माह में पास के प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने जाने लगी। कमला एवं उसके परिवार का साधारण-सा जीवन चल रहा था, पर फिर भी कमला के मन में एक खालीपन सा था। क्यूँकि कमला को हमेशा से एक बेटे की चाह थी। उसका मानना था बेटियां तो शादी करके अपने घर निकल जाएगी, पर लड़का घर पे बहू लाएगा; हमारे साथ रहेगा; बुढ़ापे का सहारा बनेगा। आखिर वो ऐसा सोचे भी क्यों न, बचपन से हमें यही तो सुनने को मिलता है। बेटे को पाने की चाह में वो और उसका पति न जाने कितने ज्योतिषों के पास जा चुके थे और न जाने कितने उपायों को कर चुके थे। पर अबतक सारे उपाय व्यर्थ जा रहे थे। फिर भी, कमला के मन में कहीं न कहीं एक उम्मीद थी, कि एकदिन ईश्वर उसे बेटा जरूर देगा।

कुछ दिनों के बाद पड़ोस की चाची ने एक बड़े पंडित के बारे में बताया, बोला "तुम भी एक बार उन पंडित से मिल सकती हो , शायद उनके आशीर्वाद से तुम्हे भी लड़का हो जाये। फलाने की बहू को तो लड़का हो गया था।" कमला के मन में ये बात घर कर गयी और अपने पति के साथ उन्ही पंडित जी से मिलने गयी। कमला ने पंडित के द्वारा बताये गए सारे उपाय बड़े ही विधि-विधान से किये । सौभाग्यपूर्ण, कमला गर्भवती हुई और नौ महीने पश्चात् उसके घर में एक बेटे का जन्म हुआ। अब तो घर में चारो तरफ खुशियों का माहौल था, बैंड बाजों की गूँज थी । इतने सालो बाद कमला को बेटा हुआ था, चार बहनो का भाई जो आया था, ऐसा लग रहा था कमला को जैसे उसके सारे पुण्यों का फल मिल गया हो। कमला ने बड़े प्यार से उसका नाम कृष रखा। गर्भ के दौरान कमला की माँ कुछ दिनों के लिए मदद करने कमला के पास आ गयी थी, क्यूँकि कमला की बेटिया अभी छोटी-छोटी थी। कमला की माँ 2-3 महीने तक रुकी, अपने नाती को खूब खिलाया। कमला के पिता भी बूढ़े थे, उनके घर में गाय-भैसे थी, तो उसकी माँ को भी अपने घर जाना पड़ा।

माँ के जाने बाद, घर का सारा काम, चार बेटियों की जिम्मेदारी और छोटा सा बच्चा को संभालने की जिम्मेदारी कमला के ऊपर आ गयी थी। कमला का काम भी छूट गया था और गोपाल का धंधा बहुत अच्छा नहीं चल रहा था। तो घर में पैसों की कठिनाइयां आने लगी थी। कमला भी रात -दिन घर का काम कर के बहुत थक जाया करती थी और गोपाल भी परेशान रहता था। इसलिए आए दिन में दोनों में झगडे होने लगे थे। कमला को समझ आ गया था, पांच -पांच बच्चों को पालना उसके लिए बहुत मुश्किल हो रहा है। इसलिए उसने अपने पति से बात करके अपनी २ बड़ी बेटियों को अपनी माँ के पास भेजने का फैसला किया। और कुछ ही दिनों में बड़ी दो बेटियों को नानी के यह भेज दिया। बेटियों को भी नानी के यहां अच्छा लगने लगा, बिना क़ानूनी तौर से कमला की माँ ने उसकी दो बेटियों को गोद ले लिया था। बेटियों के जाने के बाद फिर से कमला के घर में माहौल ठीक हो रहा था। जैसे ही कृष 2 साल का

हुआ, कमला ने फिर से पुराने स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया। देखते ही देखते नानी ने दोनों बेटियों की शादी कर दी और कमला का बेटा कृष भी 15-16 साल का हो गया था।

कमला अपने बेटे की परवरिश में कोई कमी नहीं होने देती, उसकी छोटी से छोटी ज़िद पूरी करने की कोशिश करती, करे भी क्यों न इतनी मन्नतों के बाद जो हुआ था कृष। कृष भी पढाई में बहुत होशियार था। अपने अध्यापकों को अपनी प्रतिभा से चकित कर देता था। कमला और उसके पति को उससे बहुत अपेक्षाएं पनपनें लगी थी, आखिर दसवीं में कृष ने स्कूल में 85% अंक पाकर टॉप जो किया था। कृष का सपना था की वो बाहर शहर में जाये और अच्छे कालेज में इंजिनीरिंग करे। हाई स्कूल की परीक्षा के परिणाम आने के बाद कृष को खुद पे थोड़ा गुमान होने लगा। शायद कृष की उम्र ही ऐसी थी, उस पड़ाव में ये सब बड़ा स्वाभाविक होता है। गर्मियों की छुटियों में वो खेलने के लिए दोस्तों के साथ निकल जाता और घंटो-घंटो तक बाहर रहता। कमला और उसके पति भी निश्चिन्त थे और सोचते " इतनी पढ़ाई के बाद अभी तो मौका मिला है उसे खेलने का। उसी दौरान कृष अपने दोस्तों के साथ ताश का खेल शुरू कर दिया था। उसे ताश में इतना मजा आने लगा था, कि वो किसी भी दिन ताश खेले बिना उसे अच्छा नहीं लगता। गर्मियों की छुट्टियां भी ख़तम हो चुकी थी, उसके स्कूल खुल चुके थे। पर अब भी कृष का रवैय्या नहीं बदला था, उसकी पहले से पढ़ाई में रूचि थोड़ी कम हो गयी थी। जैसे तैसे 12वी की परीक्षा पास की और कालेज के लिए दाखिला ले लिया। अब तो स्कूल में रोज जाने का भी टेंसन नहीं था। कृष अब १८ साल का हो गया था। इसी बीच कमला ने कुछ पैसे जोड़ कर कृष के नाम पे एक छोटा सा नया घर ले लिया सोचा "मैं क्या करूँगी घर का, रहना तो वैसे भी कृष के साथ ही है" ।

धीरे-2 कृष ने पैसों से जुआ खेलना शुरू कर दिया और शुरू शुरू में उसने रु 10,000-15,000 भी जीतता था तो उसका खर्चा -पानी निकल जाता। इसलिए उसको और मजा आने लगा। पर कमला और उसके पति को कृष की जुए की लत के बारे में कोई खबर नहीं थी। वह वक्त के साथ इतना आदी हो चुका था कि कभी-कभी दिन-दिन भर पत्ते खेलता रहता और रात में भी घर देर से आता। उसके मन में अच्छी तरह से बैठ गया था कि जुएं में हारना जीतना लगा रहता है तो हारने पर उसे दुःख नहीं होता था, कभी कभी चुपके से घर से थोड़े-बहुत पैसे चोरी करके उसका काम चल जाता था। कमला के पूछने पे वो हमेशा कोई न कोई बहाना बना के निकल जाता। इसी बीच कमला ने तीसरी बेटी की शादी तय कर दी। शादी के खर्चे के लिए जो उसने पैसे अलमारी में संभाल के रखे थे, उसमे कुछ पैसे काम पाकर उसे कृष पर थोड़ा शक हुआ। पर शादी की हलचल में कमला और उसके पति ने इस बारे में कृष से कोई पूछताछ नहीं की।

धीरे-२ वक़्त गुजरता गया और कृष की लत और बढ़ती चली गयी। एक बार हद तो तब हो गयी जब उसने जुआ खेलते खेलते अपना नया घर भी दांव पे लगा दिया और जुएं में वो घर हार बैठा। जब कमला को इस बात का पता चला वो बेचारी तो वही बेहोश हो कर गिर पड़ी और गोपाल के पैरो तले जमीन खिसक गयी हो। उनको समझ नहीं आ रहा था कहाँ गलती हो गयी उनसे क्या भूल हो गयी उनकी परवरिश में? कमला ने जैसे तैसे खुद को संभाला, दूसरो से कर्ज ले कर अपने घर को बहाल कराया और इस बार घर अपने नाम करवा लिया। इस बात पे कृष और कमला की काफी बहस हुई और घर में बहुत झगड़ा हुआ। और कृष की उसके माता पिता से बात न के बराबर होने लगी थी, शायद कम बात होती थी तब ही घर में झगड़ा भी कम होता था। नहीं तो छोटी छोटी बातो में ही कमला की कृष से कहा-सुनी हो जाती थी। पर ऐसा कितने दिनों तक चलता, कृष को सुधारने का कोई न कोई रास्ता तो निकालना ही था। अब कमला ने ठान लिया था, कि वो कृष को सही रस्ते पे लेकर रहेगी। उसने कृष का बाहर आना जाना, दोस्तों से मिलना सब बंद करा दिया। उसको हमेशा समझाती, उसकी जिम्मेदारियों का एहसास कराती।

कुछ दिन तो सब ठीक चला पर फिर से कृष ने बाहर जान शुरू कर दिया, आखिर जवान लड़के को कब तक चाहरदीवारी में बंद रखा जा सकता है। फिर से उन्ही दोस्तों से मिलता और फिर से जुआ खेलना शुरू कर दिया। अब उसने आस-पड़ोस में अपने माँ-बाप के नाम पर कर्जा मांगना शुरू कर दिया। कमला व उसके पति इतने हताश हो गये थे, कभी वो कृष को प्यार से समझाते; तो कभी गुस्से में भला बुरा कहते पर कृष को मानो किसी की बात नहीं सुनाई दे रही थी, वो सबकी बात बस अनसुना कर देता।

कमला पुराने पल याद कर-कर के बहुत रोती कि कृष को पाने के लिए उसने बहुत पूजा की थी, फिर भी भगवान उसकी ऐसी परीक्षा क्यों ले रहा है। कमला हमेशा भगवान से यही प्रार्थना करती कि उसका पुराना कृष उसे वापस मिल जाये। बुढ़ापे और टेंशन की वजह से गोपाल भी आजकल बीमार रहने लगा था। कभी-कभी कमला गुस्से में कृष से बोल देती थी, "तू इस घर से हमेशा के लिए क्यों नहीं चला जाता कम से कम हमे तो चैन से इस घर में रहने दे।" अब कमला के घर में पहले से भी बुरे हालात हो गए थे। चाह कर भी कमला को कृष से बात करने का मन नहीं करता था। लोगो का कर्जा चुकाते चुकाते घर में आर्थिक तंगी भी आ गयी थी। प्रकृति का खेल देखो जिस बेटे की चाह में कमला ने इतनी तपस्या की थी, जिसको देखे बिना उसका दिन नहीं गुजरता था, आज उससे बात किये बिना कई कई दिन निकल जाते, फिर भी कमला उसकी खबर नहीं लेती थी।

और इधर कृष ने इतना कर्ज ले लिया था कि वो आराम से बाहर नहीं निकल पाता, जहा भी जाता लोग उससे पैसा मांगना शुरू कर देते थे। कुछ लोग तो उसे जान से मारने की भी धमकी दे चुके थे। जिन दोस्तों के साथ वो जुआ खेलता था, उससे कर्ज की वजह से उन्होंने भी बात करना बंद कर दिया था। कृष ऐसे गर्त में चला गया था जिससे निकलना उसके लिए नामुमकिन सा हो रहा था। ना ही उसकी उसके माता -पिता से ठीक से बात होती और ना ही कोई दोस्त बचा था उसके पास। कृष जो महज 22 साल का था अंदर ही अंदर घुट घुट के जी रहा था । कृष को अपनी गलती का एहसास हो गया शायद, पर अब पश्चाताप करके भी क्या फायदा? उसे पता था न तो उसके के पास इतना पैसा है और न ही कोई डिग्री जिससे उसे अच्छी नौकरी मिल सके। शायद वो सुधर सकता था अभी अगर उसके माता-पिता उसके साथ होते पर वो अपने माता पिता का विश्वास को पहले ही तोड़ चुका था।

एक दिन शाम को कमला के मोबाइल में कृष का मैसेज आया "माँ मुझे माफ़ कर दो।" कमला डर गयी क्यूंकि कृष सुबह से घर से बाहर था। उसने तुरंत कृष को कॉल किया पर किसी ने काल नहीं उठाया, उसके हाथ-पैर कांपने लगे। अपने पति के साथ पुलिस थाने रिपोर्ट लिखने गयी। बहुत ढूंढा तो पता चला कृष ने पास के एक होटल आज का बुकिंग कराया था, दरवाजा खटखटाया तो किसी ने नहीं खोला। अंत में, दरवाजा तोडा गया तो कमला अपने बेटे को फांसी पे झूलता देख स्तब्ध रह गयी। अपना बेटा पीछे छोड़ कर वो अपने घर आ गयी। उसकी आँख से कोई आंसू नहीं गिरा। बहुत कुछ खो कर भी उसके चेहरे में शिकन नहीं दिख रही थी। पता नहीं ईश्वर के इस फैसले से वो टूट गयी थी या इस फैसले को अपनी किस्मत मान के आगे बढ़ चुकी थी।

यात्रा - वृतांत

श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

कब कैसा संयोग बनता है यह सब ऊपर वाले के हाथ में है। मुझे यात्रा करना बिल्कुल ही नापसंद है। आप मुझे स्थावर की संज्ञा दे सकते हैं। परंतु सब कुछ अपने पसंद की तो नहीं हो सकती न और मैं तो ऐसा व्यक्ति हूं जो यह मानता हूं कि अपने पसंद का, अपने मन का कुछ भी नहीं होता है, सब कुछ ऊपरवाले के मन की होती है।

इस बार भी यही हुआ। यात्रा, ऊपर से कोलकाता से मुम्बई की लम्बी यात्रा, जिसके लिए थोड़ा भी मन न रहते हुए, कार्यक्रम बन गया और कारण बना पूणे का राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन। केवल हिन्दी सम्मेलन ही कारण नहीं था क्योंकि हिन्दी सम्मेलन तो विगत वर्ष भी सूरत में हुआ था और तभी भी मुझे भाग लेने का निर्देश प्राप्त हुआ था परंतु मैने सादरपूर्वक असमर्थता जताई और आदरणीय निदेशक महोदय ने मेरे अनुरोध को स्वीकार कर लिया था। परंतु इस बार यात्रा की अनिच्छा होते हुए भी मेरा मन तैयार हो रहा था। इसके पीछे दो महत्वपूर्ण कारण थे - सर्वप्रथम तो मुम्बई में पापा (मेरे श्वसुर) से मिलना सम्भव हो पाता जिसकी पिछले कुछ दिनों से न जाने क्यों तीव्र ईच्छा हो रही थी। इसके साथ ही दूसरे भाव मन को कचोट भी रहे थे कि जब मेरा हृदय उनसे मिलने को व्याकुल हो रहा है तो मेरी श्रीमतीजी का हृदय कितना विकल हो रहा होगा, उनके तो वे जनक हैं। मुझे किशोरावस्था की वह घटना सहज ही पुन: चलचित्रायमान हो उठी, जब मुझे पापा ने पढने के लिए बुआ के पास गाँव से शहर (दरभंगा) भेजा था। मैं कभी भी पापा से विलग नहीं रहा था। मैं कुछ दिनों के बाद ही बिना इस बात की परवाह किए कि पापा कितना गुस्सा करेंगे मैं दरभंगा बुआ के घर से भागकर बस स्टैण्ड पहुंच गया। अब तक मैं अकेले कहीं नहीं गया था, परंतु पापा से मिलने की उत्कण्ठा ने मुझे गाँव के बस में बिठा दिया और मैं रात में ही गाँव पहुंच गया था। ऐसा ही एकबार और हुआ। पापा के कुछ अस्वस्थ होने की शंका मन में हुई, उस समय मैं दरभंगा में अकेला रहता था और बाकी सारे सदस्य गाँव में रहते थे। उस शाम में एकाएक मन बेचैन होने लगा तो रात के 8 बजते - बजते साइकिल उठाकर 28 किलोमीटर दूर गाँव के लिए निकल पड़ा और रास्ते में सिमरी से शॉर्ट-कट सुनसान गाछी (जंगल) और श्मसान वाले भयावह रास्ते से होते हुए 1 घंटे से भी कम समय में मैं गाँव पहुंच गया था। वहां जाकर पता चला कि पापा सचमुच अत्यधिक बीमार थे और परम् पूज्य गुरूदेव ‘मालिक बाबा’ की असीम अनुकम्पा के कारण वे लगभग 1 माह तक अनवरत चिकित्सा के उपरांत स्वस्थ हुए। इन सब घटनाओ का यहां इसलिए जिक्र कर रहा हूं क्योंकि मैं कोई अलग व्यक्ति नहीं हूं सभी संतान के मन में अपने जननी और जनक के लिए ऐसे ही भाव होते हैं। यही भाव मेरी श्रीमती जी के मन में भी होगी और अभी जबकि उनके जनक का स्वास्थ्य कुछ समय से अस्थिर है, मुझे श्रीमती जी की विकलता का सहज भान हो रहा था। इसलिए मेरा मन मुम्बई आने का हो रहा था। दूसरा कारण शिरडी यात्रा की लालसा भी थी। इसकी वजह यह कि मैं संत शिरोमणि परम् पूज्य श्रीयुत् कबीर साहेब जू के एकेश्वरवाद के जिस चिंतन के साथ स्वयं को आत्मीयता से जुड़ा पाता हूं, वही चिंतन सांई बाबा का है। मैं यह भी देखना चाहता था कि सांई बाबा ने बाह्य आडम्बरों का विरोध करते हुए अंतरोन्मुख होकर उस एक सर्वशक्तिमान मालिक की उपासना की जो सलाह दी थी, उसे लोग शिरडी में वर्तमान में किस रूप में देखते हैं।

अंततोगत्वा यात्रा प्रारम्भ हुई। भारतीय रेल की विलम्बित यात्रा के कारण करीब 37 घण्टे की थका देने वाली लम्बी यात्रा के पश्चात हम रात्रि में लगभग 2 बजे मुम्बई पहुंचे। वहां से अगले दिन हमारी शिरडी की यात्रा भी सम्पन्न हुई, मन को आत्मिक शांति मिली। वहां कुछ आडम्बर अवश्य दिखा परंतु वह विशुद्ध रूप से वर्तमान वाणिज्यिक व्यवस्था का परिणाम था। मुम्बई में पापा जी से भेंट तो नहीं हो पाई क्योंकि यात्रा सुनिश्चित होने के कुछ दिनों बाद ही उन्हें जयपुर जाना पड़ा।

मेरी यात्रा का अंतिम पड़ाव पूणे था। वहां जाने पर मुझे अपने अंदर की नकारात्मकता पर विजय पाने की राह दिखाई दी। यह भी सुस्पष्ट हुआ कि आपसी संवाद से नकारात्मकता की धूल को साफ करने का कार्य किया जा सकता है। पूणे में कई विद्वजनों को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। राजभाषा के प्रति समर्पित लोगों के अथक योगदान से भी अवगत हुआ। सरकार के स्तर पर राजभाषा के उत्थान के लिए किये जा रहे अनेकानेक प्रयासों के बारे में जानकर मन अत्यंत हर्षित हुआ। यह जानकर आत्मिक शांति की अनुभूति हुई की सरकार द्वारा आम नागरिकों के सर्वांगीण विकास में जनभाषा - मातृभाषा के महत्व को स्वीकार करते हुए इस ओर विशेष प्रयास किये जा रहे हैं और निकट भविष्य में अष्टम् अनुसूची में दर्ज सभी भारतीय भाषाओं में प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की पढाई सम्भव होगी।

पूणे यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि रही प्रसिद्ध अभिनेता श्री आशुतोष राणा के विचारों को सुनना। केवल इसलिए नहीं कि वे एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं, बल्कि इसलिए कि उनके विचारों ने मेरे अंतरतम तक प्रभावित किया। मैं उनके सिनेमाई परदे के प्रसिद्ध विलेन कैरेक्टर की छवि जो मेरे मन मस्तिष्क पर छपी थी, उनसे ऐसे अद्भुत विचारों की अपेक्षा नहीं की थी। उन्होंने हाल ही में एक पुस्तक लिखी है - 'रामराज्य'। आज के परिप्रेक्ष्य में राम क्या हैं उसकी इतनी सुन्दर विवेचना उन्होंने की है कि आप भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। उन्होंने कहा कि हमारा शरीर 'दशरथ' के समान है। इसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि हमारा शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है और यह पांच ज्ञानेन्द्रियों के अधीन कार्य करता है। इस प्रकार हमारा शरीर दशरथ है। इनकी तीन रानियां हैं - कौशल्या अर्थात कुशलता अर्थात युक्ति, कैकेयी अर्थात कर्मठता अर्थात शक्ति तथा सुमित्रा अर्थात मित्रता अर्थात भक्ति। अर्थात दशरथ का जब युक्ति, शक्ति एवं भक्ति से मिलन हो जाता है तो परमात्मा रूपी राम, लक्ष्मण रूपी रक्षक, भरत रूपी प्रेम एवं शत्रुघ्न रूपी साहस की प्राप्ति हो जाती है। वहीं उन्होंने देवाधिदेव महादेव की भी इतनी सुन्दर विवेचना की कि आप मुग्ध हो जाएंगे। देवाधिदेव महादेव की सवारी नंदी, मां पार्वती की सवारी शेर, पुत्र कार्तिकेय की सवारी मोर, पुत्र गणेश की सवारी मूषक एवं महादेव के गले में विराजमान विषधर सांप सभी एक-दूसरे के शत्रु हैं। परंतु इतनी विसंगतियों के बावजूद भी जो सबको एक संग साधे वही शिव हैं। यह हमें अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालने का संदेश देती है।

जीवन की प्रतिकूलता को अपने अनुकूल करना ही शिव को साधने के समान है।

भारतीय रेल ने वापसी की यात्रा के दौरान भी अपनी लेट-लतीफी का भली भांति अहसास कराया जिसके कारण हम सोमवार 19 सितम्बर की रात्रि 2 बजे वापस अपने कोलकाता आवास पर पहुंचे। छोटे बच्चों को लेकर इतनी लम्बी यात्रा वो भी इतनी अल्प अवधि में पूर्ण करना अत्यंत कठिन होता है। यात्रा के दौरान बच्चों का स्वास्थ्य कुछ अस्थिर रहा जिससे कुछ कठिनाई अवश्य आई परंतु सर्वशक्तिमान ईश्वर की असीम अनुकम्पा एवं मालिक बाबा की कृपादृष्टि से यात्रा सम्पन्न हुई।

पर तुम नहीं आए

श्रीमती स्मृति त्रिपाठी, पत्नी : मेजर अनुराग द्विवेदी
उप-अधीक्षण सर्वेक्षक (पूर्ववर्ती)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

भइया, क्या तुम्हें याद है ?
जाते वक्त तुमने कहा था ,
कि शीघ्र ही लौट आऊँगा ।
..........तुम चले गए

वो काली भयावह रात
जिसका एक एक क्षण
सदियों सा प्रतीत हो रहा था
जाने कैसे-कैसे बीत गयी
...........पर तुम नहीं आए !

..........ओस ने विदा ली
सुनहरी किरणों के जाल फेंककर
रवि ने धरती पर जमा लिया अपना आधिपत्य
और एक पहर बीत गया
..........पर तुम नहीं आए !

..........थका हारा सूर्य छिप गया
शाम हो गयी, सभी घर लौट आए
पक्षियों के चहचहाने की ध्वनि भी
मद्धिम हो चली
संध्या की लालिमा छँटकर
झील के पानी में, खिलखिलाने लगी ,
और इस तरह बीत गया एक दिवस....
..........पर तुम नहीं आए !

चन्द्रमा का आकार घटने लगा
और एक दिन वो निकलना ही भूल गया
अमावस्या की रात्रि आ गयी
और एक पखवाडा भी बीत गया
..........पर तुम नहीं आए !

रात-दिन, दिन-रात, वक्त यूं ही गुजरता रहा
और ऐसे एक मास भी बीत गया
..........पर तुम नहीं आए !

मेरे हाथों की राखी हाथों में ही रह गयी
"कलाई तो तुम्हारी भी, सूनी रही होगी न ?
पूरा एक बरस बीतने को है
..........पर तुम नहीं आए !

होली, दशहरे, दीवाली, सारे त्यौहार अपने - अपने
समय पर आते हैं.........लेकिन..........
त्यौहारों का उल्लास, तो तुम अपने साथ ही
ले गए हो न !
कितनी बेरंग है होली तुम बिन,
कितनी अंधेरी है दीवाली तुम बिन,
सूना है घर दीपों से, उजाले से,
खुशियों से, उल्लास से...........
शायद मन का अंधेरा,
ज्यादा गहरा है अब कि
............इतने बरस बीत गए, तुम्हें गए हुए
अब से सूनी आंखें तुमसे, पूछना चाहती हैं...
............कि ....क्या अर्थ है तुम्हारे शब्दकोश में
“शीघ्र लौट आने का " ?
............या फिर ....
तुम उस रात
घर से निकले ही थे
शायद
" फिर कभी न लौटने के लिए?"

स्थानान्तरण की कहानी

श्री जशधीर पॉल, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

मुझे अपने करियर के अंतिम पड़ाव में प्रमोशन मिला और वह भी सपनों के शहर-कोलकाता में ट्रांसफर-पोस्टिंग के साथ। मौद्रिक लाभ न्यूनतम था लेकिन स्थानांतरण एक बीमा पॉलिसी के समान एक अच्छी पेंशन का वादा करता है।

रिश्तेदारों, दोस्तों और सहकर्मियों ने मुझे हार्दिक शुभकामनाएं दीं। फ़ेयर-वेल के लिए मिलन विशेष था और मार्मिक भी। अधिकांश मित्रों का विचार था कि यह पदोन्नति और कोलकाता में स्थानांतरण, मेरे लिए अवसर की एक खिड़की है, क्योंकि मेरा बेटा, जो अब दसवीं कक्षा में है, को अपनी पढ़ाई के लिए चुनने के लिए कॉलेजों का एक बड़ा चयन मिलेगा। हालाँकि इनमें से अधिकांश कॉलेज अपनी प्रवेश परीक्षाएँ स्वयं आयोजित करते हैं। दूसरा मौका, यानी, अगर मैं दोस्तों की सलाह मानूं, तो वह यह था कि, मैं कोलकाता में एक फ्लैट और इस तरह अपने सिर पर एक छत का मालिक बन सकूंगा, जो कि मेरे वर्तमान पोस्टिंग स्थान शिलांग में संभव नहीं है, छठी अनुसूची के कारण. तीसरा अवसर अधिक व्यक्तिगत था- शिलांग एक हिल स्टेशन है, फिट रहने के लिए बहुत कुछ चाहिए। इसलिए मैं कोलकाता में कम दवाओं के साथ जीवित रहूंगा।'

लेकिन पेड़ के लिए जंगल को नहीं छोड़ना चाहिए। मेरी पत्नी सातवें आसमान पर थी जब उसे मेरे कोलकाता ट्रांसफर पोस्टिंग के बारे में पता चला। उसने अपनी खुशी को अपने तक ही सीमित रखने की पूरी कोशिश की, लेकिन उसका राज तब खुल कर सामने आने लगा, जब मैंने उसे बताया कि मैं सरकारी तौर पर कोलकाता में एक फ्लैट खरीदूंगा। क्वार्टर कार्यालय परिसर से थोड़ा दूर हैं। जब हम खाना खा रहे थे तो वह लगभग घुटते हुए अपनी कुर्सी से उठी और इतना कहने में सफल रही, "हम पूजा के फ्लैट के पास एक फ्लैट खरीदेंगे।" एक बार जब उसने उस चिड़चिड़ी घुटन से अपनी सांसें वापस ले लीं, जो मानव जाति को बहुत अधिक खुश होने पर परेशान करती है, तो उसने कहा, "मैंने पूजा (उसकी छोटी बहन) के पास रहने का सपना संजोया था, जब से उसकी शादी के बाद हम अलग हो गए थे।" पूजा की शादी कोलकाता के उसके प्रेमी से हुई थी। “मैं अपने बेटे से ज़्यादा अपने भतीजे का सपना देखता हूँ। हम बहनें रोजाना घंटों फोन पर बिताती हैं। एक बार जब हम कोलकाता जाएंगे, तो हम एक साथ बैठेंगे और अपनी कहानियाँ साझा करेंगे। मैं उसकी मुस्कान देख पाऊंगा और उसकी खिलखिलाहट सुन पाऊंगा..................”

प्रिय पाठकों, मुझे आशा है कि अब तक आप यह अनुमान लगा चुके होंगे कि मेरा तबादला कोलकाता के अलावा किसी अन्य स्थान पर क्यों नहीं किया गया और अदृश्य हाथ ने ऐसा क्यों किया।

भारत के वीरों

सुश्री सुरभि बिश्वास
सुपुत्री : श्री समीर बिश्वास
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

क्या आप जानते हैं कि हमारा दैनिक भोजन कहाँ से आता है? यह किसानों के खेत से है. किसान वह है जो पौधे उगाता है और मानव उपयोग के लिए जानवरों को पालता है। किसानों का काम मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है। खेती या कृषि, लगभग दस हजार वर्षों से चली आ रही है। भारत दुनिया में सबसे बड़ा दूध उत्पादक है, सब्जियों और फलों में दूसरे स्थान पर है, मछली और अंडा पोल्ट्री उत्पादन में तीसरे स्थान पर है।।

किसान हमेशा से नायक रहे हैं क्योंकि वे मिट्टी को नया जीवन देने के लिए मंत्रमुग्ध कर रहे हैं और भविष्य में जीवन को बनाए रखने के लिए भूमि का प्रबंधन कर रहे हैं लेकिन वर्तमान में भारतीय किसानों की स्थिति बहुत खराब है। लगभग अस्सी प्रतिशत किसान वे किसान हैं जिनके पास एक हेक्टेयर से कम भूमि है। वे बुनियादी ढांचे, ऋण, बीमा, जल अधिकार और आपूर्ति, लाभकारी आय तक पहुंच की कमी से पीड़ित हैं। हालाँकि किसान बहुत महत्वपूर्ण हैं लेकिन फिर भी उनके पास उचित जीवनयापन नहीं है। जलवायु, कृषि उत्पादों के उदार आयात, कृषि सब्सिडी में कमी के कारण भारत में किसान कम हो रहे हैं।।

किसान हमारे देश की रीढ़ हैं। वे ही हैं जो हमें वह सारा भोजन उपलब्ध कराते हैं जो हम खाते हैं। इस प्रकार, हमें उन्हें निराश नहीं करना चाहिए। समाधानों से बिचौलियों को साहूकारों से मुक्ति मिल रही है, कृषि में जोखिम कम हो रहे हैं और ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है। किसानों को बचाने के लिए हमारी सरकार विभिन्न विशेषाधिकार प्रदान करने का प्रयास कर रही है। खेती को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रामीण बैंकों और सहकारी संस्थाओं के माध्यम से किसानों को ऋण दिया जाता है। हमें भी अपने देश के वीरों का सहयोग करके उनकी मदद करनी चाहिए।।

मन

श्रीमती स्मृति त्रिपाठी, पत्नी : मेजर अनुराग द्विवेदी
उप-अधीक्षण सर्वेक्षक (पूर्ववर्ती)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

मन की गति को
शब्दों के दायरे में
कैद कर पाना
कितना मुश्किल
शायद नामुमकिन.........
मन एक पल यहाँ
तो दूसरे क्षण न जाने
कहाँ होगा?
हम मन के हाथों
हो जातें है
मजबूर,
पर मन किसी बंधन में
कैद नहीं है
बिल्कुल स्वच्छंद
बिल्कुल स्वतंत्र
कभी पहाड़ों की ऊंचाइयों
पर चढ़कर
आसमाँ से बातें करता है
तो कभी घने बादलों में
समाकर
उसके साथ ही बरस
पड़ता है ,
कभी पेड़ों की डालियों के
साथ झूलने लगता है
और कभी हवाओं के साथ
बहकर
न जाने कौन से देश में
चला जाता है।
रिमझिमाती बारिश मे
मन कहता है
भीग जाने को ,
तो सावन के मौसम मे
खींच कर ले जाता है
पेड़ो की टहनियों से
लटकते
झूलों के पास।
कभी भविष्य के अनजान रास्तों में
भटकने के डर से
खामोशी के
आगोश में चला जाता है,
और कभी दौड़कर बचपन
की गोद में
चला जाता है......
खेलता है अपने पुराने खिलौनों से,
शरारतें करता है
और लौटता है
कुछ बीते हुए मासूम पलो
को साथ लेकर...
हर पल एक नया अनुभव
दे जाता है 'मन ' |
जिंदगी के प्रति एक नया
" दृष्टिकोण दे जाता है "मन" !!

मेरे पापा

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

हाँ.......अ.....आ........
दर्द छुपा कर रखे जो
बिना रूके जो काम करे
बच्चों की वो कामनाएं पूरी करे
अपने लिए जो कुछ न ले
मजा उसी में आता है
जब, बच्चों की ईच्छा पूरी कर पाता है
हाँ.......अ.....आ...........
बोलो- बोलो कौन है वो, कौन है वो
पापा, मेरे पापा ओ मेरे पापा

******

अभी कुछ दिनों पहले मैं जब ओडिशा गई थी, तब मैंने देखा- पापा हम सब के लिए कुछ-न-कुछ खरीद रहे थे, लेकिन वे अपने लिए कुछ नहीं ले रहे थे। फिर, जब मैं समुद्र किनारे मस्ती करने गई तो मैंने देखा कि पापा कोई मस्ती नहीं कर रहे हैं। वे कुछ न कुछ काम में व्यस्त हैं। कोई उन्हें फोटो खींचने का काम दे रहा था, तो कोई वीडियो बनाने का, तो कोई कुछ सामान लाने का। और पापा अपना परवाह किये बिना सब कुछ कर रहे थे। यह देख मुझे रोना आ रहा था। ये समुद्र वाली बात हमेशा मुझे रूलाती है।

कभी ऐसा दिन नहीं आया जब मैंने पापा को अपने लिए कुछ करते और खुश होते देखा हो। जब भी पापा ऑफिस जाते हैं तो मैं इंतजार करती रहती हूं कि कब आयेंगे पापा।

इस शहर में मैं जितना को जानती हूं, कोई पापा इतना नहीं करते जितना मेरे, हाँ, मेरे पापा करते हैं। मैं एक भाग्यशाली लड़की हूं, जो मुझे ऐसे पापा मिले हैं।

******

लिडार

श्री सुभाष चन्द्र संतरा, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

आइए जानते हैं कैसे लिडार (LiDAR) काम करता है ?

आजकाल पूरातत्ताबेत्ता अपने शोध के लिए लिडार (LiDAR) डेटा का प्रयोग कर रहे हैं। इस डेटा से वे लेज़र प्रकाश का प्रयोग करके उत्तम रेजोल्यूशन वाले मानचित्र तैयार करते है। लिडार (LiDAR) का पूरा नाम है लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंस (Light Detection and Ranging)। लिडार दूर से पृथ्वी पर स्तिथ बिभिन्न वस्तुओ की दुरी को मापने की एक प्रणाली है। जिसमे प्रकाश का प्रयोग पल्स वाले लेज़र के रूप में किया जाता है। वायु में स्थापित प्रणाली से प्राप्त डेटा के साथ काम करते हुए प्रकाश के ये पल्स पृथ्वी के आकार और उसकी सतह की विशेषताओं के बारे में सठिक 3 डी काम करता है।

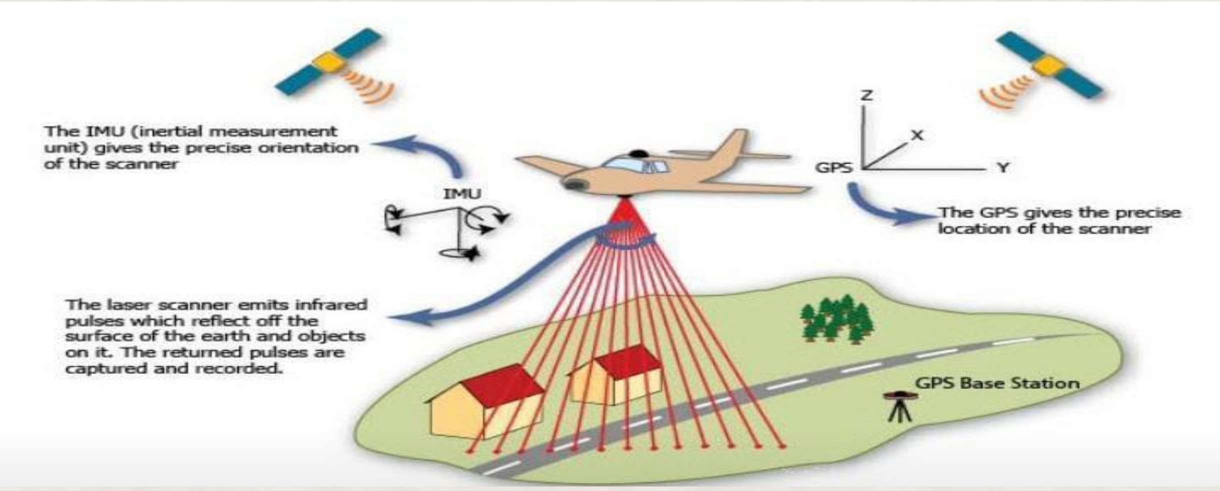
The IMU (inertial measurement unit) gives the precise orientation of the scanner
IMU
Z
X
GPS
Y
The GPS gives the precise location of the scanner
The laser scanner emits infrared pulses which reflect off the surface of the earth and objects on it. The returned pulses are captured and recorded.
GPS Base Station

लिडार उपकरण में एक लेज़र, एक स्कैनर और एक विशेष जी रिसीवर होता है .एस .पी .। लम्बे चौरे क्षेत्र के ऊपर लिडार डेटा प्राप्त करने के लिए अधिकतर हवाई जहाजों और हेलीकाप्टर का प्रयोग होता है। लिडार का सिधांत सरल है , यह पृथ्वी के सतह पर अस्थापित किसि वस्तु पर लेज़र परकाश फेकता है और प्रकाश के लौटने समय का आकलन करता है। लिडारडेटा को प्रसंस्करण में कोई चरण सामिल हैं। जिससे बिंदु बादलों को फ़िल्टर करना और साफ करना, डेम)DEM और (DSM उत्पन्न करना,और बिंदुओं को बर्गाक्रित करना शामिल हैं। लिडार प्रसंस्करण प्रक्रिया में एक महत्तपूर्ण कदम हैं। लिडार डेटा को एक या अधिक LAS या LAZ (LAS का संपीड़ीत रूप फ़ाइलों में संगृहित किया जाता हैं (। लिडार डेटा संगृहित करने के लिए एक उद्योग मापक बाइनरीप्रारूप हैं। लिडार डेटा फाइलों काफी बड़ी हो सकती हैं , जिसमें 3 डी बिंदु शामिल हो सकती हैं। ये बिशाल डेटा फ़ाइलें लोड करने वाले सफ्टवेयर की प्रसंस्करण गति प्रतिक्रिया को प्रभाबित कर सकती हैं।

लिडार स्कैनर कैसे काम करता है ?

परिभाषा लिडार में लेज़र प्रकाश एक स्रोत से भेजा जाता है और दृश्य में वस्तुओ से परिवर्तित होता है (ट्रांसमीटर), परिवर्तित प्रकाश का पता सिस्टम रिसीवर द्वारा लगाया जाता है और उडान के समय का उपयोग दृश्य में वस्तुओं का दरी मानचित्र विकशित करने के लिए किया जाता है।

वानिकी में लिडार क्या है ?

लिडार एक रिमोट सेंसिंग तकनीक है जो लेज़र पल्स द्वारा किसी वस्तु से टकराने और स्रोत पर से लौटने में लगने वाले समय को मापने पर आधारित है।

क्या लेजर उपयोग करता हैं ?

लिडार जो लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंस के लिए खड़ा हैं। एक रीमोर्ट सेंसिंग बिधि हैं जो पृथ्वीपर रेंज)
को मापने के लिए स्पंदित लेजर के रूप में प्रकाश का उपय(परीबर्तनीय दुरीोग करती हैं। जब की लिडार पृष्ठ 11
 पेंडो के माध्यम से प्रबेश नहीं कर सकता हैं 16, बिंदु कबरेज इतना घना है की अधिकांश बन परिबेशों में छोटे छेद के माध्यम से पर्याप्त जमीन को अनुमोती देता है। श्रेणी लिडार और रडार सिस्टेम कुछ मीटर से लेकर मीटर 200 से अधिक दुरी पर बस्तुयों का पता लगा सकता हैं। लिडार बनस्पति और पेड़ की ऊंचाई माप सकता है। जिससे उनकी बृद्धि और संरचना के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिलती हैं। लिडार जमीन को और लेजर स्पंदन उन्यजिते करके और पत्तियों से पराबर्तित होने के बाद लेजर को यापस लोटने में लगने वाले समय को नापकर बनस्पति और पेड़ों की ऊंचाई नापता है।

लम्बी दुरी के लिडार स्कैनोर उत्पाद ?

पता लगाने की दुरी ± मीटर तक है 2000 सेमी सटीकता के साथ 2। एच डी मानचित्रो ,भूमि सर्वेक्षण अग्नि आपातकाल , बिजली निरक्षण ,ट्रैक निरक्षण , खान निरक्षण , सुरंग निरक्षण , पुल टकराव विरोधी और अन्य क्षेत्र में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। कहा की पेड़ पौधों कार्बन डाइ ऑक्साइड ग्रहण।

लिडार के साथ समस्याएँ

लिडार कुहासे , बरसात , हिम्पाल और धूलि भरे मौसम में ठीक से काम नहीं कर सकता है। इसके जरिये शीशे की दिवार या दरवाजा का पता लगाना थोड़ा कठिन होता है , इसलिए स्मार्ट फ़ोन और अपने आप से चलने वाली कारो के निर्माता लिडार का प्रयोग तो अवश्य करते है परन्तु साथ ही कुछ कैमरे और सेंसर का भी उपयोग करते है। पानी के अन्दर एयरबोर्न बाथीमेट्रिक लिडार सिस्टम से ग्रीन स्पेक्ट्रम 532)एनएम् लेज़र बीम (300 मीटर तक प्रवेश कर सकता है।

सामरिक मध्य श्रेणी लिडार के लिए न्यूनतम रेजोल्यूशन लगभग 5 - 10 सेंटीमीटर @ 30 मीटर है। जबकि लम्बी दुरी के लिए लिडार लगभग -23 @ 100 सेंटीमीटर है। टेक्टिकल रेंज और मिड रेंज - लिडार सेंसर की आवृति और कोणीय रेजोल्यूशन एक ही रेंज में है।

अँधेरे से अप्रभावित दृश्य प्रकाश पर निर्भर पारंपरिक दृष्टि आधारिक प्रणालियों के विपरीत लिडार दूरियों को - मापने के लिए लेज़र पल्स का उपयोग करता है। यह इसे रात में अत्यधिक प्रभावी बनता है क्युकी यह प्राकृतिक प्रकाश की अनुपस्थिथि से प्रभावित नहीं होता है।

उर्जा लिडार सेंसर के उपयोग की मात्रा ब्रांडो के बिच भिन्न होती है , बेलोड्य्ने का बेलारे एच 800 , 13 वाट का उपयोग करता है जो अधिक उर्जा गहन विकल्पों को प्रथापित करने पर प्रति वाहन -0.042 किओवाट तक बचा सकता है।

लिडार में क्या नुकसान है ?

खराब मौसम की स्थिति में लिडार की कम कठिनाई होती है। क्योंकि दूरी मापने के लिए लिडार दृश्यमान लाज़ेरो का उपयोग करता है। ख़राब मौसम की स्थिति,जैसे भारी बारिसो में बर्फ और कोहरे में अच्छी तरह से काम करने में असमर्थ है जब की राडार अभी भी ऐसे स्थितियो में काम कर सकता है। लिडार खराब मौसम में अनिवार्य रूप से अँधा हो जाता है।

लिडार सेंसर के सापेक्ष 0.5 से 10 मिमि की रेंज सटीकता और) सेमी खैतीज 2x ,y) और) सेमी उर्धधर 2Z) तक की मैपिंग सटीकता प्राप्त करने में सक्षम है। लिसर डेटा बाढ़ और तूफ़ान वृद्धि मॉडलिंग , उद्योगनामिक मॉडलिंग तटरेखा मानचित्र , आपत्कालीन प्रतिक्रिया , उद्योगग्राफिक सर्वेक्षण जैसे गतिविधिओं का समर्थन करता है।

ब्यावसाईक लिडार समुद्र तट और पानी के भुस्थानिक डेटा को पकड़ने की एक तकनीक होता है (उथले)। यह संभावित रूप से हाइडोग्रफिक डेटा के कुशल और तेज निर्माण की सुविधा प्रदान करने वाली एक विधि है। लोगों को दुनिया भर में तकनीक और विभिन्न अनुयोगो पर लेख मिलेंगे।

लिडार सिस्टम इसी सिधांत के बहुत काम करते है , लेकिन ऐसा प्रकाश की गति से करते है ध्वनि की गती से गुना अधिक तेज ध्वनि तरंगो का उत्सर्जन करने बजाए वे हर सेकंड सैकरो हजारो लेज़र पल्स से डेटा 1000000 संचारित और प्राप्त करते है।

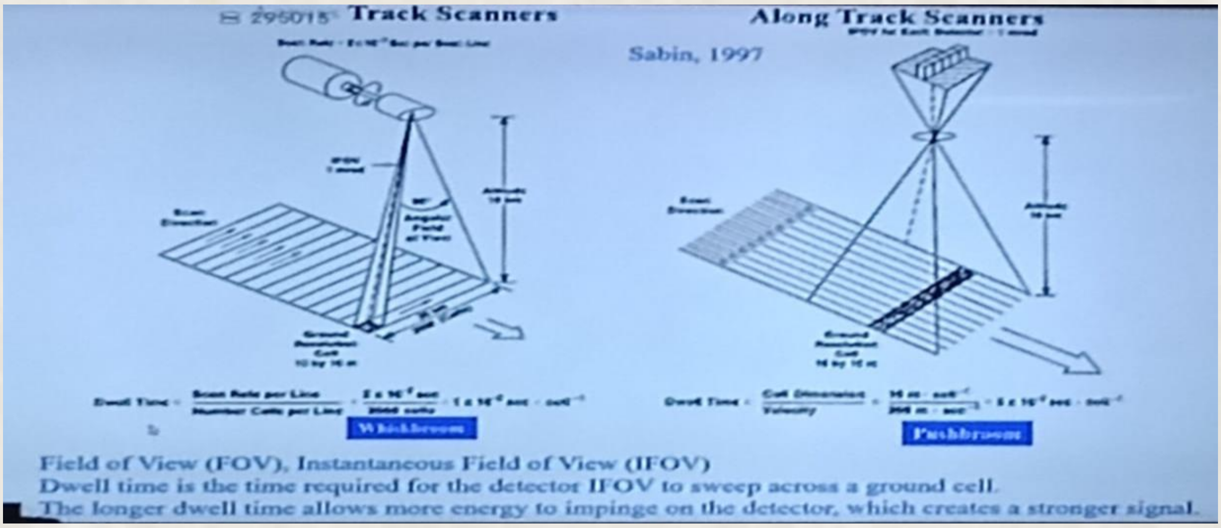

Field of View (FOV), Instantaneous Field of View (IFOV)
Dwell time is the time required for the detector IFOV to sweep across a ground cell.
The longer dwell time allows more energy to impinge on the detector, which creates a stronger signal.

खूली स्थलाकृति दुनिया भर में लिडारद्वारा उत्पन्न देतासेट संग्रह, और इसके अधिकांश डेटासेट अमेरिका , न्यूजीलेंड में स्थित हैं।

पता ही नहीं चला

श्रीमती शम्पा मुखर्जी, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

समय बीता पर कैसे बीता
पता ही नहीं चला।
जिंदगी की राहों में
कब निकली उम्र हमारी
पता ही नहीं चला।

कंधे पर पड़ने वाले दायित्व
कब कंधे तक आ गए
पता ही नहीं चला।

मां-बाप के घर से शुरू हुआ था सफर
शादी होने का बाद कब अपने घर बन गए
पता ही नहीं चला।

कभी थे जिम्मेदार हम मां-बाप की
कब हुए जिम्मेदार हम सास ससुर की
पता ही नहीं चला।

एक समय था जब दिन में भी
आराम से सो जाते थे,
कब दिन-रातों की उड़ गई नींद
पता ही नहीं चला।

बच्चों के देखभाल के लिए
इतने मशगुल हुए हम
कब बच्चे बड़े हो गए
पता ही नहीं चला।

अब सोच रहे थे
ऐसी ही समय बीत जाए पर
पता ही नहीं चला।

जीवन में बहाव कितना आवश्यक है न

श्रीमती स्मृति त्रिपाठी, पत्नी : मेजर अनुराग द्विवेदी
उप-अधीक्षण सर्वेक्षक (पूर्ववर्ती)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

जल कितना ही स्वच्छ क्यूँ ही न हो,
ठहराव दुर्गंध ही उत्पन्न करता है,
और जीवन में ठहराव
व्यक्तित्व और विकास को अवरुद्ध कर देता है।

यदि कुछ भी सदा के लिए नहीं है
तो वेदनाएँ और अवसाद ही क्यूँ ?
क्या किसी एक ही बात या घटना को लेकर
हमेशा उदास रहना उचित है ?
युग-युग का यही विधान है,
जीवन ही समस्या और यही निदान है।

जो व्यक्ति समस्याओं के बोझ को सिर से नहीं उतारता
वह जीवन में
नई समस्याओं की परतों के बीच दब जाता है
एक समस्या के हजार निवारण होते है
और हमे तो सिर्फ एक ही खोजना है न ।
जीवन में बहाव कितना आवश्यक है न ?

मेरा मणिपुर का पहला फील्ड

श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

5 अगस्त 2008 को मैंने सिलचर ऑफिस में ज्वाइन किया। 4 मार्च 2009 को मुझे मणिपुर फील्ड भेजा गया। हमारा फील्ड कैंप थोबल पुलिस स्टेशन, काकचिंग के ठीक पीछे लगा था। और हमे यह बता दिया था कि शाम 4:00 बजे बजे के बाद शहर में घूमना या कैंप के बाहर जाना मना है। हमें सुबह फील्ड में निकलने से पहले उस जगह के बारे में बताया जाता था कि कितने समय तक काम करना है? एक महीना काम करने के बाद हमे पता चला कि हमें सुरक्षा दीया जाना था और उसके तहत हमे काम करना था। साथ ही यह भी पता चला कि सुरक्षा के साथ काम करना और ज्यादा जोखिम था, क्योंकि पुलिस या आर्मी मैन पर ज्यादा हमला होता है। मणिपुर में 32 गिरोह है जो ज्यादा आपस में लड़ते रहते थे। हमें यह भी पता चला कि वह हर एक दुकान या नौकरी पेसा वालो से लेवी वसूल करते हैं। एक बार की घाटना बता रहा हूं हम लोग इम्फाल मार्केट में कोई काम से गये थे। अचानक अफरा तफरी मच गई, फिर देखे कि एक कपड़े के दुकानदर को किसी ने गोली मार कर चला गया। वहाँ हमेशा एक डर का माहौल रहता था कब कौन कहा से आ जाए, किसको गोली मार दे। रात में गोलियों की आवाज और दिन में थाने में लासों का आना, हमें थर्रा देता था यह दृश्य देख कर।

उस समय मणिपुर में आर्मी एक्ट लागू था। इसका मतलब पुलिस और सैनिको को यह अधिकार था, जिस किसी पर आतंकवादी होने का शक हो उसे गोली मार देते थे और उस पर कोई कारवाई भी नहीं होती थी। मुझे पहली बार मालूम चला कि कश्मीर का मामला इसके सामने कुछ भी नहीं है।

जब हम फील्ड में निकलते थे सड़क पर आदमी कम, और पुलिस फोर्स ज्यादा दिखते थे मानो युद्ध का मैदान हो। शहरो में एक गजब सन्नाटा लगता था। ठीक इसके विपरीत मणिपुर का मौसम काफी सुहावना था और वहां गर्मी बहुत कम पड़ती है। हम लोग फरवरी से जून तक वहां काम किए है। लेकिन गर्मी बिल्कुल भी मालूम नहीं चली। एटीएम से पैसे निकालने के लिए हमे 60 किलोमीटर दूर इम्फ़ाल जाना पड़ता था। लंबी लंबी लाइन लगाने पड़ती थी, और कभी-कभी पैसा भी नहीं मिल पाता था। बैंक भी हफ़्ते में 2 या 3 दिन सुबह 10:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक खुलते थे।

काकचिंग का काम तो ख़त्म करके हम लोग वापस आ गये। अब 2010 की बारी है इस बार हमें एनएचपीसी लिमिटेड (लोकतक जलविद्युत परियोजना) का काम था। लोकतक झील के बारे में हम आप लोगों को बता देते हैं, इसको बहुत लोग जानते होंगे, लोकताक की एक बहुत बड़ी झील है और यह पर्यटन स्थल भी है। और इस समय आतंकवादी का गढ़ था। लेकिन अभी पता नहीं। वहां हमें मणिपुर राइफल्स कैंप में रहने को मिला था।

हमें दो बटालियन सुरक्षा गार्ड के लिए मिला था। पहला मणिपुर राइफल्स और दूसरा दूसरा इंडियन रिजर्व बटालियन (आईआरबी)। जब हम काम में निकलते थे तो हमारी जीप के आगे एक बटालियन और जीप के पीछे एक बटालियन, दो बटालियन साथ में रहते थे और हमारी गाड़ी बिच में चलती थी। इसका अनुभव में जुबा से बयां नहीं कर सकता क्योंकि एक ओर जहां वीवीआईपी का महसूस होना था और दूसरी तरफ इतनी सुरक्षा में काम करना डर भी लगता था।

फील्ड वर्क में जाने से पहले हमारे सभी साथियों का बीमा भी करवाया गया था रु.700000/- का। यहां 1 महीने का काम करने के बाद हमें तमेललोंग जिला जाना था। फिर वहा तोसोंग खुनूं गांव जाना था। हम सुबह सुबह कैंप से निकल परे सुरक्षा गार्ड के साथ। 5 घंटे की यात्रा करने के बाद टुपुल नामक जगह पर पहुंचें। वहाँ थोड़ा नास्ता किये, खाना खाया बीएसएफ के कैंप में। अभी भी हमें 2 घंटे का और सफर करना था, उसके बाद जब हमने आगे चलना शुरू किए, यहाँ से रास्ता नहीं था, पहाड़ को किसी तरह जेसीबी मशीन से जैसे तैसे रास्ता बनाया गया था। एक वोर जहां पहाड़ ,वही दूसरी वोर खाई .और बीच बीच में हल्का बारिस भी हो रही थी, जिसमें जीप का चक्का स्किड कर रहा था। मैंने रिकॉर्डिंग भी की, कुछ फोटो भी ली। एक घंटे चलने के बाद हमलोग एक जगह रुके । वहाँ चाय पिए थोड़ा ब्रेक लीजिए...लेकिन यात्रा खत्म नहीं हुई अभी..तोसोंग खुनूं गांव में पहुंचने के लिए और 12 किमी जाना था।शाम में हम और हमारे सारे सुरक्षा गार्डतथा हमारे साथ मणिपुर राइफल के जवान और ओसी भी थे...वही एक छोटा सा गेस्ट हाउसटाइप मे रात गुजारे ।

रास्ते में मणिपुर का दृश्य ,नेचुरल खूबसूरती देखने लायक थी।सुबह हुआ अब हमे आगे का सफर सुरू करना था।

यहां से हमारा मोबाइल का टावर बंद हो गया कोई टावर नही। रास्ते में जगह जगह पेड़ टूट कर पारी हुई थी तो कही स्लाइडिंग से पत्थर गिरे हुए थे खैर हम लोग तुसुंग खुनून गांव में पहुंच गए।

उस गांव में केवल हमे दो से तीन घर मिले ,वहा हमारे लिए एक मिट्टी का घर था उसी में हम तीन surveyor(सर्वेछक),ग्रुप डी और हमारे सीके को रहना था, घर थोड़ा बड़ा था । हमारे साथ मणिपुर राइफल्स के ३० जवान के साथ उनका OC भी थे उन्हें भी एक घर मिला था जिसमे सभी को साथ रहना था।वहा हमे लेवलिंग करना था पहाड़ पर। जब हम levelling का काम शुरू किए तो हमारे staff के बीच की दूरी २ से ३mt ही रखते थे तो आप समझ सकते है कितने हाइट पर काम करना था

वहा न टावर था और न ही करेंट ,हम लोग काम करते थे और शाम को ही ५ भी खाना खा कर सो जाते थे। Office से लालटेन issue करवाए थे वही जलाते थे। घर में बात किए महीने हो गए थे। बारिश का मौसम अब शुरू हो चुका था । इस मौसम में जोक का निकलना आम बात थी। साथ में बिच्छू और जंगली इंसेक्ट निकलने लगे,रात में बहुत तेज बारिश होती थी ऐसा लगता था मानो घर का छात तोड़ कर बारिश का पानी घर में घुस जायेगी। और सुबह होने पर वही सुनहरा मौसम तो अचानक कभी विषण बारिश ।

कुछ दिन बाद हमारे साथी बीमार पड़ने लगे और दूसरे तरफ मणिपुर राइफल्स वाले भी अब घर जाने के लिए हम पर दबाव बनाने लगे,हमे भी अब अच्छा नही लग रहा था ।कैंप क्लोजिंग का ऑर्डर कैसे लिया जाय मोबाइल काम नही कर रहा था, जेनरेटर चला कर मोबाइल चार्ज किए और फिर पुलिस वाले तथा हम लोग पहाड़ पे चढ़ कर टावर सर्च करते थे और एक दिन टावर मिल ही गया। और एक ही मोबाइल था जिसमे थोड़ा टावर मिलता था फिर उससे हम सब लोग १५ से ३० सेकेंड कर के घर में बात कर पाए । फिर ऑफिस में भी बात हुई और तुरंत हमे कैंप क्लोजिंग का ऑर्डर मिल गया।

दूसरे दिन हम लोग समान पैक किए और सुबह सुबह पैदल निकल पड़े ,हमे १२ km चलना था क्यों कि गाड़ी नही आ पाई थी।जंगल जंगल हमलोग और हमारे साथ मणिपुर राइफल्स वाले चलने लगे दर भी लग रहा था और नही भी क्यों की हमलोग बहुत आदमी थे। फिर शाम को Thangal पहुंच गए ।वहा हमे एक रात रुकना था।सुबह सुबह हमे लोकतक झील होते हुए इंफाल पहुंचना था।ये रास्ता बहुत खतरनाक था क्यों की इस रास्ते में अनेक बार एंबुश हो चुके थे और maximun मणिपुर राइफल्स वाले जाने से मना कर रहे थे उसमे बहुत ऐसे थे जो एक दो बार उसी रास्ते में आतंकवादी से भीर चुके थे ।

अंत में डिसाइड यह हुआ की हमलोग इसी रास्ते से जायेंगे क्यू की हमारे पास और रास्ते नही थे। हमारे लिए एक मिनी बस की किसी तरह ब्यास्था हुई । और एक बुलेट प्रूफ जीप हमारे आगे और एक पीछे थी ,पूरी तैयारी के साथ। हमलोग भगवान का नाम लेकर चल दिए और शाम तक इंफाल पहुंच गए,बीच में कही भी गरी नही रुकी और न ही horn मारा गाया । फिर इंफाल में एक दिन stay करने के बाद हमलोग गाड़ी भाड़ा किए और सिलचर ऑफिस पहुंच गए।

तनाव से घिरा महानगर का जीवन

श्री गौतम आनन्द, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

यह सच है की महानगरों मे सभी सुख सुविधाएँ होती है, यातायात से लेकर बिजली, पानी आदि सभी सुविधाएँ होती है। परन्तु जितना शहरों का जीवन बाहर से सुन्दर और शांत दिखता है उतना होता नही है। शहरो का जीवन गाँवों के मुकाबले ज्यादा तनाव से घिरा होता है। शहरो की व्यस्त सड़कें और भीड़ भरे बाज़ार हमारे दिल दिमाग को लगातार बीमार बना रहे हैं। प्रकृति से दूर नगर का जीवन हरदम तनाव से घिरा रहता है। आज ज्यादातर आदमी महानगर की भीड़ में जी तो रहा है मगर वह इस कदर परेशान है की जरा जरा सी बात पर बुरी तरह झूंझला कर मरने-मारने पर उतारू हो जाता है। शहर कुछ लोगों के लिए भले ही सुखों से भरपूर हो किन्तु वे आदमी को प्रकृति से दूर करता जा रहा है। भागदौड़ भरी जीवन शेली और फिर प्रदूषण व बीमारियों के खतरे तनाव को बढ़ा रहे है। कभी आतंकवाद तो कभी ढंगे तो कभी भयानक महामारी ये सब इंसान को डराते रहते हैं। शारीरिक व मानशिक समस्या भी महानगरो में ज्यादा पाई जाती है। ऊपर से यह कूड़ा, जिसने लोगों को और बीमार कर दिया है। लोगों को अपने काम काज की चिंता ने अपनों से दूर कर दिया है। लेकिन इन सब के बीच यदि संतुलन बनाकर रखा जाय तो व्यक्ति इन तनाव से कुछ हद तक दूर रह सकता है। अंत में यही कहना चाहूँगा की व्यक्ति को अपने परिवार के साथ समय बिताना चाहिए और प्रकृति से जुड़कर रहना चाहिये।

शिक्षक

श्री अभय कुमार मिश्रा
सुपुत्र: श्री काली प्रसाद मिश्रा, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

जीवन में जो राह दिखाया, सही तरह से जो चलना सिखाया,
माता-पिता के बाद इन्हीं का नंबर आता ,
जीवन में सदा आदर पाते।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे मिलती,
सीखी कर्तव्य निष्ठा जिससे, कभी रहा ना दूर में जिससे, वह मेरा पथ प्रदर्शक है जो मेरे मन को भाता है
वह ही शिक्षक कहलाता।
कभी है शांत , कभी है धीर, कभी है उग्र, कभी है चंचल।
मन में दबी रहे हर इच्छा काश मैं उनके जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता

इंसान की कीमत

श्री बिश्वनाथ नाग, मैप क्यूरेटर
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

एक बार लोहे की एक दुकान में अपने पिता के साथ काम कर रहे एक बालक, जिसका नाम रोहित था, ने अचानक ही अपने पिता से पुछा - “पिताजी इस दुनिया में मनुष्य की क्या कीमत होती है?”

पिताजी एक छोटे से बच्चे से ऐसा गंभीर सवाल सुन कर हैरान रह गये।

फिर वे बोले-“बेटे एक मनुष्य की कीमत आंकना बहुत मुश्किल है, वो तो अनमोल है।”

रोहित - क्या सभी उतने ही कीमती और महत्त्वपूर्ण हैं ?

पिताजी - हाँ बेटे।

बालक रोहित के कुछ पल्ले पड़ा नहीं, उसने फिर सवाल किया - तो फिर इस दुनिया मे कोई गरीब तो कोई अमीर क्यों है ? किसी की कम इज्जत तो किसी की ज्यादा इज्जत क्यों होती है?

सवाल सुनकर पिताजी कुछ देर तक शांत रहे और फिर रोहित से स्टोर रूम में पड़ा एक लोहे का रॉड लाने को कहा। रॉड लाते ही पिताजी ने पुछा - इसकी क्या कीमत होगी?

रोहित - “लगभग 300 रूपये”। रोहित अकसर खाली समय पर दुकान में अपने पिता की दुकानदारी में उनका हाथ बांटने आ जाया करता था ।

पिताजी - अगर मैं इसके बहुत से छोटे-छोटे कील बना दू, तो इसकी कीमत क्या हो जायेगी ?

रोहित कुछ देर सोच कर बोला - तब तो ये और महंगा बिकेगा लगभग 1000 रूपये का।

पिताजी - अगर मैं इस लोहे से घड़ी के बहुत सारे स्प्रिंग बना दूँ तो?

रोहित कुछ देर सोचता रहा और फिर एकदम से उत्साहित होकर बोला ” तब तो इसकी कीमत बहुत ज्यादा हो जायेगी।”

पिताजी उसे समझाते हुए बोले - “ठीक इसी तरह मनुष्य की कीमत इसमें नहीं है की अभी वो क्या है, बल्कि इसमें है कि वो अपने आप को क्या बना सकता है।”

रोहित ने अपना सिर हिला दिया, क्योंकि वह अपने पिता की बात समझ चुका था।

****

श्री बदरी विशाल के सनिध्य मे कार्य - भाग 1

मेजर अनुराग द्विवेदी
उप-अधीक्षण सर्वेक्षक (पूर्ववर्ती)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

यह बात 2018 जून की है जब मुझे अपनी रेजीमेन्ट की तरफ से चार धामों मे प्रसिद्ध बद्रीनाथ (माना गाँव) से कुछ 40 किलोमीटर ऊपर भारत चीन सीमा पर इंजीनियर टास्क फोर्स में भेजा गया था। मैं जून के पहले हफ्ते में अपनी टुकड़ी को ले कर मेरठ से माना की तरफ निकल गया। हमने ऋषिकेश के पास पहला विश्राम लेते हुए, हरिद्वार के दर्शन किए, फिर ऊपर की ओर चल दिए। रास्ते में देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग होते हुए गउच्चर पहुचे। वहाँ रात्री में आराम कर सुबह जोशिमठ के लिए निकले ,ऊँचाई के साथ हवा भी पतली होती जा रही थी एवं ठंड भी अपना प्रभाव बढ़ा रही थी। रास्ते में हमे खाई,नदिया,नाले,पहाड़ों से निकलते झरनों की सुंदरता के साथ पहाड़ों के कटाव भी देखने को मिल रहे थे। किसी तरह पूरे दल को सुरक्षित रखते हुए हम जोशीमठ पहुचे ,जहा से अगली सुबह हमए अपने पहले पड़ाव तक पहुचना था जो था माना गाँव। माना गाँव से एक टीम खाने पीने का समान लेने एवं कुछ खरीदारी करने जोशीमठ पहले ही आई थी। उन्होंने बताया की रास्ते मे पहाड़ एवं पत्थर गिरने की वजह से रास्ता संकरा है एवं अधिकतर बंद रहता है। भगवान का नाम लेते हुए एवं मेरे द्वारा अपने दल को सभी सुरक्षा चेतावनी देते हुए हम माना गाँव की तरफ अग्रसर हुए। रास्ते में गोविंदघाट पे गुरुद्वारा में लंगर का प्रसाद लेते हुए शाम 4 बजे माना पहुंचे । वहाँ हमारा एक अग्रिम दल हमारा इंतज़ार कर रहा था। सभी को एकत्रित कर हमने सभी की गिनती कर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। शाम को अपने सीनियर को सबके ठीकठाक होने की सूचना देते हुए, मैं अपने दल के साथ भोजन के लिए निकला जो की पास की ही जगह बन रहा था। भोजन करने के बाद में अगले दिन की तैयारी करने क लिए बोल के सोने के लिए चला गया ,क्योंकि आगे बढ़ने के लिए 10 दिन का समय लगेगा। क्योंकि हम पहले ही लगभग 10-12 हजार फुट की ऊंचाई पर थे और बिना अभ्यास ऊपर नहीं जा सकते थे।

अगले दिन से सभी नए आए हुए अधिकारी एवं जवानों को एक जैसे ही अभ्यास से गुजरना था जिसमे बीपी,ईसीजी आदि ठीक होना जरूरी था ,हम सभी एक साथ चलने जाते थे ,फिर शाम को वालीबॉल आदि खेलते थे। श्री बदरीविशाल का मंदिर वह से लगभग 3 किलोमीटर दूरी पर था तो शाम को वहाँ भी जाते थे ,ऐसा लगभग 10 दिन चला और लगभग सभी लोगों को डॉक्टर ने आगे बढ़ने के लिए स्वस्थ घोषित कर दिया था। परंतु मुख्यालय से आदेश न मिलने की वजह से हमए कुछ और दिन वही रहना पड़ा। फिर सूचना मिली की हेमकुंड साहिब का गुरुद्वारा भी श्रद्धालुओं के लिए खोला जा रहा है एवं हमे वहाँ अलग से पहले दिन आमंत्रित किया गया है। इच्छुक जवानों को वहाँ दर्शन के लिए ले जाने की अनुमति मुख्यालय से मिलने के बाद पता चला कि एक रात पहले जनमास्टमी का कार्यक्रम बद्रीनाथ मंदिर में है। मैं रात को भोजन के उपरांत पैदल ही मंदिर चला गया ,कुछ अन्य

जवान भी वहाँ आए थे। रात 12.30 बजे हम वापस अपने ठिकाने पर पहुचे और सुबह 6 बजे दोबारा हेमकुंड साहिब के लिए निकले, गोविंद घाट पहुँच के हमने ऊपर के लिए चढ़ाई शुरू की ,और घाँघरिया होते हुए हेमकुंड साहिब पहुचे लगभग 1 बज गए थे। वहाँ बर्फीले कुंड मे स्नान कर सारी थकावट मित गई ,वह हमारे जवानों द्वारा रास्ते खोलने मे जो योगदान दिया गया उसके लिए हमारा धन्यवाद दिया गया एवं हम लोग कुछ देर गुरुद्वारा मे बैठने के उपरांत लंगर में खा कर नीचे की ओर बढ़े। वापसी मे मेरा मन हेलिकाप्टर मे बैठने का हुआ जो घाँघरिया से जाता था, कुछ लोग घाँघरिया से आगे बढ़ चुके थे इसलिए हुमने सबको बोला सब गोविंद घाट पे मिलेंगे और वह से माना की तरफ एक साथ जाएंगे। सबके निकलने के बहुत देर बाद हेलिकाप्टर में बैठने का मौका मिला ,वह यात्रा भी यादगार और सुखद रही। गोविंद घाट से सबको ले कर हम फिर माना आ गए थे ,अभी भी आगे बढ़ने का आदेश नहीं था।

सभी को व्यस्त रखने के लिए व्यायाम ,कभी पहाड़ी पे चढ़ाई कभी खेलकुद चलता रहता था ,आस पास की सभी पहाड़ियों की चोटी तक हमारे जवान जा चुके थे। फिर हमें आदेश मिला की हुमए अपने साथ कुछ बड़ी मशीन भी रट्टकोणा तक ले जाना है ,उसकी तैयारी शुरू कर लें। मुख्यालय का आदेश मान कर अगले दिन एक गाड़ी एवं उसमे एक सरदार साहब एवं एक जवान ले कर हम ऊपर की ओर बढ़ चले वहाँ रास्ते की चौड़ाई ,पुल की क्षमता सँकरे मोड आदि को अपने नक्शे पर दर्शाते हुए पूरे रास्ते की जांच कर ली। अभी भी टुकड़ी को ले कर ऊपर बढ़ने के आदेश नहीं थे वापस आ कर फिर से वही व्यायाम,खेलकुद,एवं जवानों की पढ़ाई लिखाई करवाना फिर रात को कभी कभी बड़ाखाना होता था। हम लगभग रोज बद्रीनाथ मंदिर जाते थे और रोज प्रार्थना करते थे की अब हमे आगे जाने की अनुमति मिले लेकिन वो कहते है हर चीज का समय होता है ,और वह समय अभी आया नहीं था लगभग एक महीने हो चुके थे हम आदेश का इंतज़ार कर रहे थे। वहाँ मोबाईल का नेटवर्क बहुत कम था और इंटरनेट तो मंदिर के आसपास ही आता था ,ऊपर जाते ही नेटवर्क बिल्कुल बंद होने वाला था पर अब हम वहाँ जाना चाहते थे जिससे दिया गया काम कर जल्द वापस आ सकें। फिर जुलाई में हमे जाने का आदेश मिला और हम बाबा बदरी विशाल का जैकारा लगा कर अपने अगले पाड़ाओ घसतोली की ओर चल दिए जहां हमे 5 दिन बिताने थे और शारीरिक एवं चिकित्सा जांच में पास होने पर ही ऊपर जाने को मिलेगा ,वहाँ ठंड अधिक थी एवं हवा मे आक्सिजन की कमी भी थी। पानी बाल्टी में ही जम जाता था ,आधे दिन बादल एवं धुंध से ढका रहता था ,वो कहानी कभी और..... ।

****

आयाम

श्रीमती स्मृति त्रिपाठी, पत्नी : मेजर अनुराग द्विवेदी
उप-अधीक्षण सर्वेक्षक (पूर्ववर्ती)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

कभी-कभी जिंदगी की कशमकश में
खो जाती हूँ मैं
गुम हो जाता है कही
मेरा अस्तित्व

इसके स्याह अँधेरों में ,
है गूंजती है हर तरफ
मेरे अंतर्मन की आवाज
क्या है मेरा अस्तित्व ?
क्या है मेरी पहचान ?

हुआ मुझे आभास
खुद से मै कितनी अनजान
जिंदगी के रास्तों में
मेरे पीछे दौड़ती स्याह रात
और चारों ओर फैला रेगिस्तान
धुंधली सी मंजिल.
ढेर सारे भटकाव !!

हर उजली सुबह
सूरज की किरणों में
समेट कर लाती है

एक उम्मीद
कि शायद आज
भविष्य के रास्तों से
छँटे कुछ धुन्ध
शायद आज बढ़ा सकूँ
सिर्फ एक कदम
अपनी मंजिल की तरफ
पर ....
ढलती शाम के साथ ढलते मेरे अरमाँ
बोझिल मन, घुटती हुयी सांसे

पल-पल रंगती जिंदगी
और दम तोड़ती कोशिशें
निराश करती है मुझे.....
पर वक्त गुजारिश करता है
कि थामे रहूँ विश्वास
का दामन
ताकि दे पाऊँ अपने
जीवन को
"नया आयाम"
जीवन को
कभी-न-कभी
एक
"नया आयाम"

लिप्यंतरण और भारत की अखंडता

श्री किंशुक बरण राउत, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

भारत, भारतीय उपमहाद्वीप मे एक ऐसा देश है जिसमे विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का समागम है। वैसे तो यहां 22 मान्यता प्राप्त भाषाएं हैं, लेकिन इस देश के लोग लगभग 122 भाषाओं और 270 बोलियों का उपयोग करते हैं। भारत के संविधान के अंतर्गत यह निर्णय लिया गया था कि दो भाषाएँ अंग्रेजी और हिंदी 15 वर्षों तक भारत की राज भाषा होंगी और उसके बाद हिंदी भारत की आधिकारिक और राष्ट्रीय भाषा होगी। हालाँकि, दुर्भाग्य से कुछ क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के कड़े विरोध के कारण यह संभव नहीं हो सका और भारतमे अभी भी दो आधिकारिक भाषाओं जारी है। भारत का कोई राष्ट्रीय भाषा नहीं है, और न्यायिक प्रणाली में केवल अंग्रेजी ही आधिकारिक भाषा है। अनुच्छेद 343(i) के अंतर्गत यह तय किया गया है कि विधायिका का उपयोग द्वारा अन्य महत्वपूर्ण संचार में हिंदी का उपयोग करने के लिए किया जाएगा। सरकार हर संभव लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बनाए रखते हुए सभी प्रकार के संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग करने के निरंतर प्रयास में है। मुख्यधारा से अलग होने की प्रवृत्ति रखने वालों, हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों के वर्चस्व के डर से हिंदी का विरोध करने का एक बहाना है। यह भी आशंका है कि भारत के कुछ दक्षिणी और पूर्वी राज्यों के लोगों को हिंदी शब्दों की व्याख्या करने में ग़लतफ़हमी और कठिनाई होगी। बंगाली जैसे कुछ नैतिक समूह हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने से कतराते हैं क्योंकि उन्हें इस बात पर गर्व है कि उनका समूह नैतिक समूह के रूप में दुनिया का 7वां सबसे बड़ा समूह है। उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त भाव बिनिमय में अवरोध , हिंदी को भारत की एकल आधिकारिक भाषा या राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार न किए जाने का सबसे महत्वपूर्ण कारण है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके सॉफ्टवेयर विकास में प्रगति अब इस समस्या का समाधान देने में एक शक्तिशाली उपकरण है। देवनागरी भारत का पहला अल-संचालित अनुवाद मंच है जिसका उपयोग भारत की 22 भाषाओं में से किसी भी भाषा का किसी अन्य भाषा में अनुवाद करने के लिए किया जाता था। इसके उपादेयायता और सराहना को देखते हुए अन्य एप्लिकेशन प्रोग्राम भी विभिन्न कंपनियों द्वारा विकसित किए गए हैं। Google Translate किसी भी भारतीय भाषा को किसी अन्य भारतीय भाषा में अनुवाद करने के लिए सबसे शक्तिशाली ऐप में से एक है। इससे भारतीयों को इस प्रस्ताव से सहमत होने में काफी मदद मिलेगी कि हिंदी को केवल आधिकारिक भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि इससे उनकी क्षेत्रीय भाषा या अंग्रेजी में अनुवाद करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। यह ऐप भारत के सभी लोगों को उनकी धारणा, सोच और विचारों के और करीब लाएगा क्योंकि आपस में भाषा की कोई बाधा या अवरोध नहीं होगी।

धीरे-धीरे लोग किसी भाषा को थोपे जाने का बहाना लेकर मुख्यधारा से अलग होने की बात भूल जायेंगे। राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता अब भारत का अखंडता को खतरे में डालने के लिए लोगों की भावनाओं से छेड़छाड़ नहीं कर सकेगी। हमारे प्रोग्रामर किन्हीं दो नैतिक समूहों के बीच आसान और सीधा संचार स्थापित करने के लिए अधिक शक्तिशाली उपकरण प्रदान करने के निरंतर प्रयास में हैं। Google Assistant अब एक अन्य ऐप है जो किसी भी अन्य भाषा से

निकली किसी भी जानकारी को खोजने के लिए किसी भी भाषा में उच्चारण का उपयोग करता है। अब वह दिन दूर नहीं जब हमें ऐसा मोबाइल ऐप मिल जाएगा जहां दो नैतिक समूहों के लोग अपनी-अपनी भाषा में आपस में मौखिक संवाद कर सकें। अगर हम इतिहास में जाएँ तो भाषा के लिए बड़ी लड़ाइयाँ हुईं। आज़ादी के बाद के दौर में हमारे बीच भाषाओं का वर्चस्व स्थापित करने की होड़ मची हुई है। उड़िया जैसे कई नैतिक समूहों ने स्वतंत्रता पाने के लिए संघर्ष किया या अन्य प्रशासनिक हिस्से से अलग होने की कोशिश की क्योंकि उन्हें लगा कि उनकी मातृभाषा को समकक्षों भाषावित और उन भाषा ब्यवहारकारिओं द्वारा दबा दिया गया है। यह एक बड़ी सांत्वना है कि भारत इस समस्या से बाहर निकलने जा रहा है और यह सॉफ्टवेयर इंजीनियरों और सूचना प्रौद्योगिकी और विशेष रूप से लिप्यंतरण ऐप्स के प्रयासों के कारण संभव हुआ है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जहां नेता लोगों की भावनाओं से डरते हैं, वहां अब धीरे-धीरे भारत की अखंडता को प्रभावित किए बिना हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में उपयोग करने का निर्णय लेने के लिए भारत सरकार को स्वतंत्र और अनुकूल परिबेश मिल रही है। इसलिए अगर हम कहें कि लिप्यंतरण ऐप्स भारत के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

अद्भुत न्याय

श्री काली प्रसाद मिश्र, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

त्रेता युग की बात है भगवान राम का शासन था। शेर बकरी सभी एक साथ एक ही घाट पर पानी पीते थे।

पिता के सामने पुत्र की मृत्यु नहीं होती थी। शासन व्यवस्था बहुत सुचारू रूप से चल रही थी , भगवान राम, लक्ष्मण, भारत, शत्रुघ्न चारों दिशाओं का अवलोकन कर रहे थे। किसी को किसी प्रकार का कष्ट न था समय पर सब रितुये आती। चारों तरफ अमन चैन था। सभी लोग सुख शांति पूर्वक जीवन बिता रहे थे। परंतु एक दिन राज्यसभा में एक अद्भुत घटना घटी। जिस समय राज दरबार खचोखच भरा हुआ था। सभी को उचित न्याय मिलता और सभी संतुष्ट हो रहे थे क्योंकि भगवान राम के दरबार में सभी लोग बराबर थे। जब दरबार में कोई भी आरोपी ना रह गया तो तो भगवान राम बोले की अगर किसी को कुछ कहना है तो कह और मैं दरबार खत्म कर रहा हूं। श्री राम लक्ष्मण को बोल की जो देखा अगर कोई बाहर में हो तो उसे बुला लो। लक्ष्मण जी बाहर गए तो देखते है की एक एक स्वान स्वान बाहर में बैठा हुआ है और अपने बुलाए जाने की प्रतीक्षा कर रहा है। लक्ष्मण जी ने उससे पूछा की क्या तुम्हें कोई फरियाद करना है। स्वान ने कहा महाराज हमें भगवान राम से मिलना है परंतु राज दरबार तथा शास्त्र के नियमों के अनुसार मैं अंदर नहीं जा सकता आप जाइए और महाराज से पूछिए की मैं अपना तकलीफ आपसे कैसे फरियाद करूं,जबकि मैं अंदर आ ही नहीं सकता, लक्ष्मण जी अंदर गए और भगवान राम से कहे की भगवान एक सामान बाहर में बैठा अपने फरियाद की प्रतीक्षा कर रहा है। भगवान राम ने कहा की जाओ उसे अंदर बुला लाओ। लक्ष्मण जी बोले भगवान वह कहता है की शास्त्र के नियम के अनुसार मैं प्रभु के सामने राज दरबार में आने के योग नहीं हूं क्योंकि मैं एक अछूत हूं भगवान ने कहा जो उसे कहो कि मैं बुला रहा हूं लक्ष्मण जी गए और उसे किसी तरह समझ कर राज दरबार में लाए। जब स्वान प्रभु के सामने आया तो उसने प्रभु से अपने कष्ट के बारे में फरियाद के लिए आज्ञा मांगी प्रभु ने उसे आश्वासन दिया की तुम निर्भीक होकर अपना कष्ट कहो तब स्वामी कहा भगवान मैं रास्ते

पर बैठा हुआ था उधर से एक ब्राह्मण देवता जा रहे थे उन्होंने हमारे सिर पर लाठी से प्रहार किया फल स्वरूप हमारा सर राहुल वहां हो गया और मैं दर्द से व्याकुल हूं प्रभु ने उससे कहा कि ब्राह्मण देवता कहां रहते हैं अगर तुम्हें मालूम हो तो मुझे बताओ स्वामी कहा महाराज अमुक गांव में रहते है। भगवान राम ने लक्ष्मण जी से कहा कि जो ब्राह्मण देवता को हमारे दरबार में हाजिर करो। ब्राह्मण देवताओं दरबार में लाया गया और प्रभु पूछा कि क्या आपने इस साल के सिर पर लाठी से प्रहार किया है तो क्यों इसका सटिक कारण बताइए अन्यथा आपको सजा दी जाएगी उसे समय का ऐसा कानून था की अगर कोई अपराध करता है तो अपराधी जो सजा रहेगा उसे माना जाता था और उसे इस तरह का सजा दी जाती थी ब्राह्मण ने कहा प्रभु या स्वामी रास्ते पर बैठा हुआ था और मैं इसके सिर पर प्रहार किया फल स्वरूप इसका सिर फट गया आपको जो उचित लगे उसे तरह का दंड हमें प्रदान करें प्रभु ने कहा स्वान तो रास्ते पर ही था आप ही बी रास्ते थे इसलिए आपको इसका सजा मिलेगा। प्रभु ने कहा है भैरव आप ही बताइए ब्राह्मण देवता को किस प्रकार का सजा दी जाए भैरव स्वान को भी कहते हैं। स्वान ने कहा प्रभु आप इसे आप कालिंजर का मठाधीश बना दीजिए प्रभु ने ऐसा ही किया और ब्राह्मण देवता को हाथी पर बैठकर गंतव्य स्थान पर भिजवा दिया अब दरबार में चर्चा होने लगी की ब्राह्मण देवता ने आपको प्रहार किया आपका सर फट गया आप पीड़ा से व्याकुल हैं परंतु आपने उसे महंत की पदवी प्रधान की इसका क्या कारण है तब स्वामी कहा गलती कुछ क्षमा करें। मैं पूर्व में मठाधीश था। इसलिए मैं चाहता हूं कि जिसने मुझे इतनी कष्ट दिए हैं वो भी अगली जन्म में स्वान के रूप में जन्म ले और मेरी तरह दर दर की ठोकर खाएं। तब उसे पता चलेगा की दूसरे को करने का क्या कष्ट होता है इस प्रकार भैरव ने अपनी कष्ट को प्रभु के सामने व्यक्त कर अपने मन को शांति दी प्रभु ने उसकी इच्छा पूर्ति की इस प्रकार भगवान राम के दरबार में सभी को समान न्याय मिलता था चाहे कोई छोटा हो चाहे कोई बड़ा सभी को सभी प्रकार का हक प्रधान था इसलिए उसे रामराज कहा जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमता व्यवहार में सतर्कता

श्री किंशुक बरण राउत, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

संगणक में कृत्रिम बुद्धि की नियोजन करके बिभिन्न एप्लीकेशन प्रोग्राम को नया आयाम देने केलिए अभी बिश्व में देशों और कम्पनिओं का होड़ लगा है। रोबो भी यही कुत्रिम बूधी की उपयोग करके तयारी किआ जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमता की प्रयोग मे मानब 1940 से अपना अनुसन्धान मे लगा है, और लगातार इसकी प्रयोग बिभिन्न क्षेत्र मे बढ़ता जा रहा है ।

शिल्प क्षेत्र में इसकी उपलब्धि सराहनीय है । उत्पाद बिश्लेषण, उत्पाद की कीमत में कमी, उत्पाद गुणबत्ता मे वृद्धि, ग्राहक सेवा, उत्तम ग्राहक ढूंढना, ग्राहकों का पसंदीदा सामान के बारे मे उनको सूचित करना आदि काम मे कृत्रिम बुद्धि की प्रयोग करके मानव अभूतपूर्व लाभदायक स्थिति मे है लेकिन इसमे सतर्कता की आवश्यकता बढ़ गया है कारण यह सब कार्य मे नियुक्त मानव अभी बेरोजगार हो रहे हैं । यह बेरोजगारी अर्थनीति में प्रभाबी असर डालेगा जिसकी वजह से शिल्प जगत को भी काफी नुकसान सहना पड़ेगा । शिल्प के प्रगति के साथ मानव के सेवा मे यह कैसे बेहतर भूमिका निभाएगा यह भी विश्व बुद्धिजीवियों को सोचना चाहिए ।

प्रतिरक्षा क्षेत्र मे विकशित देशों ने इसकी प्रयोग स्वयंचलित युधास्त्र, रोबोट, मनावरहित ड्रोन आदि में कर रहे हैं। सॉफ्टवेयर से सुसज्जित यह युद्ध उपकरणों स्वयं नीति निर्धारण का क्षमता रखते हैं । वे अपने परिवेश से प्राप्त अनुभव के अनुसार निर्णय लेते हैं। विकशित देश इसके० प्रयोग से युद्ध में अपनी सेना का सुरक्षा के साथ प्रतिपक्ष सेना मे भारी क्षति पहुंचाते हैं और रणनीतिक लाभ प्राप्त करते हैं । कृत्रिम बुद्धि की प्रयोग जो की सॉफ्टवेर माध्यम से होता है और वे प्रतिपक्ष द्वारा बिकृत भी किया जा सकता है । ऐसा नौबत आया तो अपना यन्त्र कर्कट कोष की तरह प्रतिपक्ष को क्षति ना करके अपना देश और प्रतिरक्षा प्रणाली को ध्वस्त करने में लगेंगे । इस लिए बेहद सावधानी और सुरक्षा लेकर इसका उपयोग करना चाहिए । कोडिंग को कैसे डिकोडिंग नहीं किया जा सकता और किया गया तो वह कैसे तुरंत पता चल जायेगा इसका व्यवस्था होना चाहिए अन्यथा इसकी प्रयोग आत्मघाती हो सकता है।

अर्थनैतिक संस्था में कुत्रिम बुद्धि के प्रयोग से ऑनलाइन बैंकिंग की सुबिधा में काफी सुधार हुआ है । ग्राहककों इससे बहुत सुबिधा मिला है। लेखामे त्वरित उद्घातीकरण, त्वरित धनराशी स्थानांतरण और सब प्रकार गणना करना अभी तुरंत और अपने आप हो जाता है। सब सुबिधा होते हुए भी कभी कभी इसमे मानव हस्तक्षेप की जरुरत पड़ता है और कम कर्मचारी होने की वजहसे तदारख पद्धती में कर्मचारिओं के ऊपर बहुत बोझ पड़ता है । यह प्रयोग के बात बैंकिंग क्षेत्रमें नियुक्ति की भारी कटौती हुई है जिससे लोकसमूह का क्रयशक्ति में ह्रास हो रही है । अर्थनीति ऊपर इसकी नतीजें उल्टा पडनेका बहुत सम्भाबना है। इसलिए कुत्रिम बुधी सहित रोजगार और नियुक्ति के नया दिशा को खोजना आवश्यक है । अभी अन लाईन बैंकिंग में धोखाधाड़ी बहुत हो रहा है कोड को डिकोड करके लोगों के धनराशी को घोटाला करनेवाले ले जाते हैं, जिसकी सुरक्षा करना अति आवश्यक है । घोटाला और धोखाधड़ी को रोकने केलिए कुत्रिम बुधी का सतर्कता के साथ अच्छा उपयाग हो सकता है । केवल चेतावनी नहीं, परन्तु ऐसा प्रणाली डेटाबेस के साथ विकास किआ जा सकता है, जिस के द्वारा ग्राहक को घोटाला बालों से संपर्क करने से प्रतिबंधित किआ जा सकता है । इस बिषय में अधिक शोध की आवश्यकता है।

मनोरंजन, शिक्षा, शोध, स्वास्थ्य, अंतरिक्ष विज्ञान आदि क्षेत्र मे कुत्रिम बुधी उल्लेखनीय साफल्य प्राप्त किआ है और इसकी प्रोयाग दिनोदिन बढ़ रहा है । इसकी वजह से आज सभी क्षेत्र मे अग्रगति के त्वरण अति मात्रा में ब्रिद्धी हुई है । जहाँ जीवन और अर्थ की हानी की सम्भाबना है , वहां इसकी प्रोयोग में त्रुटी को परखने में अति सतर्कता की आवश्यकता है । इसकी उपयोग में मानव नैतिकता को हमेसा सामिल करना चाहिए ताकि कभी किसीने इसकी कोडिंग को छेड़खानी करने की कोसिस करें तो एक सुचिंतित और सुव्यवस्थित प्रणाली के द्वारा उसको नाकारा जा सके । सुचना और ज्ञान की प्रसारण में इसकी प्रयोग होने का समय यह व्यवस्था अनेक ग्राहकों का साथ सम्बन्ध बनता है, इसलिए इसकी सुरक्षा व्यवस्था ऐसा होना चाहिए की कुछ भी गलत सूचना को ग्रहण करने की समय व्यवस्था अपने डेटाबेस को मजभुत रखें और एक निश्चित अंतराल में इसकी समीक्षा हो सकें । मानव के तरह विवेचना करना यद्यपि बहुत कठिन व्यवस्था है, लेकिन हमारे वैज्ञानिकों के प्रयास प्रशंसनीय है । आगामी समयमे इसकी ब्यवहार और सतर्कता के साथ किआ जाना चाहिए ताकि यह हमेसा मानव का सेवा करता रहे और मानव कभी इसकी दास ना बन जाए ।

आँखें

श्री अभय कुमार मिश्रा
सुपुत्रः श्री काली प्रसाद मिश्रा, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

आँखें अक्सर धोखा दे जाती आँखों से ही शर्म, लाज, झूठ, सच का पता चल जाता ,
कभी मेरी बात से मुकर के, मुझे एक मौका दे जाती है कि मैं अडिग रहूँ ,
अपने सच पर अडिग रहू,
जो साथ देगी ,
भले फिर शर्म से झुक कर,
नम्र होकर भी दृढ़ता लिए,
उठकर गिरकर यह आँखें एक अनोखी अदा दे जाती
आँखें ही ऐसी होती है जिसमें विश्वास झलकता है ,
सही गलत का पता चलता है, हर कोई इसे परखता है इस अनजान,
अजब दुनिया में रोज क्या कोई मिल ही जाता है ,
पर उन कुछ आँखों को देख कर,
मेरा हर पल उठना गिरना, हर पल क्रोध और द्वेष से लेकर प्यार चिंता पागलपन तक
सब कुछ कह जाती है, यह दोनों फिर भी ख्वाब संजो के रह जाती है ,
कभी यह मुझे चल करके अंतर का भरोसा दे जाती है ,
यह आँखें अक्सर धोखा दे जाती।

पागला साधु का पागलामी

श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

ॐ गंगा गंत्री नाशिनी गंगे।
अपरूप शोभित चारोदिशा तरंगे ।।
प्रवहमान इस बंगे।
माते कलोकलो रवे धरित्री संगे ।।
शश्य श्यामला बंगे।
तटिनी तरंगे ।।
हरो हरो माता गंगे।
पवित्र सलिल अंगे ।।
ॐ नमः गंगायो नमः, ॐ धरित्रायो नमः, उम बसुदेवयो नमः।

गंगा नदी के तट पर छोटे छोटे बालक के साथ एक साधू बैठे थे जिन्हें सब पागला साधु कहते थे। वे गंगा की शुद्ध वायु का सेवन करते हुए मन की शांति का अनुभव करते हुए एक खुश मनोरम परिवेश एवं साथ ही साथ नदी का कलरव (शव्द) में खो जाते हुए, कुछ खोयी हुए पुरानी बातों में पश्चाताप के अनुभूति लेकर मश्गूल में डूबा हुआ एक शिक्षानवीश बीते दिन के चिंता करते हुए सब कुछ छोड़कर आत्मा से विलीन होकर ध्यान कर रहे थे। अचानक एक जिज्ञासु बालक के कुछ पूछने से उनका ध्यान भंग हो गया -

प्रथम बालक : दादाजी, आप जब रास्ते में जा रहे थे, तब आपके पीछे-पीछे कुत्ते जाते जा रहे थे। उस समय बहुत सारे लोग- "कुत्ते के साथ पागल जा रहे है" ... हो ...हो ...हो .... इस हँसी से आपको क्या गुस्सा नहीं आता ?

पा.सा. : तुम लोक सब तब सुनो, स्वर्ग में कौन-कौन गया।

दूसरा बालक : महाभारत में लिखा है, युधिष्टिर, दादाजी।

पा.सा. : विल्कुल सही बेटा, तुम ने तो सही बताया, लेकिन उनके साथ एक कुकुर भी गया था। इसलिए आज भी लोक कुकुर को प्रभु भक्त कहा जाता है, देखो बच्चो यदि तुम उनको खिलाओ और उसको देखभाल कारोगे तो कल वह तुमको देखभाल करेगा तुमको सहायता करेगा। केवल कुकुर नहीं पशु, पक्षी, खिलाओ। उसको नाराज न करो वो एकदिन तुम्हारा सहायता करेगा। जीव सेवा शिव सेवा है , पुण्य का काम होगा।

एक गाँव में एक राखाल हर रोज गाँव के तालाब के पास गोउ, महिष लेकर तृण खिलाने जाता था। उन को भी तालाब पर नहाने के लिए ले जाता था। पर एक दिन राखाल का तबियत खराप होने के कारण एक पेड़ के नीचे सो गया था। उस समय एक व्याघ्र आ गया। राखाल गहरी नीद में डूवा हुआ था। राखाल अचानक भयानक आवाज सुनकर नींद से जग गया और देखा व्याघ्र महाशय कुपोकात हो कर पड़ा था और एक जुट होकर गोउ एवं महिषदल उनकी हालत खराप कर डाला।

बच्चो पशु पक्षी को सहायता करो वो तुम्हारी रक्षा करेगी। साथ ही साथ पेड़-पौधा लगाओ देश बचाओ।

भविष्य के बारे में सोच

श्री काली प्रसाद मिश्र, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

बहुत समय पहले की बात है एक नगर में जो राजा रहता था । वह 10 साल के लिए ही होता था और उसके बाद राजा को नदी के दूसरे किनारे पर जो जंगल था उसी में छोड़ दिया जाता था ।राजा भूख प्यास इस जंगल में तड़प तड़प के मर जाता था अगर किसी कारण बस राजा उस पार से इस पार आता था तो नगर के लोग उसे मार देते थे ।इसी तरह यह रीति वर्षों से चली आ रही थी। अचानक वहां का राजा का देहांत हो जाता है और अब वह नगर बिना राजा के हो जाता है। इसी बीच एक गरीब व्यक्ति उसे नगर से निकला तो वहां के लोगों ने उसे पकड़ लिया और बताया कि आप हमारे नगर में प्रवेश करने वाले प्रथम व्यक्ति हैं तो आपको राजा बनना पड़ेगा और अगर नहीं बनते हैं तो आपको मार दिया जाएगा। उस गरीब व्यक्ति ने सोचा चलो मरने से अच्छा है की राजा ही बन जाए। तब उस व्यक्ति ने कहा मैं तो कुछ जानता नहीं हूं अगर राजा बन गया उसके बाद क्या होगा ।तब वहां का मंत्रीबोला की आपको 10 साल के लिए राजा बनाया जाता है 10 साल के बाद में आपको राजा का पद छोड़ना पड़ेगा, और आपको गाजे बाजे के साथ नदी के इस पार जंगल में छोड़ दिया जाएगा अगर आप वहां से भागने की कोशिश किया तो आपको मार दिया जाए वहां आपको ना खाना है ना रहने का कोई साधन है आप इस जंगल में तड़प तड़प के मर जाएंगे उसे गरीब व्यक्ति ने राजा बनना स्वीकार किया और राजा बनने की कुछ ही समय बाद जंगल के उसे पर एक महल बनने का आदेश दिया ,महल बनने लगा महल के चारों तरफ मकान बनने लगे मकान को भव्य तरीके से सजाया गया। खाने पीने की व्यवस्था सुचारू रूप से कर दी गई। जंगल को काटकर खेती करने योग्य भूमि बना दिया गया ।इस प्रकार राजा अपने कार्यकाल में ही वहां की व्यवस्था सुचारू रूप से कर दी ।अब इधर जिस नगर में राजा रहता था उस नगर का भी उसने खूब उन्नत की। प्रजा को किसी प्रकार की कस्ट ना थी। लोग खुशहाल थे। राजा बहुत ही नेक और ईमानदार था। वह प्रजा का बहुत ही ख्याल रखता था,जो जिस तरह का अपराध करता यूजीसी प्रकार का दंड दिया जाता था,प्रजा को किसी प्रकार की कष्ट न थी सभी लोग उसका गुणगान करते थे,और धीरे-धीरे करके 10 साल का समय करीब आ गया अब वहां के लोग उसपी राजा को छोड़ना नहीं चाहते थे उसके लिए सभी पागल जैसे हो गए परंतु नियम तो नियम होता है ,जब 10 साल का समय समय आगया तो उस राजा को गाड़ी से उतर कर नदी के उसे पर छोड़ दिया गया। राजा खुशी खुशी जंगल में चला गया और वहां सुख शांति और अमन चैन के साथ रहने लगा। यहां यहां के लोग सुसनेर लगे कि अगर हम लोग इस तरह का नियम नहीं बनाए होती तो कितना अच्छा होता और हम लोग इतने अच्छे राजा को नहीं गवाते।

अगर आप दूरदर्शिता से काम करेंगे तो आपको भविष्य में कभी भी तकलीफ ना होगी और आपके साथ जो लोग हैं उन्हें भी तकलीफ ना हो इसलिए हमेशा दुर्दशा से काम करे।

लौट आओ

श्रीमती स्मृति त्रिपाठी, पत्नी : मेजर अनुराग द्विवेदी
उप-अधीक्षण सर्वेक्षक (पूर्ववर्ती)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

हर स्याह रात्रि के बाद
होने वाली श्वेत सुबह
की तरह
'लौट आओ'
मेरी जिंदगी में

जला दो खुशी का वो दिया
और रोशन कर दो
मन का आँगन.....
जो तुम्हारे जाने के बाद से है
अंधेरे की गिरफ्त में,
शायद भूला दिये है
तुमने मेरे वो अहसास.

मेरी वो संवेदनाएँ
जो अब कागज के टुकड़े थे
उद्गार पिरोया करती है।
आज भी उसी राह पर
है इंतजार है तुम्हारा
वहाँ सब कुछ वैसा ही है,
आज भी बारिश वैसी
ही लगती है,
आज भी वैसी ही

खिलती है धूप,
पेड़ो की छांव में है
वही सुकून,
वैसी ही चलती है
हवायें ,
सिवाय इन आँखों के
जिनमें कही तुम्हारे वापस
लौटने की है
उम्मीद
और दूर-दूर तक फैली
तनहाई।
अब तुम्हारे सानिध्य
का स्थान
तुम्हारे इंतजार ने
ले लिया है
इसलिए व्यपित होकर
मन
बार-बार कहता है
'लौट आओ'।

घमंडी का सिर नीचा

श्रीमती नम्रता मिश्रा
बहु: श्री काली प्रसाद मिश्रा, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

यह घटना द्वापर युग की है।

जिस समय भगवान श्री कृष्ण द्वारका के राजा थे और चारों तरफ उन्हीं का बोलबाला था।उनकी 16108 रानियां थी। मगर पटरानियां केवल 8 ही थी। जिसमें जामवंती कुछ ज्यादा ही घमंडी थी। उसे अपने रूप पर बहुत ही घमंड था कि मुझसे सुंदर इस जहां पर कोई है ही नहीं।उधर चक्र सुदर्शन को भी घमंड हो गया था की मुझसे ताकतवर तो इस संसार में कोई है ही नहीं। इधर गरुण को भी अपनी चाल पर बहुत घमंड था की मुझसे तेज कोई चल ही नहीं सकता है ।इस प्रकार जब भगवान श्री कृष्णा ने देखा कि हमारे साथ में रहने वाले घमंडी हो गए हैं तो उनका घमंड चूर करना होगा।

इधर मंदराचल पर्वत पर पवन पुत्र हनुमान भगवान श्रीराम का जाप कर रहे थे। उन्हें अष्ट सिद्ध नव निधि का का वरदान प्राप्त था तथा चिरंजीवी होने के साथ, अजर अमर होने का वरदान जगत जननी मां सीता से प्राप्त था ।भगवान श्री राम भी उन्हें इस प्रकार का वरदान दे चुके थे।

जब भगवान श्री कृष्णा ने देखा कि हमारे सहगामी घमंडी हो गए हैं तो उन्हें उनका घमंड चूर करने के लिए उपाय सोचने लगे।

उन्हें पवन पुत्र हनुमान का ख्याल आया वे उनका ध्यान किये और क्या करना है बोल दिए। एक दिन चक्र सुदर्शन को बुलाकर कहा कि तुम द्वारका नगरी का रक्षा करना, कोई भी इस नगरी में ना घुस पाए। चक्र सुदर्शन को इस प्रकार का आदेश देकर अपनी गद्दी पर बैठ गए। जामवंती को बुलाया और कहा की,इधर मेरे साथ बैठ कर रहना। गरुण को बुलाकर कहा कि जो मंदराचल पर्वत पर जाओ पवन पुत्र हनुमान रहते है। उन्हें कहना की मैंने बुलाया है और अपने साथ लेकर आना। जब गरुण मंदराचल पर्वत पर पहुंचे तो उन्होंने देखा की पवन पुत्र हनुमान भगवान के नाम का जाप कर रहे है। गरुण बोले की आपको भगवान ने बुलाया है और अति शीघ्र आपको मेरे साथ चलना है यह भगवान का आदेश है। पवन पुत्र बोले तुम चलो मैं आता हूं ,कह कर ध्यान में बैठ गए। गरुण ने पुनह कहा की आप मेरी बात सुनते नहीं है जल्दी चले। जब बार-बार गरुण के कहने पर ही पवन पुत्र ने कहा कीतुम चलो मैं आता हूं । गरुड चल दिए। इधर जब पवन पुत्र द्वारका पहुंचे तो देखा की चक्र सुदर्शन का पहरा है ।पवनपुत्र ने चक्रसुदर्शन को अपने मुख में रख लिया। पवन पुत्र जब भगवान के पास पहुंचे तो देखा की एक सुंदरी भगवान के पास में बैठी है ।पवन पुत्र ने कहा प्रभु यह आपके साथ कौन बैठी है । जगत जननी मां कहां पर है।गरुड़ ने आकर देखा की पवन पुत्र तो मुझसे पहले पहुंच चुके हैं भगवान से पवन पुत्र ने कहा प्रभु आप सुरक्षा में कैसे-कैसे लोग को रखते हैं।

किस प्रकार भगवान ने जामवंती को जो घमंड था कि मुझे सुंदर कोई नहीं है उसे तोड़ा। गरुण को अपनी चाल पर घमंड था कि मुझे तेज कोई चल ही नहीं सकता उन्होंने भी देखा की पवन पुत्र मुझे पहले आ गए हैं। चक्र सुदर्शन को घमंड था की मुझे कोई जीत ही नहीं सकता।

इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने एक साथ तीनों का घमंड चूर-चूर कर दिया।

पहेलियां

श्री बंकिम चंद्र मिश्रा
सुपुत्र: श्री काली प्रसाद मिश्र, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

बैटरी से मैं चलता हूं
जेबो में मैं रहता हूं
सभी से बातें करता हूं हथेलियां पर मैं रहता हूं
दूसरों को चित्र दिखाता हूं
तो बताओ मैं कौन हूं।

उत्तर : मोबाइल

2 वर्षा मुझ से पीडरता है
सूरज से मैं अड़ जाता
हाथों से मैं चिपका रहता
तो बताओ मैं कौन हूं।

उत्तर : छाता

3 हर उम्र का मैं व्यायाम हूं कसरत नहीं पर मैं आविष्कार हूं
दूध, सब्जी ,पेपर सभी को मैं समय पर पहुंचाता हूं
पेट्रोल, डीजल,किरोसीन तेल को मैं ना खाता हूं
बच्चों का मैं चहेता हूं
तो मैं बताओ कौन हूं

उत्तर : साइकिल

4। पेड़ काटकर बनता हूं डिब्बी में मैं बंद रहता हूं
सिर है काला तन है गोरा
चुपचाप मैं जीता हूं
रगड़ो तो मैं जल जाता हूं
तो बताओ मैं कौनहूं

उत्तर : दियासलाई / माचिस

पुरी

सुश्री अंकिता सामन्त
सुपुत्री: श्री अशोकतरु सामन्त, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

अदृश्य को देखने और अज्ञात को जानने की मनुष्य की इच्छा शाश्वत है। और यह जिज्ञासा उसे बार-बार भ्रमण करने के लिए प्रेरित करती है, दुर्गम बर्फीली घाटियों से लेकर क्षितिज को विस्मित करने वाले नीले समुद्र और निर्जन रेगिस्तान या घने जंगलों तक।

अलग-अलग यात्राओं की अलग-अलग भावनाएँ होती हैं। लेकिन तीर्थयात्रा प्राचीन काल से ही मनुष्य के लिए एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। उस समय से लेकर आज तक लोग पुण्य प्राप्त करने के लिए विभिन्न तीर्थ स्थलों की ओर दौड़ते हैं। अगर तीर्थयात्रा के साथ साथ समुद्र की लहरें देखने को मिले तो व अच्छा लगता है।

ऐसे कई तीर्थस्थलों में से एक है बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित उड़ीसा राज्य में पुरी का श्रीजगन्नाथ धाम। चैतन्य देव के समय से ही पुरी, बंगालियों के लिए एक भावनात्मक स्थान रहा है। जहां समुद्रतट की खूबसूरती के साथ-साथ पुण्य भी मिलता है।

पुरी सनातन धर्म के प्रमुख चार धामों में से एक है। श्रीश्रीजगन्नाथ देव का निवास न केवल तीर्थस्थल है बल्कि पूरी समुद्रतट का सुरम्य सौंदर्य भी इस भ्रमनपीयसू को बार-बार आकर्षित करता है।

पहले इस स्थान का नाम पुरषोत्तम पुरी था। पुरषोत्तम अर्थात श्रीजगन्नाथदेब था, बाद में इस स्थान का नाम बदलकर पुरी कर दिया गया।

पुरी का जगन्नाथ मंदिर भारत के सबसे पुराने तीर्थ स्थानों में से एक है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण कार्य गंगा राजवंश के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ था। राजा चौथगंगा देव ने आरम्भ किया , फिर राजा अनंग भीम देव ने समाप्त किया।

मंदिर का निर्माण बाद में एक अन्य गंगा वंश के राजा द्वारा पूरा किया गया और गजवती वंश के राजाओं के शासनकाल के दौरान इसमें और संशोधन किए गए।

पुराण के अनुसार भगवान विष्णु श्रीजगन्नाथ के रूप में यहीं स्थापित हुए थे। पुरी का सबसे अच्छा आकर्षण रथ यात्रा है जो पूरी दुनिया में सबसे बड़ा रथ उत्सव है।

रथ यात्रा का पुन्यतिथि पर, जगन्नाथ देव अपने भाई और बहन के साथ रथ से अपनी मौसी के घर आते है, और सात दिनों के बाद विपरीत रथ वाले दिन वे अपने गृह यानी मूल मंदिर में लौट आए है।

अब आते हैं प्राकृतिक वर्णन पर, पूरी आने का अर्थ है दबेदर्शन के साथ साथ समुद्र दर्शन। अनंत की लहरदार लहरें, जिन्हें देखकर न सिर्फ आंखों को बल्कि मन को भी शांति मिलती है।

पुरी के समुद्र किनारे पर कई सारा समुद्र तट बने हुए हैं, जिनमें से सबसे पहला और प्रमुख है स्वर्गद्वार, स्वर्गद्वार यानी स्वर्ग का द्वारा। यह स्थान वास्तव में एक श्मशान भूमि है और हिंदू धर्म के अनुसार कहबत है यदि कोई मृत ब्यक्ति को ईहा दाह होता है हैं तो वे सीधे स्वर्ग जा सकते हैं।

पुरी मंदिर की तीन मूर्तियाँ यानी जगन्नाथदेब, बलराम, शुभद्रा का आदि मूर्तियाँ स्वर्गद्वार समुद्र तट पर पाया गिया था , इसलिए स्वर्गद्वार समुद्र तट पर स्नान करना बहुत पुण्य का काम है।

समुद्र तट पर सुबह का सूर्योदय एक सुंदर दृश्य होता है। जिसके बिना पुरी का भ्रमण अधूरा है, आख़िरकार यही कहा जा सकता है कि पूरी प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर और बंगालियों के भावनात्मक आकर्षण का केंद्र है, जहां आप एक बार जाने के बाद बार-बार जाना चाहते हैं।

चंद्रयान 3

श्री प्रलय कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

चंद्रयान-3 मिशन की चंद्रमा पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस प्रकार से भारत चंद्रमा की सतह तक पहुंचने वाला इतिहास का चौथा देश बन गया है और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया है। इसलिए हम आज चंद्रयान 3 पर निबंध में चंद्रयान 3 मिशन, समयरेखा, चंद्रयान 3 मिशन के मुख्य भाग, चंद्रयान 3 और चंद्रयान 2 में भिन्नता, चंद्रयान 3 का बजट, इसकी सफलता के पीछे के वैज्ञानिक, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग करने में चुनौतियां और दक्षिणी ध्रुव का महत्व के बारे में चर्चा करेंगे।

प्रस्तावना

चंद्रयान-3 मिशन चंद्रयान-2 के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और घूमने की भारत की क्षमता को प्रदर्शित करने का दूसरा प्रयास है। लैंडर, विक्रम और रोवर, प्रज्ञान को ले जाने वाले चंद्रयान-3 के लैंडर मॉड्यूल ने 23 अगस्त, 2023 को चंद्र दक्षिणी ध्रुव की सतह पर ऐतिहासिक सॉफ्ट लैंडिंग की। इस प्रकार, भारत सतह पर सॉफ्ट-लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ISRO ने 14 जुलाई 2023 को श्रीहरिकोटा से जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल मार्क III (LVM3) का उपयोग करके चंद्रयान -3 मिशन लॉन्च किया।

सॉफ्ट लैंडिंग और रोविंग की क्षमता के साथ-साथ चंद्रमा की सतह पर प्रयोगों को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से, चंद्रयान 3 मिशन का उद्देश्य अंतरिक्ष खोज और नवाचार में भारत की शक्ति को मजबूत करना है। अपने पूर्ववर्तियों (चंद्रयान-1 और चंद्रयान-2) की सफलता को जारी रखते हुए, चंद्रयान 3 मिशन ने भारत को विशिष्ट अंतरिक्ष क्लब में ला दिया है।

चंद्रयान 3 मिशन क्या है?

चंद्रयान 3 मिशन को LVM3 रॉकेट प्रणाली का उपयोग करके लॉन्च किया गया था। LVM3 इसरो का नया लॉन्च वाहन है जो लागत प्रभावी तरीके से मॉड्यूल को GTO (जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट) में स्थापित करने की क्षमता रखता है।

यह तीन चरणों वाला प्रक्षेपण यान है जिसमें दो ठोस स्ट्रैप चरण और एक कोर तरल चरण है। लॉन्चर, LVM3 M4, ने एकीकृत मॉड्यूल को लगभग आकार की 170 x 36500 किमी (एक जीटीओ) की एक अण्डाकार पार्किंग कक्षा में रखा गया।

चंद्रयान 3 मिशन की समयरेखा

- लॉन्च: 14 जुलाई, 2023
- चंद्र कक्षा में स्थापित: 05 अगस्त
- लैंडर मॉड्यूल को प्रोपल्शन मॉड्यूल से अलग करना: 17 अगस्त
- पहली डिबॉस्टिंग: 18 अगस्त

डीबूस्टिंग एक ऐसी कक्षा में अंतरिक्ष यान को धीमा करना है जहां पेरिल्यून (चंद्रमा का निकटतम बिंदु) 30 किमी है, और सबसे दूर बिंदु (अपोल्यून) दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र में लैंडिंग स्थल से 100 किमी दूर है। उचित लैंडिंग के लिए यह आवश्यक है क्योंकि उतरने के लिए आवश्यक गति लैंडर की तुलना में बहुत कम है।

- 20 अगस्त को दूसरी डिबॉस्टिंग
- 23 अगस्त को सॉफ्ट लैंडिंग

चंद्रमा पर लक्षित स्थल चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास लगभग 70 डिग्री दक्षिण में था।

यदि लैंडर सॉफ्ट लैंडिंग के प्रारंभ के लक्ष्य से चूक गया होता, तो उसे 1 महीने तक इंतजार करना पड़ता। यह लगभग 69.36° दक्षिण और 32.34° पूर्व (मैन्ज़िनस सी और सिम्पेलियस एन क्रेटर के बीच) पर उतरा।

- रोवर ने 24 अगस्त को अपनी खोज शुरू की थी।

चंद्रयान 3 मिशन के भाग

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ISRO ने 14 जुलाई 2023 को श्रीहरिकोटा से जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल मार्क III (LVM3) का उपयोग करके चंद्रयान -3 मिशन लॉन्च किया।

सॉफ्ट लैंडिंग और रोविंग की क्षमता के साथ-साथ चंद्रमा की सतह पर प्रयोगों को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से, चंद्रयान 3 मिशन का उद्देश्य अंतरिक्ष खोज और नवाचार में भारत की शक्ति को मजबूत करना है। अपने पूर्ववर्तियों (चंद्रयान-1 और चंद्रयान-2) की सफलता को जारी रखते हुए, चंद्रयान 3 मिशन ने भारत को विशिष्ट अंतरिक्ष क्लब में ला दिया है।

चंद्रयान 3 मिशन क्या है?

चंद्रयान 3 मिशन को LVM3 रॉकेट प्रणाली का उपयोग करके लॉन्च किया गया था। LVM3 इसरो का नया लॉन्च वाहन है जो लागत प्रभावी तरीके से मॉड्यूल को GTO (जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट) में स्थापित करने की क्षमता रखता है।

यह तीन चरणों वाला प्रक्षेपण यान है जिसमें दो ठोस स्ट्रैप चरण और एक कोर तरल चरण है। लॉन्चर, LVM3 M4, ने एकीकृत मॉड्यूल को लगभग आकार की 170 x 36500 किमी (एक जीटीओ) की एक अण्डाकार पार्किंग कक्षा में रखा गया।

चंद्रयान 3 मिशन की समयरेखा

- लॉन्च: 14 जुलाई, 2023
- चंद्र कक्षा में स्थापित: 05 अगस्त
- लैंडर मॉड्यूल को प्रोपल्शन मॉड्यूल से अलग करना: 17 अगस्त
- पहली डिबॉस्टिंग: 18 अगस्त

डीबूस्टिंग एक ऐसी कक्षा में अंतरिक्ष यान को धीमा करना है जहां पेरिल्यून (चंद्रमा का निकटतम बिंदु) 30 किमी है, और सबसे दूर बिंदु (अपोल्यून) दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र में लैंडिंग स्थल से 100 किमी दूर है। उचित लैंडिंग के लिए यह आवश्यक है क्योंकि उतरने के लिए आवश्यक गति लैंडर की तुलना में बहुत कम है।

- 20 अगस्त को दूसरी डिबॉस्टिंग
- 23 अगस्त को सॉफ्ट लैंडिंग

चंद्रमा पर लक्षित स्थल चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास लगभग 70 डिग्री दक्षिण में था।

यदि लैंडर सॉफ्ट लैंडिंग के प्रारंभ के लक्ष्य से चूक गया होता, तो उसे 1 महीने तक इंतजार करना पड़ता। यह लगभग 69.36° दक्षिण और 32.34° पूर्व (मैन्ज़िनस सी और सिम्पेलियस एन क्रेटर के बीच) पर उतरा।

- रोवर ने 24 अगस्त को अपनी खोज शुरू की थी।

चंद्रयान 3 मिशन के भाग

चंद्रयान-3 मिशन में दो मॉड्यूल शामिल हैं -
प्रोपल्शन मॉड्यूल (पीएम) और लैंडर मॉड्यूल (एलएम)।

दोनों मॉड्यूल का कुल वजन 3900 किलोग्राम (प्रोपल्शन मॉड्यूल-2148 किलोग्राम और लैंडर मॉड्यूल-1752 किलोग्राम, रोवर-26 किलोग्राम सहित) है।

प्रणोदन मॉड्यूल

प्रणोदन मॉड्यूल ने लैंडर और रोवर कॉन्फ़िगरेशन को 100 किमी चंद्र कक्षा तक पहुंचाया। लैंडर मॉड्यूल ले जाने के अलावा, इसमें एक वैज्ञानिक पेलोड भी है जिसे स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री ऑफ हैबिटेबल प्लैनेट अर्थ (SHAPE) कहा जाता है। SHAPE पेलोड चंद्र कक्षा से पृथ्वी का नवीन स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्रिक अध्ययन करेगा।
यह छोटे ग्रहों की तलाश करेगा जो परावर्तित प्रकाश में रहने योग्य हो सकते हैं।

लैंडर मॉड्यूल

लैंडर मॉड्यूल में एक लैंडर (विक्रम) और एक रोवर (प्रज्ञान) शामिल हैं। लैंडर मॉड्यूल ने स्वचालित लैंडिंग अनुक्रम (एएलएस) का उपयोग करके नरम लैंडिंग की, जहां लैंडर ने अपना इंजन (थ्रस्टर) शुरू किया और मॉड्यूल की गति और दिशा के साथ-साथ लैंडिंग साइट की स्थिति को भी नियंत्रित किया। ऐतिहासिक टचडाउन के बाद, इसके अंदर का रोवर अपने मिशन के दौरान चंद्र सतह का इन-सीटू रासायनिक विश्लेषण करने के लिए चंद्र सतह पर उतरा।
मिशन (लैंडर और रोवर) का कुल जीवनकाल चंद्र दिवस (पृथ्वी के 14 दिन) है। लैंडर और रोवर दोनों के पास चंद्र सतह पर प्रयोग करने के लिए वैज्ञानिक पेलोड हैं।

रोवर (प्रज्ञान)

यह छह पहियों वाला, 26 किलो का वाहन है जो चंद्र अनुसंधान में योगदान करते हुए, विविध माप आयोजित करता है।
यह मुख्य रूप से चंद्र सतह की संरचना, पानी की बर्फ की उपस्थिति, चंद्र प्रभाव इतिहास और वायुमंडल के विकास की जांच करता है।

चंद्रयान 3 और चंद्रयान 2 में भिन्नता

चंद्रयान-2 2019 में अपने मिशन के अंतिम चरण में विफल हो गया क्योंकि यह सॉफ्ट लैंडिंग हासिल नहीं कर सका। दुर्घटना का मुख्य मुद्दा यह था कि लैंडर पर लगे पांच थ्रस्टरों ने अपेक्षा से अधिक वेग विकसित किया था। साथ ही, लैंडिंग साइट को ठीक करने के लिए लैंडर को तस्वीरें भी लेनी पड़ीं।

इस सबने संचित त्रुटियाँ उत्पन्न कीं। पिछले अनुभवों से सीखते हुए, इसरो ने इस बार सफलता प्राप्त करने के लिए कुछ निम्न चीजों को शामिल किया था;

"सफलता-आधारित डिज़ाइन" के बजाय "विफलता-आधारित डिज़ाइन": विफलता-आधारित डिज़ाइन का मतलब है कि यदि सेंसर और इलेक्ट्रॉनिक्स सहित सब कुछ विफल हो गया होता, तब भी विक्रम ने सॉफ्ट लैंडिंग की होती। यह उन सभी संभावित परिदृश्यों की पहचान करने और उन्हें सुधारने के द्वारा किया गया था जो गलत हो सकते थे। इनमें इलेक्ट्रॉनिक्स की विफलता, इंजन की विफलता, लैंडिंग स्थल तक पहुंचने में असमर्थता, सेंसर की विफलता, एल्गोरिदम की विफलता, आवश्यकता से अधिक वेग आदि शामिल हैं।

लैंडिंग क्षेत्र में वृद्धि: चंद्रयान-3 का लक्ष्य क्षेत्र चंद्रयान-2 द्वारा लक्षित 500 मीटर x 500 मीटर के बजाय 4 किमी x 2.4 किमी क्षेत्र रखा गया था ताकि लैंडर के पास अपने दम पर सर्वोत्तम लक्ष्य स्थल चुनने के लिए अधिक विकल्प हों।

लैंडर को अधिक ईंधन: इसे लैंडर को लैंडिंग स्थल तक लंबी दूरी तय करने और, यदि आवश्यक हो, तो वैकल्पिक लैंडिंग स्थल तक जाने की सुविधा प्रदान करने के लिए रखा गया था।

चंद्रयान-2 ऑर्बिटर से मदद: चंद्रयान-3 मिशन में ऑर्बिटर नहीं है; यह चंद्रयान-2 ऑर्बिटर से उच्च-रिज़ॉल्यूशन छवियों का उपयोग कर रहा है। अधिक मजबूत एकीकृत शिल्प: चंद्रयान-3 के पेलोड का वजन चंद्रयान-2 से ज्यादा रखा गया था, सफल लैंडिंग के लिए ज्यादातर अतिरिक्त वजन लैंडर पर था। कोई केंद्रीय थ्रस्टर न होने से थ्रस्टरों की संख्या पांच से घटकर चार हो गई थी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे अधिक वेग से भी उतर सकें, लैंडर के पैरों को मजबूत बनाया गया। चंद्रमा पर मौसम की परवाह किए बिना सॉफ्ट लैंडिंग के बाद बिजली उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त सौर पैनलों का उपयोग

चंद्रयान 3 बजट

चंद्रयान 3 का बजट लगभग 615 करोड़ रुपये जो अन्य चंद्र मिशनों की तुलना में काफी कम है। ऑर्बिटर, लैंडर, रोवर, नेविगेशन और ग्राउंड नेटवर्क के साथ-साथ भारी रॉकेट सहित चंद्रयान 2 की लागत 978 करोड़ रुपये आंकी गई थी। चंद्रयान-1 चंद्रमा की कक्षा में जाने और उसे प्रभावित करने के लिए लॉन्च किया गया था। इसकी लागत 386 करोड़ रुपये (US$48 मिलियन) थी और इसे अक्टूबर 2008 में लॉन्च किया गया था।

चंद्रयान 3 की सफलता के पीछे वैज्ञानिक

पी वीरमुथुवेल: परियोजना निदेशक, पूर्व रेलवे कर्मचारी के बेटे, वीरमुथुवेल चंद्रयान-3 मिशन का नेतृत्व कर रहे हैं। उनके वैज्ञानिकों की टीम इसरो टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क सेंटर से अंतरिक्ष यान के स्वास्थ्य और संचालन की निगरानी करती है। उन्होंने महत्वपूर्ण कक्षा युद्धाभ्यासों की देखरेख की है और मिशन की सफलता के लिए अभिन्न अंग हैं।

बी एन रामकृष्णा: निदेशक, इस्ट्रैक के निदेशक के रूप में, रामकृष्ण गहरे अंतरिक्ष प्रयासों के लिए मिशन नियंत्रण का समन्वय करते हैं। चंद्रयान-3 के लिए, ISTRAC वैश्विक स्तर पर गहरे अंतरिक्ष नेटवर्क स्टेशनों के साथ सहयोग करता है। रामकृष्ण उपग्रहों का उपयोग करके नेविगेशन और कक्षा निर्धारण में कुशल हैं।

एम शंकरन: निदेशक, यू आर राव अंतरिक्ष केंद्र शंकरन ने यूआरएससी में चंद्रयान -3 अंतरिक्ष यान के निर्माण का नेतृत्व किया। उनका चंद्रयान 1 और 2 और मंगल ऑर्बिटर मिशन जैसे मिशनों में योगदान का इतिहास है। अंतरिक्ष यान विकास में शंकरन की विशेषज्ञता मिशन की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण रही है।

एस मोहना कुमार: मिशन निदेशक कुमार ने एलएमवी3 रॉकेट पर चंद्रयान-3 के सफल प्रक्षेपण का निर्देशन किया। वह तीन दशकों से अधिक के अनुभव के साथ इसरो के विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र में एक वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। उनके नेतृत्व ने सटीक उपग्रह प्रक्षेपण की स्थिति सुनिश्चित की।

वी नारायणन: निदेशक, तरल प्रणोदन प्रणाली केंद्र नारायणन की प्रणोदन प्रणाली और क्रायोजेनिक इंजन डिजाइन में विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है। उन्होंने चंद्रयान-3 के लिए प्रणोदन प्रणाली डिजाइन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके समर्पण ने सफल प्रक्षेपण में योगदान दिया।

चंद्रयान 3 मिशन का महत्व

भारत के चंद्रयान-3 मिशन का लक्ष्य देश के चंद्र अन्वेषण प्रयासों को जारी रखना और चंद्रयान-1 और 2 जैसे पिछले मिशनों की उपलब्धियों को आगे बढ़ाना है। यह उपक्रम निम्न कई कारणों से महत्वपूर्ण है:

भविष्य में चंद्र अन्वेषण: यह मिशन चंद्रमा पर मानव उपस्थिति स्थापित करने की भारत की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

उनके चंद्र ध्रुवीय अन्वेषण मिशन (LUPEX) या चंद्रयान -4, आदि के लिए JAXA (जापान एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी) के साथ सहयोग को इस मिशन की सफलता से लाभ होगा।

अंतरिक्ष शिक्षा को आगे बढ़ाना: यह मिशन भारत में अंतरिक्ष शिक्षा और वैज्ञानिक सोच को आगे बढ़ाने की दिशा में काम करेगा। यह वैज्ञानिक समुदाय के साथ-साथ अंतरिक्ष प्रेमियों की भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का काम कर सकता है।

चंद्र सतह अन्वेषण: चंद्रयान-2 ने चंद्रमा के परिदृश्य, खनिज और पानी जैसे विवरण प्रकट किए। चंद्रयान-3 के लैंडर और रोवर चंद्रमा के इतिहास को समझने के लिए चट्टानों और मिट्टी का अध्ययन कर रहे हैं, संभवतः क्षुद्रग्रह प्रभावों का खुलासा कर रहे हैं जिसके कारण सतह में परिवर्तन हुआ। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर ध्यान केंद्रित करते हुए, चंद्रयान-3 का उद्देश्य चंद्रमा के भूविज्ञान और संसाधनों में नई अंतर्दृष्टि का वादा करते हुए खनिज, भूमिगत विशेषताएं और पानी खोजना है।

वैज्ञानिक खोज: चंद्रयान-3 चंद्रमा के झटकों और भूमिगत गर्मी का अध्ययन करने के लिए उपकरण ले गया है। इसकी सतह पर सीस्मोमीटर चंद्रमा की आंतरिक और थर्मल जांच को दिखाते हैं, जिससे चंद्रमा के बारे में हमारे ज्ञान को सहायता मिलती है। यह चंद्र भूविज्ञान, संसाधनों और परिवेश पर भारत की पकड़ को मजबूत करेगा, आकाशीय पिंडों के बारे में अंतर्दृष्टि को गहरा करेगा। मिशन भूकंपीयता और तापीय विशेषताओं को समझने का प्रयास करता है, हमें चंद्रमा की आंतरिक कार्यप्रणाली और व्यापक ब्रह्मांडीय समझ के बारे में बताता है।

निजी निवेश को बढ़ावा: 2022 तक निजी रॉकेट लॉन्च और उपग्रह तैनाती की ऐतिहासिक वृद्धि के साथ भारत का फील्ड-टेक क्षेत्र निवेशकों के रडार पर है।

चंद्रयान 3 की उपलब्धि से निवेशकों का विश्वास बढ़ेगा और एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी परियोजनाओं में अधिक निजी निवेश आकर्षित होगा।

रोज़गार निर्माण: भारत के तेजी से बढ़ते एयरोस्पेस प्रौद्योगिकी क्षेत्र ने पहले ही सैकड़ों नौकरियां पैदा की हैं। सफल चंद्र मिशन और उसके बाद के कार्यक्रम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अतिरिक्त उच्च तकनीक वाले व्यावसायिक अवसर पैदा करने के लिए तैयार हैं।

स्टार्टअप को बढ़ावा: चंद्रयान-3 की सफलता एक प्रौद्योगिकी प्रदर्शन हो सकती है, जो वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय में भारत की साख को बढ़ाएगी।

यह वैश्विक बाजार के लिए अंतरिक्ष प्रणालियों को विकसित करने और विकसित करने के लिए भारतीय कंपनियों और स्टार्टअप के लिए संयुक्त उद्यम और व्यावसायिक अवसरों को आकर्षित कर सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को मजबूत बनाना: चंद्रयान-3 के सफल समापन से भारत चंद्रमा पर उतरने वाला, वैश्विक मान्यता अर्जित करने वाला और भारतीय कंपनियों द्वारा निर्मित अंतरिक्ष यान को लागत प्रभावी ढंग से अपनाने और इसकी विश्वसनीयता का प्रमाण देने वाला चौथा देश बन जाएगा।

इस उपलब्धि से उपयोगी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा मिल सकता है।

रणनीतिक स्थित निर्धारण: चंद्रयान-3 की सफलता भारत को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष दौड़ में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर सकती है, जो संभावित रूप से चीन के प्रभाव से मेल खा सकता है। रूस को आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ रहा है, ऐसे में भारत के लिए यह अपनी स्थिति मजबूत करने का एक अवसर है। आर्टेमिस समझौते के साथ, यह भारत के लगातार बढ़ते अंतरिक्ष पदचिह्न को बढ़ाएगा।

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव में लैंडिंग की चुनौतियां और महत्व

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग करने के दौरान होने वाली कठिनाइयां और महत्व निम्नलिखित है;

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने की चुनौतियाँ

चुनौतियाँ मुख्य रूप से कठिन भूभाग, अत्यधिक तापमान और स्थायी छाया वाले क्षेत्रों के कारण हैं। चंद्र भूमध्य रेखा के पास उतरने वाले पिछले अंतरिक्ष यान के विपरीत, दक्षिणी ध्रुव अपने ऊबड़-खाबड़ परिदृश्य, अत्यधिक ठंड और ऐसे क्षेत्रों के कारण अधिक कठिनाइयाँ प्रस्तुत करता है जहाँ कभी सूर्य का प्रकाश नहीं मिलता है।

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की खोज का महत्व

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की खोज का निम्न महत्व है:

जल संसाधन: माना जाता है कि दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में महत्वपूर्ण मात्रा में पानी के अणु मौजूद हैं, जो संभावित रूप से छायादार गड्ढों में बर्फ के रूप में फंसे हुए हैं। भविष्य के मानव मिशनों की योजना बनाने और चंद्र संसाधनों के उपयोग के लिए पानी की उपस्थिति की पुष्टि करना महत्वपूर्ण है।

वैज्ञानिक खोजें: कठोर वातावरण और स्थायी रूप से छाया वाले क्षेत्रों का अस्तित्व चंद्रमा के इतिहास और प्रारंभिक सौर मंडल में एक अनूठा द्वार प्रदान करता है। इस क्षेत्र का अध्ययन करने से खगोलीय पिंडों की उत्पत्ति और विकास के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिल सकती है।

पृथ्वी के इतिहास के सुराग: ऐसा माना जाता है कि चंद्रमा का निर्माण मंगल ग्रह के आकार की वस्तु और प्रारंभिक पृथ्वी के बीच हुए भारी टकराव के मलबे से हुआ है। चंद्र दक्षिणी ध्रुव की खोज इस महत्वपूर्ण घटना के दौरान मौजूद सामग्रियों और स्थितियों पर प्रकाश डाल सकती है।

वैश्विक सहयोग: इसरो और नासा के बीच सफल सहयोग ने पहले चंद्रमा पर पानी की उपस्थिति की पुष्टि की है। इंडो-जापान LUPEX मिशन जैसी साझेदारियों का उद्देश्य 2024 तक लैंडर और रोवर भेजने की योजना के साथ दक्षिणी ध्रुव का और अधिक पता लगाना है।

तकनीकी प्रगति: चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर मिशन चलाने से इसरो को नवीन प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और प्रदर्शित करने की अनुमति मिलती है। इसमें सॉफ्ट लैंडिंग तकनीक, नेविगेशन सिस्टम, संसाधन उपयोग और लंबी अवधि के संचालन में प्रगति शामिल है जिसका भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों में व्यापक अनुप्रयोग हो सकता है।

निष्कर्ष

चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग उस अन्वेषण और नवाचार की भावना का प्रतीक है जो इसरो का प्रतीक है। उन्नत प्रौद्योगिकी और एक दृढ़ टीम द्वारा संचालित मिशन की उपलब्धियाँ, चंद्रमा के रहस्यों के बारे में हमारी समझ को गहरा करती हैं और आगे के चंद्र अन्वेषण का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

चंद्रयान-3 की जीत ने अंतरिक्ष अन्वेषण के वैश्विक मानचित्र पर भारत की स्थिति को मजबूत किया है और चंद्रमा के रहस्यमय इतिहास को जानने के लिए नए रास्ते खोले हैं।

अद्भुत चमत्कार

श्री अरविंद कुमार मिश्रा
सुपुत्र: श्री काली प्रसाद मिश्र, सर्वेक्षण सहायक (सेवानिवृत)
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

यह घटना बरसों पुरानी है। उसे समय यातायात के इतने साधन न थे। कोई भी मनुष्य किसी भी तीर्थ स्थान पर जाने के लिए सौ बार सोचता था ,और एक ग्रुप में ही चलता था ।आप लोगों ने सुना होगा की चारों धाम की यात्रा में लोग एक साथ में निकलते थे या ग्रुप में निकलते थे ।इस समय की घटना है जब चारो तरफ जंगल था, हिंसक जानवरो का बोल बाला था उस समय एक आदमी जो शिव का भक्त था जो की देवों के देव महादेव कहे जाते हैं ।वह केदारनाथ धाम की यात्रा के लिए निकला ।महीनो चलने के बाद जब वह केदारनाथ धाम पहुंचा तो थक कर कर चूर था। उसके पैर फट चुके थे कपड़े तार तार थे किसी तरह गिरते पड़ते वो प्रभु के पास पहुंचा।लेकिन प्रभु का दरवाजा /फाटक बंद होने जा रहा था ।केदारनाथ धाम की मान्यता है की 6 महीना दरवाजा बंद रहता हैऔरत 6 महीना दरवाजा खुला रहता है ।वहां के महंत दरवाजा बंद करने वाले थे। इस मनुष्य ने बहुत विनती की, गिड़गिड़ाया पैर पकड़ ,कहा की प्रभु का एक बार झलक मुझे दिखला दीजिए मैं चला जाऊंगा ।वहां के महंत किसी प्रकार से नहीं माने उनका दिल नहीं पसीजा और कहे कि अब तो 6 महीने के बाद हीआना ।तब प्रभु का दर्शन होगा। वे लोग दरवाजा बंद करके चले गए।

मनुष्य रोता रहा, रोते रोते बेहोश हो गया।वह वही पड़ा हुआ था, जब उसकी आंख खुली तो संध्या हो चुकी और उसने देखा कि लंबा चौड़ा व्यक्ति हाथ में त्रिशूल लिए,सिर पर एक बड़ा सा जुड़ा था, केश लगभग खुला हुवा था। उस व्यक्ति के पास में आया और कहा बेटा तुम यहां क्यों पड़े हुए हो। अब तो 6 महीना के बाद ही यह फाटक खुलेगा ।6 महीने के बाद मेंआना फिर प्रभु का दर्शन होगा ।उसने कहा बाबा मैं बहुत दूर से आया हूं मैंने महंतजी से बहुत विनती की और कहा कि आप एक बार केवल प्रभु का दर्शन कर लेने दीजिए और मुझे कुछ नहीं चाहिए। केवल प्रभु का दर्शन करना था उसे साधु ने कहा। बेटा अब तो कुछ हो नहीं सकता है तुम बहुत देर से आए हो खैर आ ही गए हो तो रहो यहां जब सुबह दरवाजा खुलेगा तो दर्शन कर लेना। वह व्यक्ति रोता रहा बाबा के पैर पकड़, बाबा से गिर गिराया बाबा एक बार दर्शन हो जाता तो ठीक था ।बाबा ने कहा घबराओ नहीं ,सुबह दर्शन हो जाएगी और तुम्हें तो भूख लगी होगी। वह व्यक्ति गया कुछ फल फूल ले आया खाने को दिया और कहा की बेटा खा लो, सुबह भगवान का दर्शन हो जाएगा और उस व्यक्ति ने फल को खाया। फिर बाबा से बहुत देर तक बात चीत हुई। बाबा ने कहा की अब सो जाओ, रात बहुत हो की है।वह व्यक्ति सो गया। सुबह गाजे बाजों की आवाज सुन कर उसकी नींद खुली तो देखता है की महंत जी आ रहे है। तब उस व्यक्ति ने महंतजी से कहा की आपने तो कहा था की मैं 6 महीने बाद आऊंगा लेकिन आप तो सुबह ही आ गए। महंत जी ने अपने दिमाग पर जोर दिया तो उन्हे याद आया की ये तो वही व्यक्ति है जो 6 महीने पीछे फाटक खोलने की जिद कर रहा था। तब महंत जी ने कहा कि तुम 6 महीने क्या यही पड़े हुए थे उसे व्यक्ति ने कहा महंत जी मैं तो 6 महीने कहां था मैं तो रात ही में आया सुबह आप चले आए महंत जी बहुत सोच बीचारे तब उन्हें एहसास हुआ की प्रभु ने समय के कालचक्र को कैसे रोक दिया और 6 महीने का समय रात भर में ही खत्म हो गया ।महंत जी बोले आप बहुत महान हैं मैं इतने दिनों से यहां प्रभू का सेवा कर रहा हूं , परंतु प्रभु का दर्शन नहीं हुआ और इतना कह कर महंत जी उसके पैर पकड़ लिए कहे आप धन्य हैं मैंने बहुत बड़ा भूल किया कि आपके दर्शन न होने दी ।देवों के देव महादेव आप धन्य है आप से बढ़कर कोई नहीं है। आप जो चाहे सो

कर सकते हैं ।जब 6 महीने का समय रात भर में ही खत्म हो गया और उसके आगे कुछ कहना नहीं है। हे प्रभु आप धन्य है धन्य है धन्य है और उस व्यक्ति ने अपनी पूरी कहानी महंत जी को सुनाई। महंत जी रोने लगे रोते रहते उनकी आंखें लाल हो गई और कहे भाई आप महान है ,जो कि प्रभु के दर्शन हुए आप धन्य है धन्य है धन्यवाद।

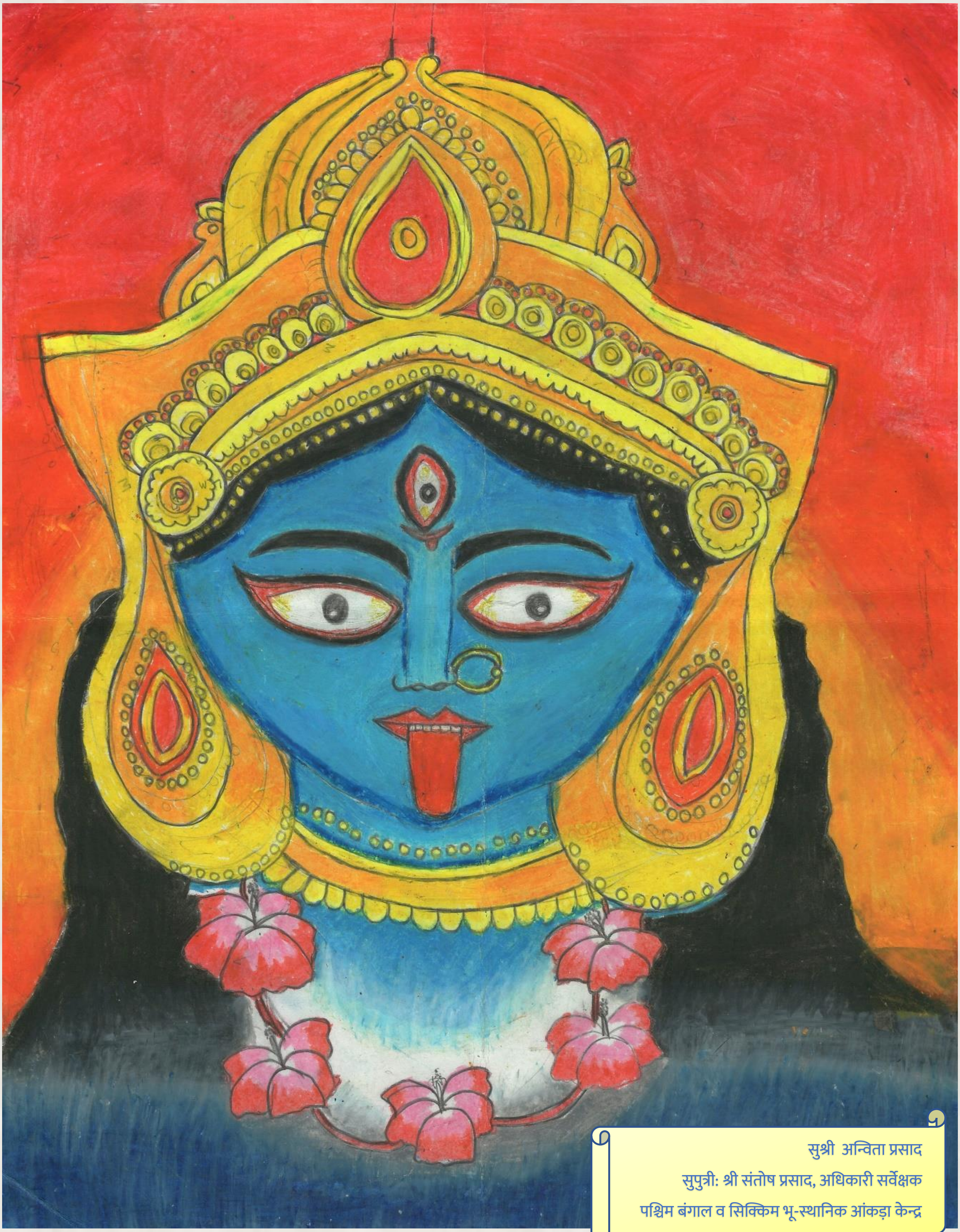

सुश्री अन्विता प्रसाद
सुपुत्री: श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

CHILDERN
PARK

सुश्री अन्विता प्रसाद
सुपुत्री: श्री संतोष प्रसाद, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

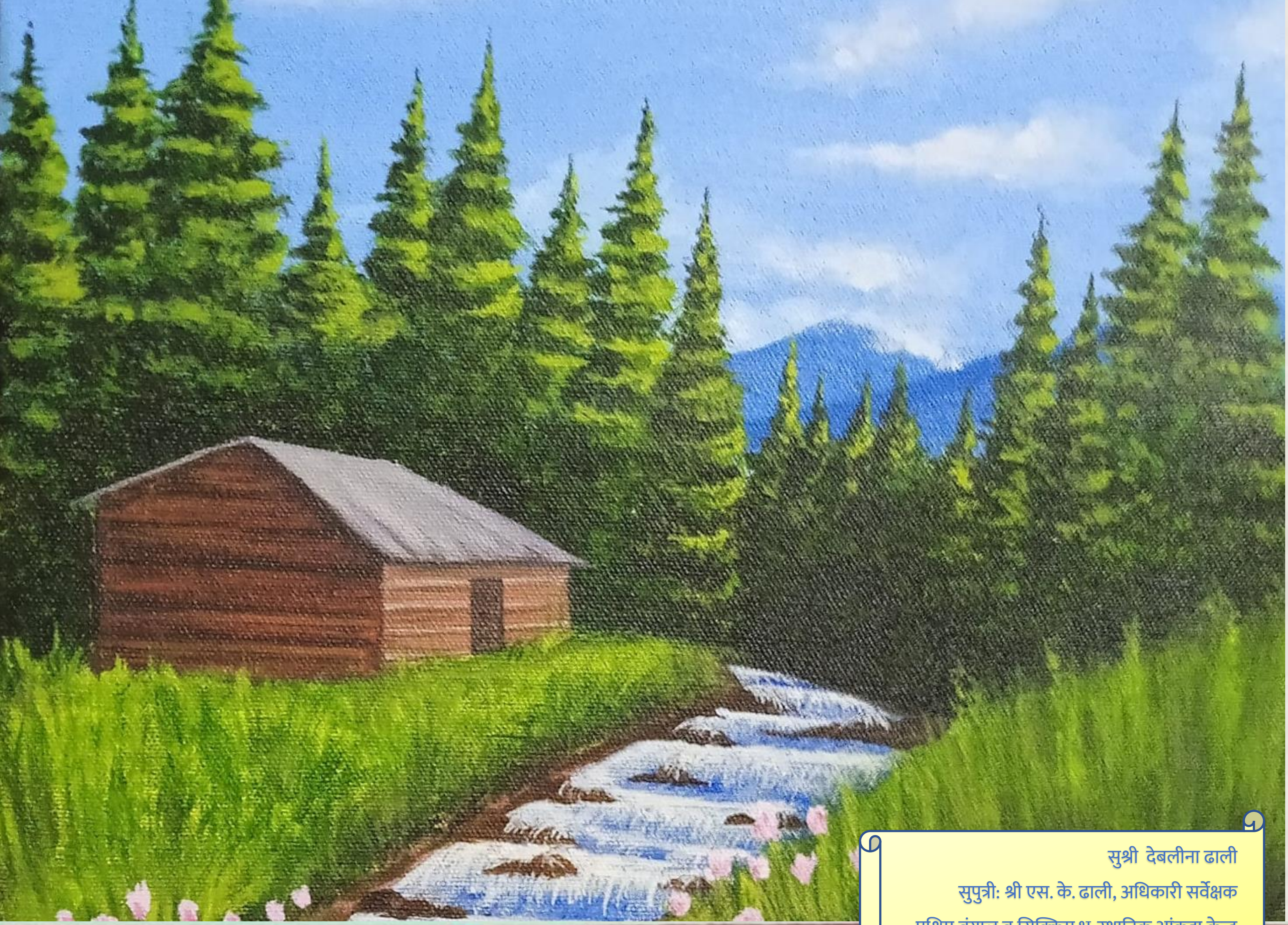

सुश्री देबलीना ढाली
सुपुत्री: श्री एस. के. ढाली, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

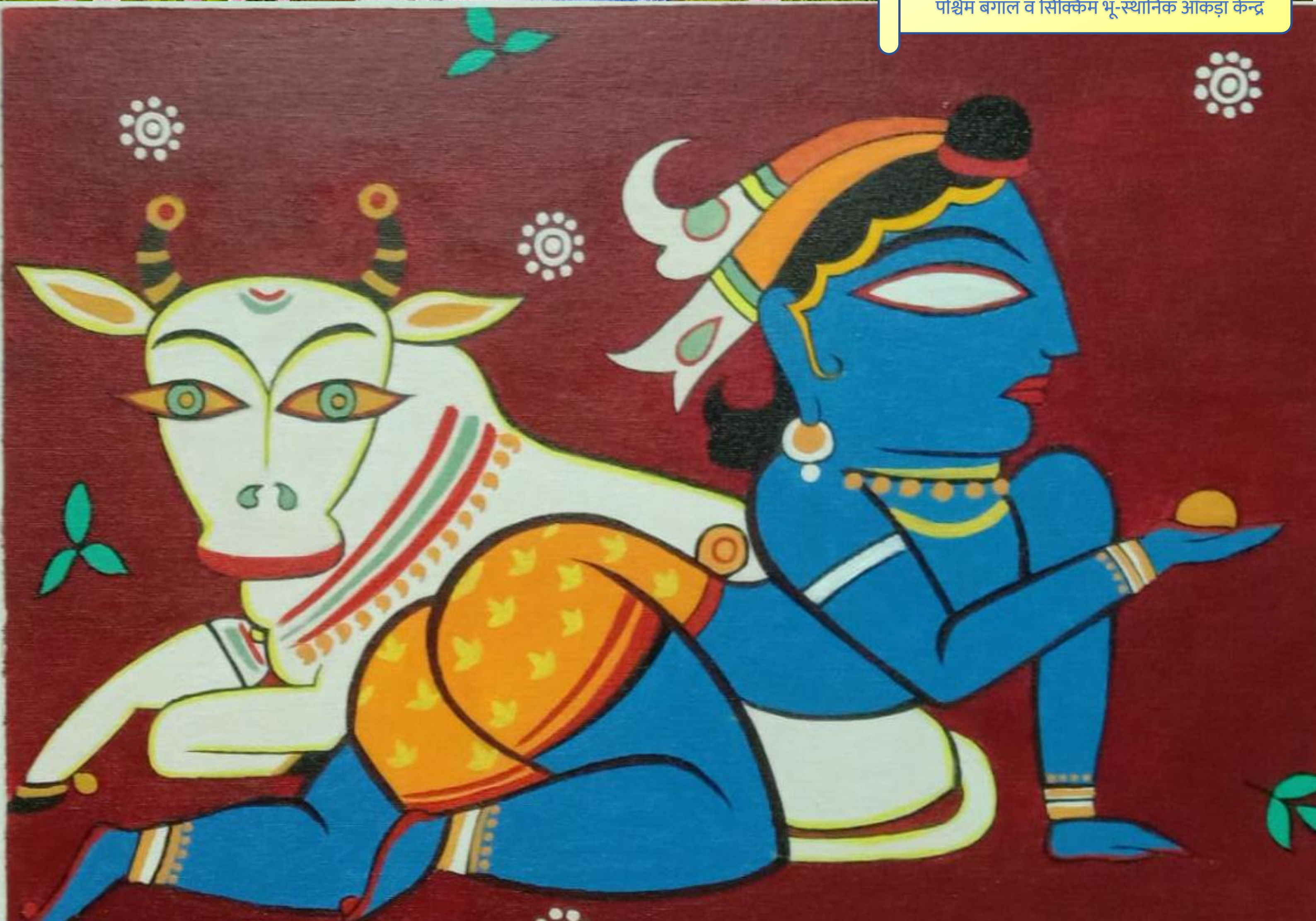

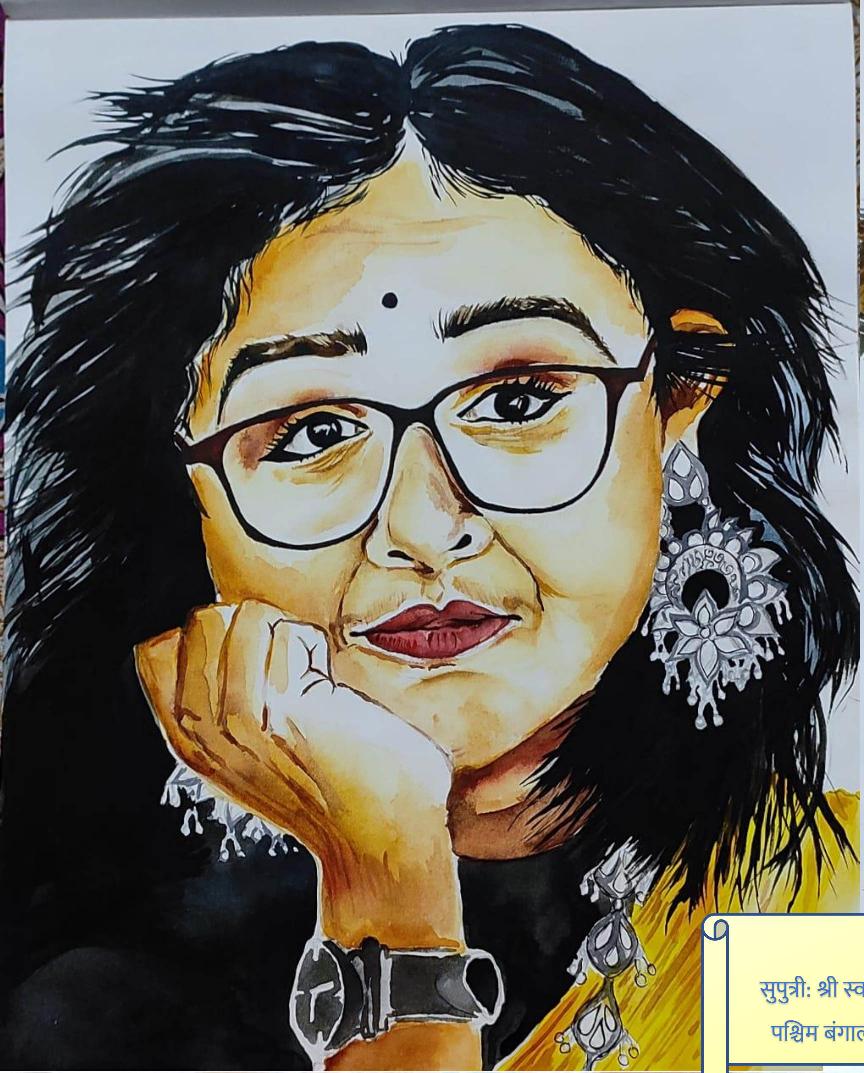

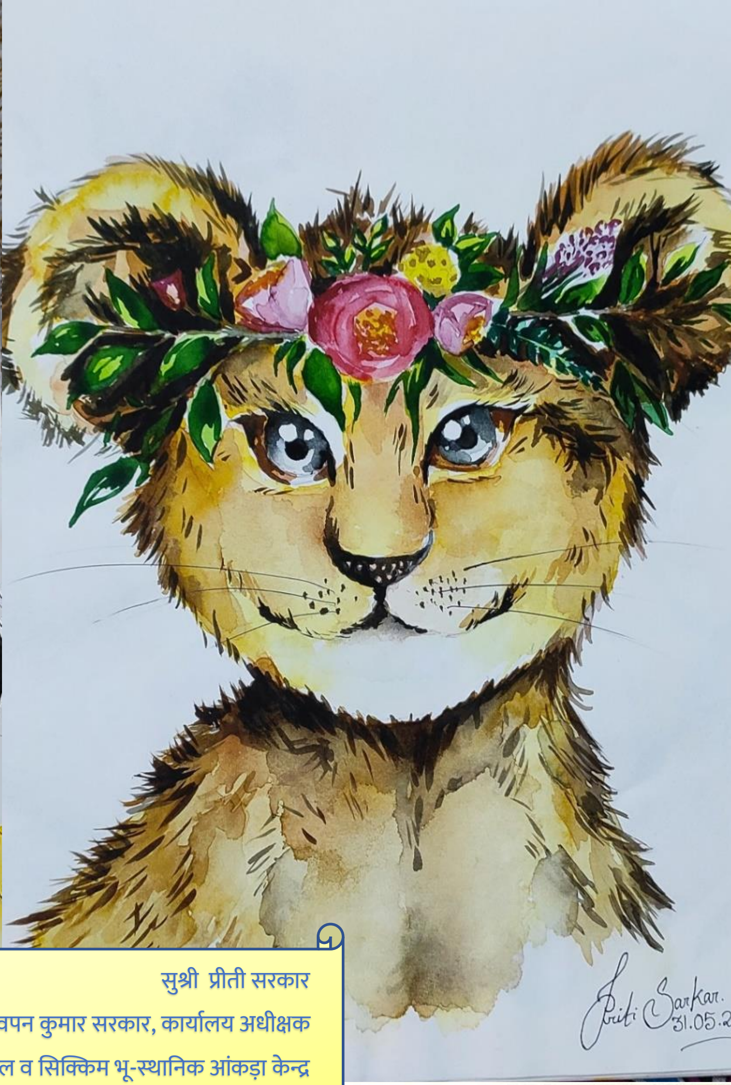
Priti Sarkar.
31.05.2

सुश्री प्रीती सरकार
सुपुत्री: श्री स्वपन कुमार सरकार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

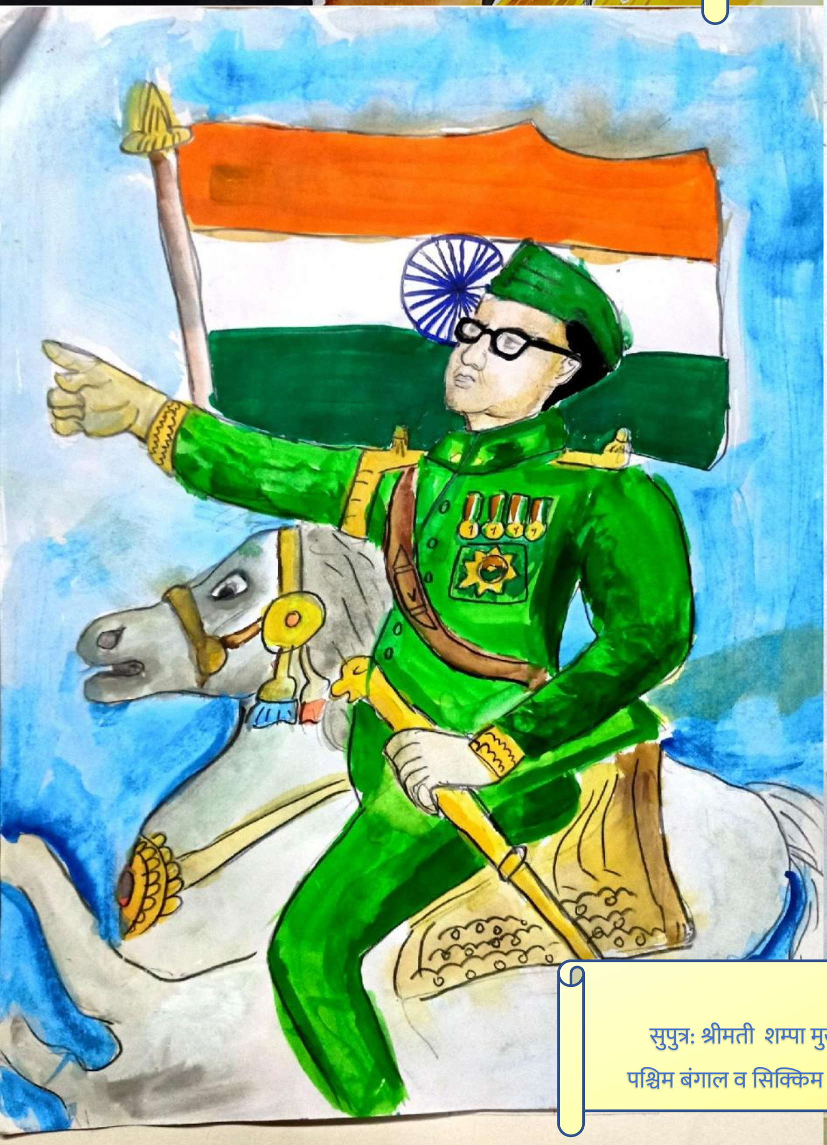

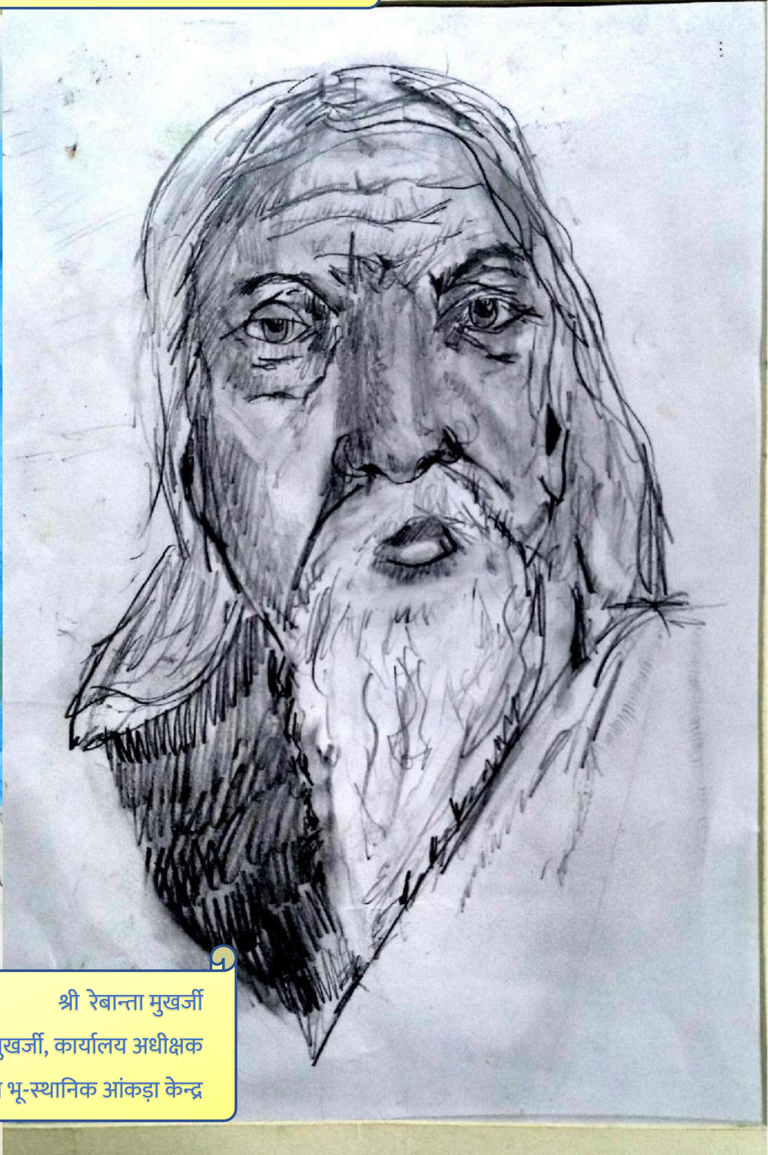

श्री रेबान्ता मुखर्जी
सुपुत्र: श्रीमती शम्पा मुखर्जी, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

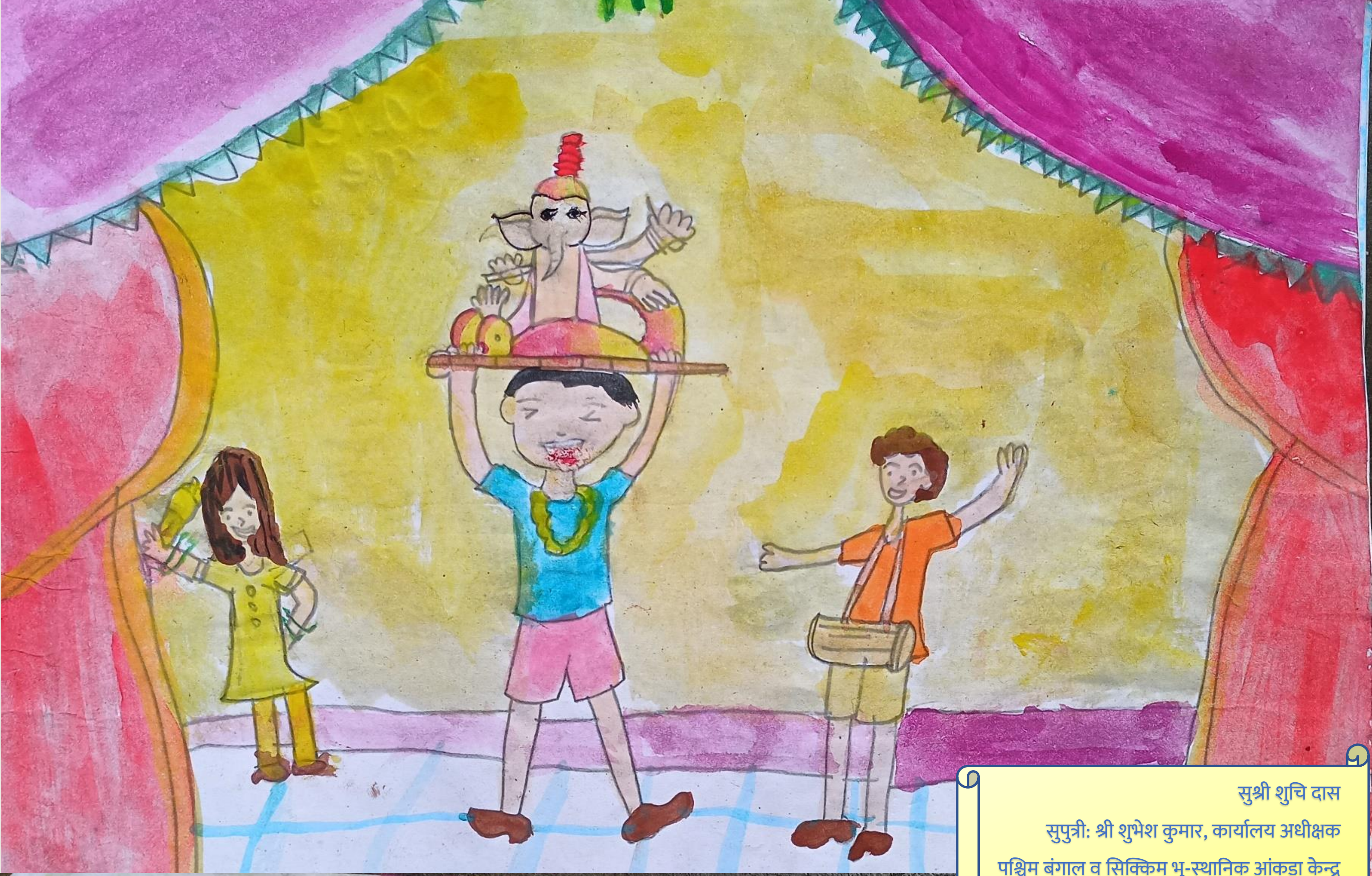

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

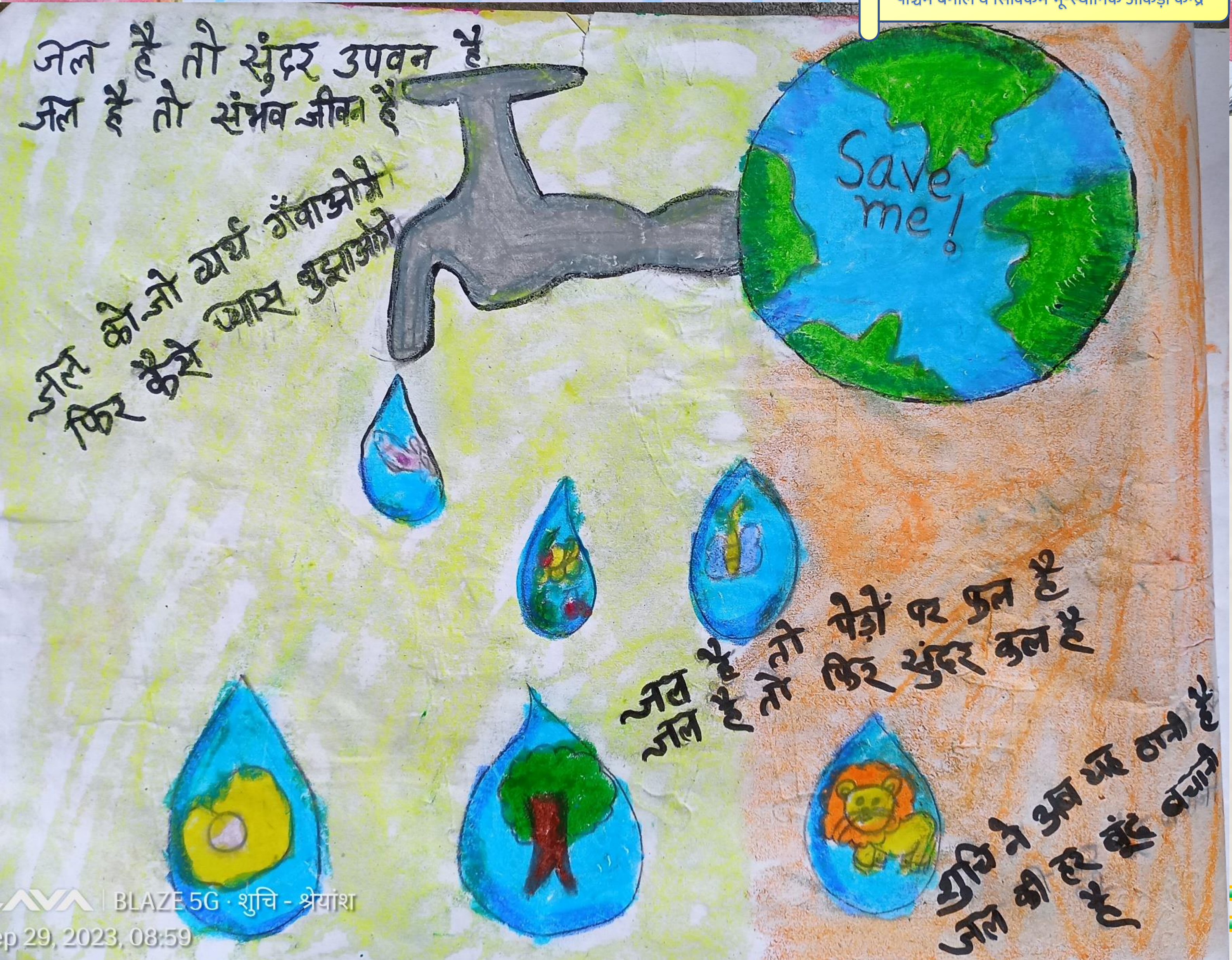
जल है तो सुंदर उपवन है
जल है तो संभव जीवन है
Save me!
जल को जो व्यर्थ गँवाओगे
फिर कैसे प्यास बुझाओगे
जल है तो पेड़ों पर फल है
जल है तो फिर सुंदर कल है
शुचि ने अब यह ठानी है
जल की हर बूंद बचानी है
BLAZE 5G · शुचि - श्रेयांश
ep 29, 2023, 08:59

सुश्री सेंजुती दास

सुपुत्री: श्री प्रलय कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक

पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

~Senjuti Das

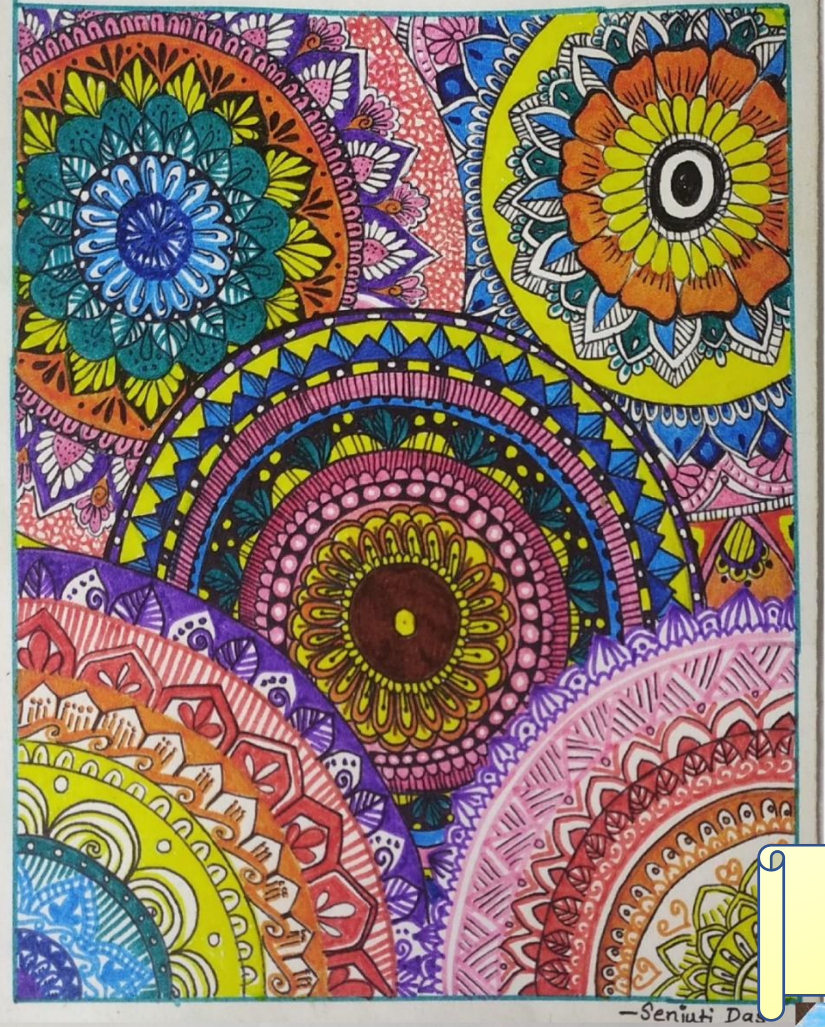
-Seniuti Das

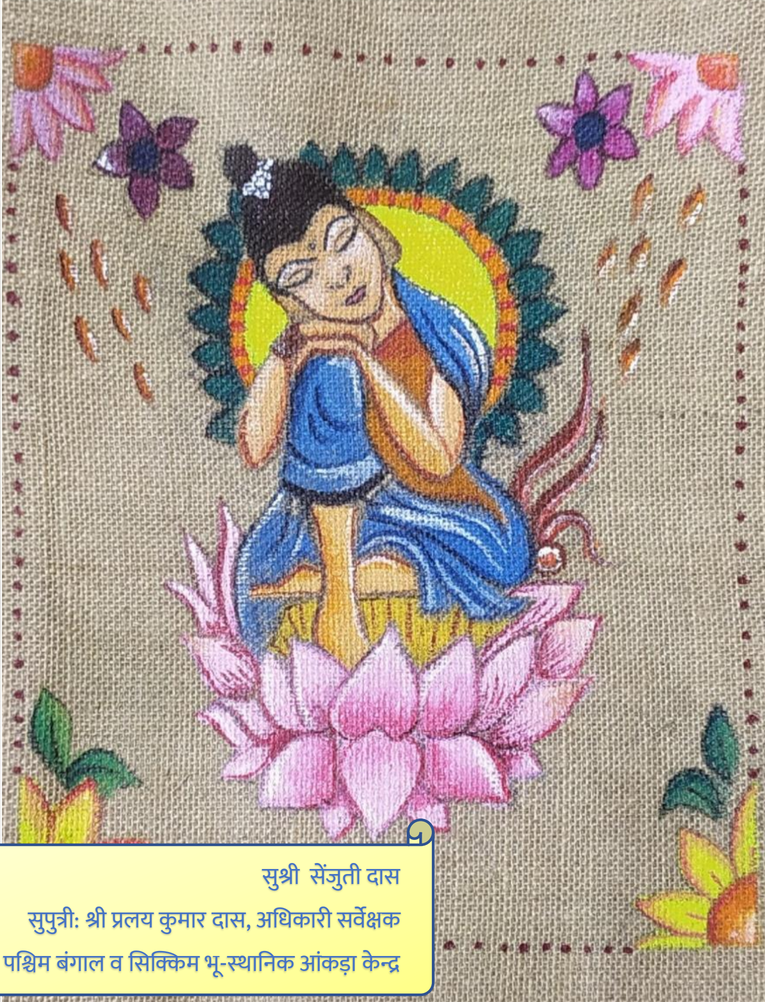

सुश्री सेंजुती दास
सुपुत्री: श्री प्रलय कुमार दास, अधिकारी सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

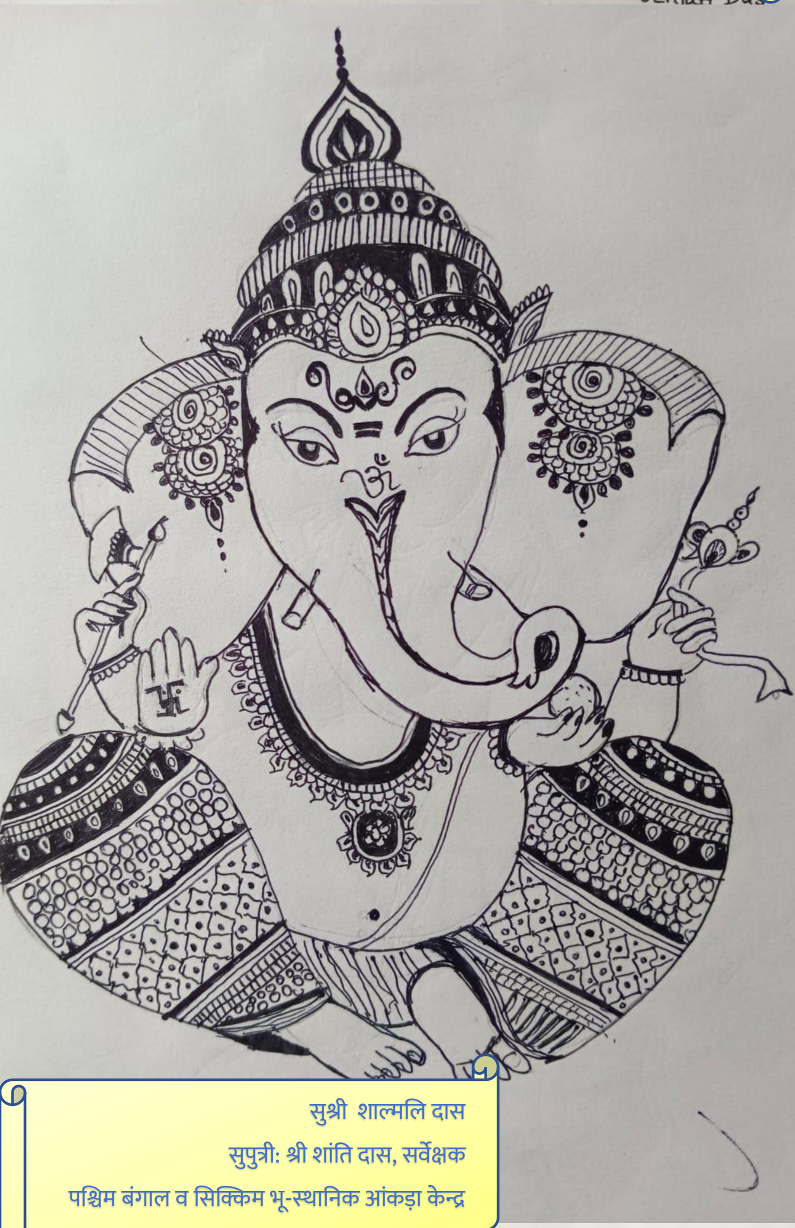

सुश्री शाल्मलि दास
सुपुत्री: श्री शांति दास, सर्वेक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

BLAZE 5G शुचि
ep 29, 2023, 08:56

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

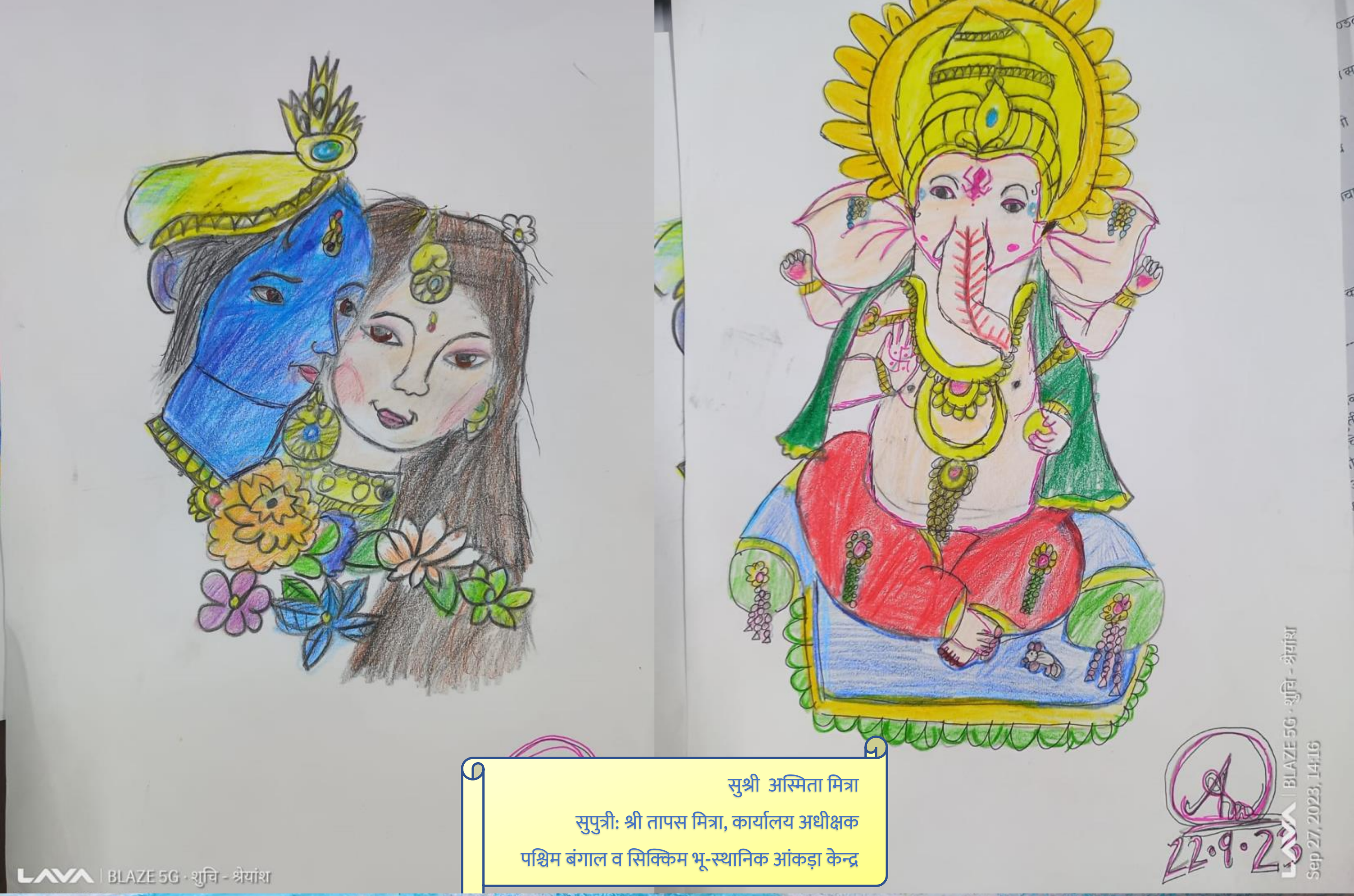
22·9·23
LAVA BLAZE 5G · शुचि - श्रेयांश
Sep 27, 2023, 14:16

सुश्री अस्मिता मित्रा
सुपुत्री: श्री तापस मित्रा, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

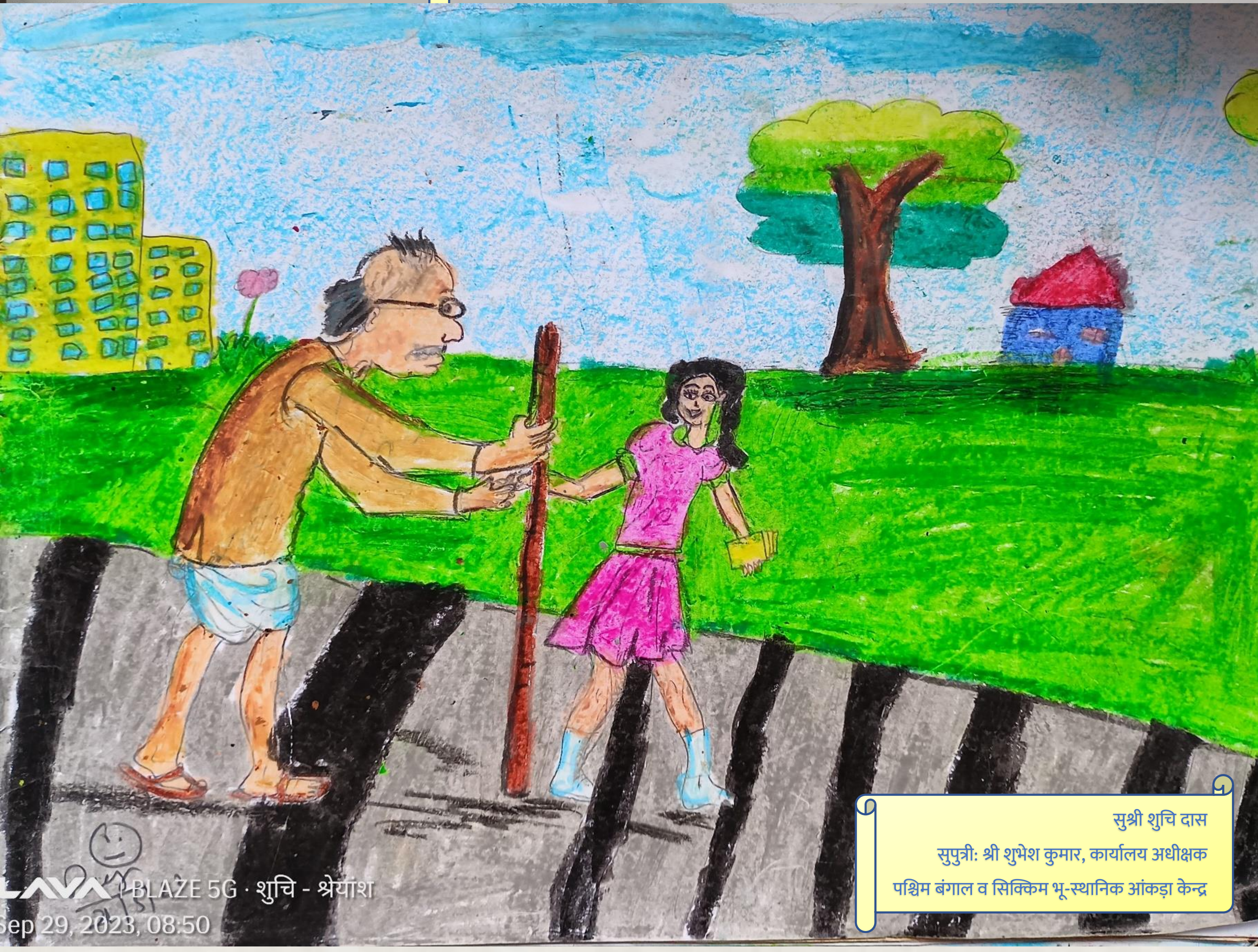
LAVA BLAZE 5G · शुचि - श्रेयांश
Sep 29, 2023, 08:50

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

सुश्री शुचि दास
सुपुत्री: श्री शुभेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र